Prepp.in

Prepp

Your Personal Exams Guide

- NDA
- CDS
- SSC CGL
- CBSE UGC NET
- IAS
- SSC CHSL
- CTET
- MPSC
- AFCAT
- CSIR UDC NET
- IBPS PO
- UP POLICE
- SSC MTS
- SBI PO
- BPSC
- UPTET
- IBPS RRB
- IBPS CLERK
- IES
- UPSC CAPF
- SSC Stenogr..
- RRB NTPC
- SSC GD
- RBI GRADE B
- RBI Assistant
- DSSSB

UGC NET 2022 Paper 2 Hindi Prev Year Paper (05-Mar-2023) (Shift 2)

Total Time: 2 Hour **Total Marks:** 200

Instructions

Sl No.	Section Name	No. of Question	Maximum Marks
1	Test	100	200

1.) A total of 120 minutes is allotted for the examination.

2.) The server will set your clock for you. In the top right corner of your screen, a countdown timer will display the remaining time for you to complete the exam. Once the timer reaches zero, the examination will end automatically. The paper need not be submitted when your timer reaches zero.

3.) There will, however, be sectional timing for this exam. You will have to complete each section within the specified time limit. Before moving on to the next section, you must complete the current one within the time limits.

Your Personal Exams Guide

Download Prepp APP GET IT ON Google Play

Test

1. देवनागरी लिपि का विकास क्रम क्या है? (+2)

a. कुटिल लिपि - ब्राह्मी लिपि - गुप्त लिपि - देवनागरी

b. ब्राह्मी लिपि - गुप्त लिपि - कुटिल लिपि - देवनागरी

c. ब्राह्मी लिपि - कुटिल लिपि - गुप्त लिपि - देवनागरी

d. गुप्त लिपि - ब्राह्मी लिपि - कुटिल लिपि - देवनागरी

2. हिंदी में अनुनासिक व्यंजनों की संख्या कितनी है? (+2)

a. तीन

b. चार

c. पाँच

d. छह

3. गोविन्द बल्लभ पंत की अध्यक्षता में संयुक्त संसदीय राजभाषा समिति का गठन कब किया गया? (+2)

a. 1951

b. 1953

c. 1955

d. 1957

4. बुंदेली बोली की उपबोलियाँ कौन सी हैं? (+2)

a. भुक्सा, संडीली, बँगराही

b. कठेरिया, डांगी, माथुरी

c. भदौरी, बनाफरी, खटोला

d. लरिया, खलौटी, खल्ताही

5. "यूरोप में 'बिहारी सतसई' के समकक्ष कोई रचना नहीं है।"- यह कथन किसका है? (+2)

prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

a. जॉर्ज ग्रियर्सन

b. आचार्य रामचंद्र शुक्ल

c. डॉ. नगेन्द्र

d. डॉ. रामकुमार वर्मा

---

6. "लोग कबीर आदि भक्तों को ज्ञानाश्रयी, निर्गुनिया आदि कहते हैं, वे प्रायः भूल जाते हैं कि निर्गुनिया होकर भी कबीरदास भक्त हैं और उनके राम वेदांतियों के ब्रह्म की अपेक्षा भक्तों के भगवान अधिक हैं।" - किसका कथन है? (+2)

a. आचार्य रामचंद्र शुक्ल

b. परशुराम चतुर्वेदी

c. आचार्य हज़ारीप्रसाद द्विवेदी

d. नंददुलारे वाजपेयी

---

7. 'नई कहानी : संदर्भ और प्रकृति' पुस्तक के संपादक कौन हैं? (+2)

a. नामवर सिंह

b. राजेंद्र यादव

c. देवीशंकर अवस्थी

d. भैरव प्रसाद गुप्त

---

8. महाभारत के अंतिम अंश को आधार बनाकर लिखा गया नाटक है: (+2)

a. शकविजय

b. पहला राजा

c. कोणार्क

d. अँधा युग

---

9. "यह 'परीक्षागुरू' से भी एक वर्ष पूर्व लिखा गया, लेकिन प्रकाशित न हो पाने के कारण इसे प्रथम उपन्यास या 'परीक्षागुरू' से पूर्व लिखे जाने के श्रेय से वंचित रखा गया।" - यह उक्ति किस उपन्यास से संबंधित है? (+2)

a. वामारक्षक

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

b. भाग्यवती

c. अमृत चरित्र

d. नि:सहाय हिंदू

---

10. लक्षणामूला ध्वनि का भेद है: (+2)

a. असंलक्ष्यक्रम ध्वनि

b. संलक्ष्यक्रम ध्वनि

c. अर्थान्तिरसंक्रमितवाच्य ध्वनि

d. शब्द शक्त्युद्भववाच्य ध्वनि

---

11. भामह ने समस्त अलंकारों का मूल किस अलंकार को माना है? (+2)

a. उपमा

b. रूपक

c. वक्रोक्ति

d. यमक

---

12. श्रीमती एनी बीसेंट का भारत आगमन किस वर्ष हुआ? (+2)

Your Personal Exams Guide

a. सन् 1885 ई.

b. सन् 1879 ई.

c. सन् 1893 ई.

d. सन् 1882 ई.

---

13. निम्नलिखित में से किस चिंतक ने धर्म को शास्त्रार्थ का विषय न मानकर उसके मूल तत्व को अपने जीवन में अपनाकर विश्व को संदेश दिया। (+2)

a. राम मोहन राय

b. स्वामी दयानंद सरस्वती

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

c. रामकृष्ण परमहंस

d. केशवचंद्र सेन

---

14. "अब एक सभ्यता का सूर्य सुदूर पश्चिम से उदय हो रहा है, जिसने इस नारकीय महाजनवाद या पूँजीवाद की जड़ खोदकर फेंक दिया है।" यह कथन किस लेखक का है? (+2)

a. रामचंद्र शुक्ल

b. प्रेमचंद

c. महावीर प्रसाद द्विवेदी

d. श्याम सुंदर दास

---

15. हिन्दी का पहला दैनिक समाचार-पत्र कौन सा है? (+2)

a. बनारस अखबार

b. समाचार सुधावर्षण

c. अवध अखबार

d. जगहितकारक

---

16. 'असाध्यवीणा' कविता में प्रियवंद ने किसको वीणा का रचयिता मानकर याद किया है? (+2)

a. धर्मकीर्ति

b. वज्रकीर्ति

c. कीर्तिप्रभ

d. आम्मीक

---

17. सूरदास का पद 'आयो घोष बड़ो व्योपारी' किसकी ओर संकेतित है? (+2)

a. कृष्ण

b. उद्धव

c. नंद

Download Prepp APP
GET IT ON Google Play

d. अक्रूर

---

18. 'शासन की बंदूक' कविता किस छन्द में है? (+2)

a. बरवै

b. सोरठा

c. दोहा

d. उल्लाला

---

19. 'सुनी है कै नाहीं यह प्रगट कहावति जू, काहू कल्पाय है सु कै कल पाय है।' (+2)

घनानंद की इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

a. सन्देह

b. भ्रान्तिमान

c. यमक

d. श्लेष

---

20. 'सभी संथालों को दामुल हौज हो गया' - 'मैला आँचल' उपन्यास के इस वाक्य में 'दामुल हौज' का अर्थ है: (+2)

a. दस्त-हैजा

b. उन्माद

c. ईश्वरीय प्रकोप

d. आजीवन कारावास

---

21. जैसे-जैसे उच्चस्तरीय वर्ग में ग़बन, धोखाधड़ी, भ्रष्टाचार और वंशवाद अपनी जड़ें मजबूत करता जाता है, वैसे-वैसे यह उपन्यास और ज़्यादा प्रासंगिक होता जा रहा है।' - यह कथन किस उपन्यास के लिए उसके उपन्यासकार ने पुनर्प्रकाशन की भूमिका में लिखा था? (+2)

a. महाभोज

b. आखिरी कलाम

c. काशी का अस्सी

Download Prepp APP
GET IT ON Google Play

d. राग दरबारी

---

22. "वतन की फ़िक्र कर, ज्यादा मुसीबत आने वाली है। (+2)

तेरी बरबादियों के तज़करे हैं आसमानों में॥"

यह छंद किस उपन्यास में आया है:

a. झूठा सच

b. तमस

c. ज़िंदगीनामा

d. रागदरबारी

---

23. 'पुरुष निसंग है, स्त्री आसक्त, पुरुष निर्द्वन्द है, स्त्री द्वन्द्वोन्मुखी, पुरुष मुक्त है, स्त्री बद्ध।'- यह कथन किस चरित्र का है? (+2)

a. बाणभट्ट

b. लोरिकदेव

c. अघोर भैरव

d. महामाया भैरवी

---

24. उसका युवापन एक प्रतिष्ठा की जिद कहीं चुराए बैठा है। वह इस प्रतिष्ठा के आगे कभी बहुत मजबूर, कभी कमज़ोर हो जाता है और उसे भुगत भी रहा है। (+2)

उपर्युक्त कथन किस कहानी से उद्धृत है?

a. अपना-अपना भाग्य

b. गैंग्रीन

c. पिता

d. राजा निरबंसिया

---

25. माँ के हाथ की बनी कौन सी कला को देखकर चीफ प्रसन्न हो गए? (+2)

a. कसीदाकारी

b. चिकनकारी

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

c. जरदोजी

d. फुलकारी

---

26. निम्नांकित में से कौन-सा गीत 'तीसरी कसम' कहानी में नहीं है- **(+2)**

a. 'नान्हीं-नान्हीं दँतवा, पातर ठोरवा छटकै जैसन बिजलिया _____।

b. 'जै मैया सरोसती, अरजी करत बानी हमरा पर होखू सहाई हे मैया, हमरा पर होखू सहाई।'

c. 'नोनवा चटाई काहे नाहिं मारलि सौरी घर-अ-अ।

d. 'सजन रे झूठ मति बोलो, खुदा के पास जाना है।'

---

27. सिद्धों और नागपंथी योगियों के चिंतन का विवेचन करते हुए यह किसने कहा था कि उनकी रचनाओं का जीवन की स्वाभाविक सरणियों, अनुभूतियों और दशाओं से कोई संबंध नहीं था। **(+2)**

a. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी

b. आचार्य रामचंद्र शुक्ल

c. आचार्य नंददुलारे बाजपेयी

d. डॉ. रामविलास शर्मा

---

28. "त्रस्त प्रजा की रक्षा के लिए, सतीत्व के सम्मान के लिए, देवता-ब्राह्मण और गो की मर्यादा में विश्वास के लिए, आतंक से प्रकृति को आश्वासन देने के लिए- आपको अपने अधिकार का उपयोग करना होगा।" 'स्कंदगुप्त' नाटक में यह संवाद किसके द्वारा कहा गया है? **(+2)**

a. पर्णदत्त

b. देवसेना

c. बंधुवर्मा

d. मातृगुप्त

---

29. निम्नलिखित में से कौन-सा पात्र 'चन्द्रगुप्त' नाटक से संबंधित नहीं है? **(+2)**

a. एलिस

b. लीला

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

c. जयमाला

d. नीला

---

30. "एक निर्देशक की दृष्टि से 'आधे अधूरे' मुझे समकालीन ज़िंदगी का पहला सार्थक हिंदी नाटक लगता है।" - उपर्युक्त कथन किसका है? (+2)

a. सुधा शिवपुरी

b. ब.ब. कारंत

c. इब्राहिम अल्काज़ी

d. ओम शिवपुरी

---

31. "ज़िंदगी स्वयं एक महान घड़ी है। प्रातः -संध्या उसकी सुइयाँ हैं। नियम-बद्ध एक-दूसरी के पीछे घूमती रहती हैं। मैं चाहती हूँ - मेरा घर भी घड़ी ही की तरह चले। हम सब उसके पुर्जे बन जाएँ और नियम-पूर्वक अपना-अपना काम करते जाएँ।" - अंजो दीदी नाटक में यह संवाद किसने किससे कहा? (+2)

a. अंजली द्वारा मुन्नी को कहा गया।

b. अनिमा द्वारा अंजली को कहा गया।

c. अंजली द्वारा अनिमा को कहा गया।

d. अंजली द्वारा नीरज को कहा गया।

---

32. "क्रोध मेरी खुराक है, लोभ मेरा नयन अंजन है और काम-भुजंग मेरा क्रीड़ा-सहचर है। इसको ही मैं क्रमशः विद्रोह, प्रगति और नवलेखन कहकर पुकारता हूँ।" उपर्युक्त कथन में निबंधकार अपने जीवन की वर्तमान अवस्था को किस नक्षत्र से जोड़ते हैं? (+2)

a. मधा नक्षत्र से

b. स्वाति नक्षत्र से

c. पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र से

d. उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र से

---

33. "आजकल की कविता में नयापन नहीं। उसमें पुराने ज़माने की कविता की पुनरावृत्ति मात्र है। इस नक़ल में असल की पवित्रता और कुँवारेपन का अभाव है।" - उपर्युक्त कथन निम्नलिखित में से किस निबंध से उद्धृत है? (+2)

a. कविता क्या है?

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

b. मजदूरी और प्रेम

c. उठ जाग मुसाफिर

d. संस्कृति और सौंदर्य

---

34. निम्न में से कौन-सा विवेकी राय कृत निबंध संग्रह नहीं है? (+2)

a. फिर बैतलवा डाल पर

b. गँवई-गंध-गुलाब

c. उठ जाग मुसाफिर

d. हर बारिश में

---

35. 'संस्कृति और सौंदर्य' निबंध में निम्नलिखित में से किस निबंध का उल्लेख नहीं है? (+2)

a. अशोक के फूल

b. विचार और वितर्क

c. मेघदूत - एक पुरानी कहानी

d. शिरीष के फूल

---

36. भारतेंदु - मंडल के लेखकों की चर्चा करते हुए रामचंद्र शुक्ल निबंध के लिए निम्न में से किस पद का प्रयोग नहीं करते? (+2)

a. लेख

b. ललित गद्य

c. गद्य-प्रबंध

d. निबंध

---

37. "भारतीय समाज में एक द्वंद्व तो कर्म और सन्यास को लेकर है, दूसरा प्रवृत्ति और निवृत्ति के बीच तथा तीसरा स्वर्ग और नरक की कल्पनाओं को लेकर।" (+2)

उपर्युक्त कथन किस पुस्तक में है?

a. मेरी तिब्बत यात्रा

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

b. संस्कृति के चार अध्याय

c. आवारा मसीहा

d. क्या भूलूँ क्या याद करूँ

---

38. 'ठकुरी बाबा' निम्नलिखित में से किस संग्रह से संकलित है? (+2)

a. मेरा परिवार

b. स्मृति की रेखाएँ

c. अतीत के चलचित्र

d. पथ के साथी

---

39. शरत् चंद्र ने रवीन्द्रनाथ को किस कवि के बाद भारत का सर्वोत्तम कवि घोषित किया? (+2)

a. व्यास

b. कालिदास

c. कबीरदास

d. भवभूति

---

40. 'गौतम बुद्ध के लिए जो स्थान था आम्रपाली का, सम्भवतः वही थी मेरे लिए नटिनिया।'- यह कथन किसका है? (+2)

a. शरत् चंद्र

b. हरिवंशराय बच्चन

c. तुलसीराम

d. राहुल सांकृत्यायन

---

41. देवनागरी लिपि के सम्बन्ध में निम्नलिखित तथ्य मिलते हैं- (+2)

A. 'नागलिपि' से 'नागरी' नामकरण नहीं हुआ है।

B. देवनागरी की वर्णमाला का वर्णक्रम वैज्ञानिक है।

C. नगरों में प्रचलित होने से 'देवनागरी' नाम पड़ा।

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

D. गुजरात के नागर ब्राह्मणों के नाम पर 'नागरी' नाम पड़ा।

E. देवनागरी लिपि आक्षरिक नहीं है।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

a. केवल A, B और D

b. केवल B, D और E

c. केवल B, C और D

d. केवल A, C और D

---

42. अवधी और ब्रज में निम्नलिखित वैषम्य मिलता है- **(+2)**

A. अवधी का संबंध पूर्वी हिंदी से है, जबकि ब्रज का संबंध पश्चिमी हिंदी से है।

B. अवधी में ऐ, औ स्वर का उच्चारण अइ, अउ के रूप में होता है, किंतु ब्रज में ये स्वर अए, अओ के रूप में उच्चरित होते हैं।

C. ध्वनि के स्तर पर अवधी 'आकारांत' है, जबकि ब्रज 'उकारांत'है।

D. अवधी में क्षतिपूरक दीर्घीकरण की प्रवृत्ति अधिक है, ब्रज में कम है।

E. अवधी में पुल्लिंग संज्ञा पदों में 'वा' परसर्ग जुड़ने की प्रवृत्ति मिलती है, जबकि ब्रज में प्रायः ऐसा नहीं होता।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिए:

a. केवल A, B और D

b. केवल A, B और C

c. केवल A, D और E

d. केवल A, B और E

---

43. निम्नलिखित कथनों के आधार पर उपयुक्त विकल्प चुनिए- **(+2)**

A. 'प्रभु जी तुम चन्दन हम पानी' की रचना रैदास द्वारा की गई।

B. कबीर परिचई में अनंतदास ने कबीर के व्यक्तित्व और जीवनी से संबंधित तथ्यों का उल्लेख किया है।

C. जंभनाथ का जन्म तालवा (बीकानेर) में हुआ।

D. अलख दरीबा का संबंध निरंजनी संप्रदाय से है।

E. दादू की समग्र रचनाओं को अंगवधू शीर्षक से संत रज्जब ने संकलित किया।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिए:

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

a. केवल A, B और C

b. केवल B, C और D

c. केवल C, D और E

d. केवल A, B और E

---

44. यात्रा वृतांत पर आधारित निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए: **(+2)**

A. मोहन राकेश कृत 'आखिरी चट्टान तक' में दक्षिण भारत के जीवन को रेखांकित किया गया है।

B. रघुवंश की 'हरी घाटी' में राँची-हज़ारीबाग के आस-पास के प्रदेशों का चित्रण हुआ है।

C. गगन गिल कृत 'अवाक्' में पश्चिमी घाट की प्राकृतिक सुषमा का वर्णन मिलता है।

D. यात्री के उपनाम से मशहूर नागार्जुन ने 'घुमक्कड़ शास्त्र' नामक पुस्तक की रचना की।

E. निर्मल वर्मा के यात्रा वृतांत 'चीड़ों की चाँदनी' में आइसलैंड का उल्लेख मिलता है।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

a. केवल A, B और C

b. केवल B, D और E

c. केवल A, B और E

d. केवल B, C और D

---

45. नाटक और रंगमंच से संबंधित निम्न तथ्यों पर विचार कीजिए : **(+2)**

A. 'अश्क' का नाटक 'कैद' काफी मंचित हुआ, जिसके परिवर्द्धित नवीन रूप को बाद में 'लौटता हुआ दिन' के नाम से प्रस्तुत किया गया।

B. पुराण कथा का आधुनिक उपयोग जगदीशचंद्र माथुर के 'पहला राजा' में अत्यंत सर्जनात्मक रूप में हुआ है।

C. प्रसाद का अंतिम नाटक 'स्कन्दगुप्त' है।

D. प्रसाद का नाटक 'ध्रुवस्वामिनी' और भुवनेश्वर का नाटक 'प्रतिभा का विवाह' एक ही वर्ष में प्रकाशित हुए।

E. भुवनेश्वर के नाटकों में प्रेम-संबंधों की पवित्रता एवं कोमलता तथा प्रसाद में प्रेम-संबंधी मान्यताओं का सहज तिरस्कार मिलता है।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

a. केवल A, B और E

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

b. केवल A, B और D

c. केवल B, C और D

d. केवल B, D और E

---

46. रिपोर्ताज से सम्बंधित निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए: **(+2)**

A. अंग्रेजी शब्द 'रिपोर्ट' का समानार्थी शब्द 'रिपोर्ताज' है।

B. इस रचना-विधा का प्रादुर्भाव प्रथम विश्व युद्ध के समय हुआ था।

C. इलिया एहरेनबुर्ग ने रिपोर्ताज के कुशल लेखक के रूप में सर्वाधिक प्रतिष्ठा प्राप्त की।

D. हिंदी में रिपोर्ताज-लेखन की परंपरा शिवदान सिंह चौहान की रचना 'लक्ष्मीपुरा 'रूपाभ, दिसंबर 1938 से आरंभ हुई।

E. बंगाल के दुर्भिक्ष तथा महामारी के संदर्भ में रांगेय राघव द्वारा 'बंग समाचार' के लिए लिखित रिपोर्ताज भी अपनी मार्मिकता के लिए प्रसिद्ध है।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिए:

a. केवल A, B और C

b. केवल A, C और D

c. केवल B, C और D

d. केवल B, D और E

---

47. निम्नलिखित कथनों पर विचार करते हुए सही कथन चुनिए- **(+2)**

A. नयी समीक्षा काव्य के निरपेक्ष अस्तित्व को स्वीकार करती है।

B. नयी समीक्षा का आरम्भ 19 वीं सदी में ब्रिटेन में हुआ। इस नाम का सर्वप्रथम प्रयोग एलेन टेट ने किया।

C. इलियट का मत है कि केवल अतीत ही वर्तमान के रूप को मर्यादित नहीं करता वर्तमान भी अतीत को प्रभावित करता है।

D. इलियट के अनुसार कवि का मन असंख्य भावनाओं, पदावलियों, बिंबों के ग्रहण एवं संचयन के निमित्त एक आधान पात्र की भाँति होता है।

E. वड्र्सवर्थ ने कविता में भावना के स्थान पर कथानक का महत्त्व स्थापित किया है।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिए:

a. केवल A, C और D

b. केवल B, D और E

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

c. केवल C, D और E

d. केवल A, B और D

---

48. बिंब और प्रतीक पर आधारित इन कथनों पर विचार कीजिए: **(+2)**

A. बिंब केवल संकेत करता है जबकि प्रतीक उसे प्रत्यक्ष या संवेद्य और ग्राह्य बना देता है।

B. बिंब किसी अप्रस्तुत वस्तु का मानसिक या काल्पनिक रूप है।

C. अर्थ की स्पष्टता के समान ही, भाव की सम्प्रेषणा एवं उत्तेजना में बिंब विधान का मुख्य हाथ रहता है।

D. विभिन्न संवेदनाओं के बीच चुनाव करने की प्रक्रिया का ज्ञान प्रतीक-विधान में संभव नहीं है।

E. प्रतीक द्वारा प्रायः सूक्ष्म एवं विशिष्ट अनुभूतियों को सहज ग्राह्य बनाने का प्रयत्न किया जाता है।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिए:

a. केवल A, D और E

b. केवल B, C और E

c. केवल C, D और E

d. केवल A, C और E

---

49. फोर्ट विलियम कॉलेज के संबंध में निम्न में से कौन से कथन सत्य हैं? **(+2)**

A. फोर्ट विलियम कॉलेज की ओर से उर्दू-हिन्दी गद्य पुस्तकें लिखने की व्यवस्था हुई।

B. इंग्लैंड के एक इतिहास का और मार्शमैन साहब के प्राचीन इतिहास का अनुवाद 'कथासार' नाम से प्रकाशित हुआ।

C. जॉन गिलक्राइस्ट हिंदी उर्दू के अध्यापक थे।

D. विलियम केरे और अन्य पादरियों के उद्योग से इंजील का अनुवाद हुआ।

E. सदल मिश्र ने कॉलेज से जुड़कर खड़ी बोली गद्य के विकास में योगदान दिया।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

a. केवल A, C और D

b. केवल B, C और D

c. केवल A, C और E

d. केवल B, D और E

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

50. राम मोहन राय के संबंध में निम्नलिखित में से उपयुक्त कथन कौन से हैं? **(+2)**

A. वे बहुदेववादी कर्मकांडों के समर्थक थे।

B. वे भारत में राष्ट्रीय पत्रकारिता के संस्थापक थे।

C. वे ईसाई धर्म की नैतिक प्रणाली से प्रभावित थे।

D. वे स्वयं को वेदांती मानते थे।

E. वे मूलतः युक्तिवादी और नैतिकतावादी धर्मानुयायी बने रहे।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

a. केवल A, B और D

b. केवल B, D और E

c. केवल C, D और E

d. केवल B, C और E

---

51. 'सरोज स्मृति' कविता में कवि ने सरोज के लिए कौन-कौन से संबोधन प्रयुक्त किए हैं: **(+2)**

A. धन्ये

B. शुभ्रे

C. शुचिते

D. मुक्ते

E. गीते

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

a. केवल A , B और E

b. केवल A, C और E

c. केवल B, C और E

d. केवल B, D और E

---

52. 'भारत भारती' के वर्तमान खण्ड में निम्नलिखित में से किन उपशीर्षकों का वर्णन है: **(+2)**

A. अंग्रेजों का राज

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

B. कृषि और कृषक

C. शिक्षा की अवस्था

D. स्वतंत्रता की कामना

E. दुर्भिक्ष

नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिए:

a. केवल A, B और C

b. केवल B, C और D

c. केवल B, C और E

d. केवल A, C और D

---

53. 'भूल गलती' कविता में किन ऐतिहासिक व्यक्तियों का उल्लेख हुआ है? **(+2)**

A. बदायूँनी

B. इब्न बतूता

C. अलग़ज़ाली

D. इब्ने सीना

E. अलबरूनी

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

a. केवल A, B और C

b. केवल A, C और D

c. केवल B, C और D

d. केवल C, D और E

---

54. 'मानस का हंस' उपन्यास के पात्र हैं: **(+2)**

A. सुमिरत दास

B. अब्दुल्ला बेग

C. मोहिनी बाई

D. मेघा भगत

Download Prepp APP GET IT ON Google Play

E. इकबाल सिंह

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

a. केवल B, C और D

b. केवल B, D और E

c. केवल C, D और E

d. केवल A, B और C

---

55. 'झूठा सच' उपन्यास की स्त्री-पात्र हैं: **(+2)**

A. मोहनी

B. पूरन देई

C. लक्ष्मी

D. शीलो

E. बंती

नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिए:

a. केवल A, B और D

b. केवल B, C और D

c. केवल C, D और E

d. केवल B, D और E

---

56. 'आपका बंटी' उपन्यास के बाल-पात्र हैं: **(+2)**

A. उजागिर

B. जोत

C. अमी

D. टीटू

E. सुमेर

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

a. केवल A, B और C

Your Personal Exams Guide

Download Prepp APP GET IT ON Google Play

b. केवल A, C और D

c. केवल C, D और E

d. केवल B, C और D

---

57. 'इंस्पेक्टर मातादीन चाँद पर' के संदर्भ में विचार कीजिए: **(+2)**

A. मातादीन चाँद पर फरार अपराधी को पकड़ने गए थे।

B. मातादीन को, चाँद से एड़ी चमकाने का पत्थर लाने का आदेश प्राप्त हुआ।

C. मातादीन ने कहा - 'हमारा सिद्धांत है : हमें पैसा नहीं काम प्यारा है।'

D. चाँद पर मातादीन का सार्वजनिक अभिनंदन हुआ।

E. मातादीन ने चाँद की पुलिस की तनख्वाह तीन गुनी कर दी।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

a. केवल A, B और C

b. केवल B, C और D

c. केवल A, D और E

d. केवल B, C और E

---

58. निम्नांकित कथनों के संदर्भ में विचार कीजिए- **(+2)**

A. 'अपना-अपना भाग्य' कहानी पति से बिछुड़ी हुई स्त्री की आपबीती के रूप में चित्रित है।

B. 'एक टोकरी भर मिट्टी' कहानी में एक असहाय विधवा के स्वाभिमान को अभिव्यक्ति मिली है।

C. 'दुलाईवाली' कहानी पर्दा प्रथा की विसंगति पर आधारित है।

D. 'राही' कहानी गाँव और शहर के संघर्ष पर केंद्रित है।

E. 'कानों में कंगना' तत्कालीन सामंती परिवेश में पत्नी और वेश्या के प्रति प्रेम की टकराहट पर आधारित एक भावुकतापूर्ण कहानी है।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

a. केवल A, D और E

b. केवल A, C और E

c. केवल B, C और E

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

d. केवल B, D और E

---

59. 'अंधेर नगरी' नाटक के सम्बंध में निम्नलिखित पर विचार कीजिए- **(+2)**

A. महंत जी, गोबरधनदास और नारायणदास के गुरू हैं।

B. 'अंधेर नगरी' के पहले अंक का 'स्थान' 'बाज़ार' है।

C. 'अंधेर नगरी' का प्रकाशन सन् 1881 ई. में हुआ।

D. इसके तीसरे अंक का 'स्थान' 'जंगल' है।

E. इसके पाँचवे अंक का 'स्थान' 'शमशान' है।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

a. केवल A, C और D

b. केवल A, C और E

c. केवल A, B और C

d. केवल A, D और E

---

60. 'भारत दुर्दशा' नाटक के संबंध में निम्नलिखित बातों पर विचार कीजिए: **(+2)**

A. 'भारत के भुजबल जग रक्षित। भारत विद्या लहि जग सिच्छित' - यह पँक्ति नाटक के पाँचवे अंक की है।

B. 'भारत दुर्दशा' नाटक का प्रकाशन सन् 1880 ई. में हुआ।

C. इसके पाँचवे अंक का स्थान 'गंभीर वन का मध्यभाग' है।

D. 'जागो जागो रे भाई' गीत को राग चैती गोरी में प्रस्तुत करने का निर्देश नाटककार द्वारा दिया गया है।

E. ' भारत दुर्दशा' नाटक को भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने 'नाट्यरासक' की संज्ञा दी है।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

a. केवल A, D और E

b. केवल A, B और E

c. केवल B, C और E

d. केवल B, D और E

---

61. 'अंधायुग' के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए- **(+2)**

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

A. इसमें युद्ध से उत्पन्न होने वाली मूल्यहीनता, अमानवीयता, विकृति, कुंठा, वैयक्तिक एवं सामूहिक विघटन का सजीव चित्र प्रस्तुत किया गया है।

B. इसके तृतीय अंक का शीर्षक 'गांधारी का शाप' में गांधारी कृष्ण को शाप देती है।

C. इस नाटक पर इलियट के वेस्टलैंड का प्रभाव माना गया है।

D. इसमें ऋषि व्यास अश्वत्थामा को अमरता का वरदान देते हैं।

E. 'अंधायुग' के किसी भी पात्र का चरित्र नितांत उज्वल और निर्मल नहीं है।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिए:

a. केवल A, C और E

b. केवल A, B और E

c. केवल A, D और E

d. केवल A, C और D

---

62. 'नाख़ून क्यों बढ़ते हैं' निबंध से सम्बद्ध निम्न कथनों पर विचार कीजिए: **(+2)**

A. कुछ लाख ही वर्षों की बात है, जब मनुष्य जंगली था, वनमानुष जैसा। उसे नाख़ून की जरूरत थी।

B. मनुष्य के नाखूनों की ओर देखता हूँ, तो कभी-कभी निराश हो जाता हूँ। यह उसकी भयंकर पाशवी वृत्ति के जीवन प्रतीक हैं।

C. वाल्मीकि के रामायण से पता चलता है कि आज से दो हजार वर्ष पहले का भारतवासी नाखूनों को जमके संवारता था।

D. समस्त अधोगामिनी वृत्तियों की ओर नीचे खींचनेवाली वस्तुओं को भारतवर्ष ने मनुष्योचित बनाया है, यह बात चाहूँ भी तो नहीं भूल सकता।

E. विदर्भ देश के लोग उन दिनों बड़े-बड़े नखों को पसंद करते थे और उत्तरपूर्व के लोग छोटे नखों को।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

a. केवल A, B और D

b. केवल A, B और E

c. केवल B, C और D

d. केवल B, D और E

---

63. 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ के सन्दर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए- **(+2)**

A. हरिवंशराय बच्चन की बहन का नाम रानी था।

Download Prepp APP GET IT ON Google Play

B. ठाकुर यादवेंद्र सिंह के कहानी संग्रह 'हार' से हरिवंशराय बच्चन ने अपने प्रथम काव्य संग्रह के नाम के लिए प्रेरणा ली थी।

C. पं. रामनरेश त्रिपाठी को 'दुलारे दोहावली' पर प्रथम देव पुरस्कार मिला था।

D. बाबू केदारनाथ अग्रवाल ने बच्चन जी को 35 रूपये प्रतिमास पर स्कूल में हिन्दी अध्यापक के रूप में नियुक्त किया।

E. यूनिवर्सिटी में बच्चन जी के सहकक्षियों में अवध बिहारी लाल, प्रकाशचन्द्र गुप्त और ब्रजलाल गुप्त थे।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

a. केवल A, C और D

b. केवल C, B और D

c. केवल A, B और E

d. केवल B, D और E

---

64. 'स्मृति की रेखाएं' के सन्दर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए- **(+2)**

A. इस पुस्तक के सभी पात्र महादेवी जी के जीवन से सम्बंधित रहे हैं।

B. इस पुस्तक की शैली पत्रात्मक है।

C. इस पुस्तक के सभी पात्र समाज के निम्न वर्गों से सम्बंधित हैं।

D. इसमें स्मृति नाम की स्त्री का चित्रण है जो चित्रकारी करती है।

E. इस पुस्तक में यथार्थ से ज्यादा मानवीयता पर बल दिया गया है।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिए:

a. केवल B, D और E

b. केवल A, C और E

c. केवल A, B और E

d. केवल A, C और D

---

65. 'भोलाराम का जीव' के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए- **(+2)**

A. इसमें जीव और परमात्मा के संबंधों पर विचार किया गया है।

B. इसमें पौराणिक कथा को आधार बनाकर व्यंग्य की निर्मिति की गई है।

C. इसमें सरकारी कार्यालयों में पनप रहे भ्रष्टाचार का मार्मिक चित्रण है।

D. इसमें राष्ट्रीय चेतना को केंद्र में रखा गया है।

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

E. इसमें लालफीताशाही की अमानवीयता का चित्रण है।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिए:

a. केवल B, C और E

b. केवल A, D और E

c. केवल C, D और E

d. केवल A, C और E

---

66. सूची - I को सूची - II से सुमेलित कीजिए: **(+2)**

	सूची - I		**सूची - II**
	उच्चारण - स्थान के आधार पर नाम		**व्यंजन ध्वनियाँ**
A.	तालव्य	I.	ट्, ठ्, ड्, ढ्
B.	मूर्धन्य	II.	क्, ख्, ग्, घ्
C.	कण्ठय	III.	च्, छ्, ज्, झ्
D.	वत्स्र्य	IV.	ल्, स्, न्ह् न्

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:

a. A - III, B - IV, C - I, D- II

b. A - IV, B - III, C - II, D - I

c. A - III, B - III, C - I, D - IV

d. A - III, B - I, C - II, D - IV

---

67. सूची - I को सूची - II से सुमेलित कीजिए: **(+2)**

Your Personal Exams Guide

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

	सूची - I		सूची - II
	आलोचनात्मक निबंध		**रचनाकार**
A.	मुस द्द स और भारत भारती की सांस्कृतिक भूमिका	I.	गजानन माधव मुक्तिबोध
B.	नयी कविता का आत्मसंघर्ष	II.	नेमिचंद्र जैन
C.	भारतीय रंग- द्द ष्टि की खोज	III.	विजयदेव नारायण साही
D.	कवि कै बोल खरग हिरवानी	IV.	शमशेर बहादुर सिंह

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:

a. A - I, B - III, C - IV, D - II

b. A - IV, B - I, C - III, D - II

c. A - I, B - IV, C - II, D - III

d. A - IV, B - I, C - II, D - III

---

68. सूची -I को सूची - II से सुमेलित कीजिए: **(+2)**

	सूची - I		सूची - II
	रचनाकार		**पुस्तक**
A.	आई.ए. रिचड्‌र्स	I.	पेरिपोइतिकेस
B.	टी.एस. इलियट	II.	बायोग्राफिया लिटरेरिया
C.	अरस्तू	III.	बियोंड
D.	कॉलरिज	IV.	द वेस्ट लैंड

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:

a. A - IV, B - III, C - II, D - I

b. A - I, B - I I I, C - I I, D - I V

c. A - III, B - I, C - II, D - IV

d. A - III, B - IV, C - I, D - II

---

69. सूची -I को सूची - II से सुमेलित कीजिए: **(+2)**

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

	सूची - I		सूची - II
	पत्र		**प्रकाशन का स्थान**
A.	भारतबंधु	I.	जबलपुर
B.	देश हितैषी	II.	वृंदावन
C.	शुभ चिंतक	III.	अलीगढ़
D.	भारतेंदु	IV.	अजमेर

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:

a. A - III, B - IV, C - I, D - I I

b. A - I, B - IV, C - III, D - II

c. A - III, B - IV, C - II, D - I

d. A - II, B - IV, C - I, D - III

---

70. सूची -I को सूची - II से सुमेलित कीजिए: **(+2)**

	सूची - I		सूची - II
	पुस्तक		**लेखक**
A.	भक्ति आंदोलन और सूरदास का काव्य	I.	इमरे बंघा
B.	सनेह को मारग	II.	नामवर सिंह
C.	अकथ कहानी प्रेम की कहानी: नयी कहानी	III.	मुक्तिबोध
D.	कामायनी एक पुनर्विचार	IV.	मैनेजर पांडेय

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:

a. A - II, B - III, C - IV, D - I

b. A - III, B - IV, C - I I, D - I

c. A - IV, B - III, C - I, D - II

d. A - IV, B - I, C - II, D - III

---

71. सूची -I को सूची - II से सुमेलित कीजिए: **(+2)**

Download Prepp APP GET IT ON Google Play

	सूची - I		सूची - II
	उपन्यास		**वर्णित कथा-स्थल**
A.	गोदान	I.	मेरीगंज
B.	मैला आँचल	II.	चित्रकूट
C.	रागदरबारी	III.	शिवपालगंज
D.	मानस का हंस	IV.	बेलारी

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:

a. A - I I, B - I I I, C - I V, D - I\

b. A - III, B - IV, C - I, D - II

c. A - IV, B - III, C - II, D - I

d. A - IV, B - I, C - III, D - II

---

72. सूची -I को सूची - II से सुमेलित कीजिए: **(+2)**

	सूची - I		सूची - II
	नाटक		**पात्र**
A.	अंजो दीदी	I.	राजकुमार
B.	चंद्रगुप्त	II.	लीला
C.	स्कंदगुप्त	III.	ओमी
D.	एक और द्रोणाचार्य	IV.	जयमाला

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:

a. A - III, B - II, C - IV, D - I

b. A - II, B - III, C - I, D - IV

c. A - III, B - II, C - I, D - IV

d. A - I, B - II, C - IV, D- III

---

73. सूची -I को सूची - II से सुमेलित कीजिए: **(+2)**

Download Prepp APP GET IT ON Google Play

	सूची - I		सूची - II
	निबंधकार		**निबंध**
A.	प्रतापनारायण मिश्र	I.	सच्ची वीरता
B.	हजारीप्रसाद द्विवेदी	II.	तुम चंदन हम पानी
C.	सरदार पूर्णसिंह	III.	कुटज
D.	विद्यानिवास मिश्र	IV.	मनोयोग

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:

a. A - I, B - III, C - II, D - IV

b. A - I I I, B - I V, C - I, D - I I

c. A - IV, B - III, C - I, D - II

d. A - III, B - IV, C - II, D - I

---

74. सूची -I को सूची - II से सुमेलित कीजिए: **(+2)**

	सूची - I		सूची - II
	रचना		**रचनाकार**
A.	अकाल में सारस	I.	नरेश मेहता
B.	वनपाखी सुनो	II.	धर्मवीर भारती
C.	ठंडा लोहा	III.	लीलाधर जगूड़ी
D.	बची हुई पृथ्वी	IV.	केदारनाथ सिंह

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:

a. A - IV, B - I, C - I I, D - I II

b. A - IV, B - II, C - I, D - III

c. A - III, B - II, C–I, D - IV

d. A - III, B - I, C - II, D - IV

---

75. सूची -I को सूची - II से सुमेलित कीजिए: **(+2)**

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

	सूची - I		सूची - II
	रेखाचित्रों के मुख्य पात्र		**सहयोगी पात्र**
A.	सरयू भैया	I.	हसन
B.	मंगर	I.	कुनकुन
C.	रजिया	III.	गंगोभाई
D.	देव	IV.	झकोलिया

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:

a. A - III, B - IV, C - I, D - II

b. A - IV, B - I, C - II, D - III

c. A - I, B - III, C - IV, D - II

d. A - III, B - I, C - II, D - IV

---

76. प्रथम प्रकाशन वर्ष के अनुसार भगवतीचरण वर्मा द्वारा रचित उपन्यासों को पहले से बाद के क्रम में व्यवस्थित कीजिए: **(+2)**

A. भूले बिसरे चित्र

B. चित्रलेखा

C. टेढ़े मेढ़े रास्ते

D. सबहिं नचावत राम गोसाईं

E. सामर्थ्य और सीमा

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

a. A, B, C, D, E

b. B, C, A, D, E

c. D, C, A, E, B

d. B, C, A, E, D

---

77. प्रथम प्रकाशन वर्ष के आधार पर हिंदी की दलित आत्मकथाओं को पहले से बाद के क्रम में लगाइये : **(+2)**

A. मेरी पत्नी और भेड़िया

B. मुर्दहिया

Your Personal Exams Guide

prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

C. शिकंजे का दर्द

D. झोपड़ी से राजभवन

E. दोहरा अभिशाप

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

a. E, D, B, A, C

b. E, D, A, B, C

c. D, E, B, A, C

d. C, B, D, A, E

---

78. 'बीन भी हूँ मैं' गीत में स्वयं के संबंध में महादेवी वर्मा ने जिन कथनों का उपयोग किया है, ऐसे अंश नीचे दिए गए हैं। इन्हें गीत में आने के अनुसार पहले से बाद के क्रम में लगाइये: **(+2)**

A. स्मित की चाँदनी

B. कुलहीन प्रवाहिनी

C. सुनहली दामिनी

D. अखंड सुहागिनी

E. तुम्हारी रागिनी

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

a. E, B, D, C, A

b. E, D, B, C, A

c. D, E, C, A, B

d. E, A, D, C, B

---

79. निम्नलिखित उपन्यासों को, प्रथम प्रकाशन वर्ष के अनुसार, पहले से बाद के क्रम में लगाइये: **(+2)**

A. बाणभट्ट की आत्मकथा

B. ज़िंदगीनामा

C. गोदान

D. रागदरबारी

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

E. तमस

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

a. C, B, A, E, D

b. C, A, D, E, B

c. A, C, B, D, E

d. A, C, D, E, B

---

80. 'आकाशदीप' कहानी की घटनाओं को पहले से बाद के क्रम में लगाइए: **(+2)**

A. चंपा द्वारा दीपक का जलाना

B. दीप-स्तंभ का महोत्सव

C. चंपा और जया द्वारा नौका विहार

D. बुधगुप्त और नायक के बीच द्वंद्वयुद्ध

E. बंदी द्वारा पोत से संबद्ध रज्जु का काटना

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

a. A, D, B, C, E

b. E, D, A, C, B

c. B, C, A, E, D

d. C, B, E, D, A

---

81. 'स्कंदगुप्त' नाटक के प्रथम अंक में आए संवादों को पहले से बाद के क्रम में लगाइये: **(+2)**

A. कविता करना अनंत पुण्य का फल है।

B. अधिकार-सुख कितना मादक और सारहीन है।

C. केवल संधि-नियम से ही हम लोग बाध्य नहीं हैं -शरणागत की रक्षा भी क्षत्रिय का धर्म है।

D. राष्ट्रनीति, दार्शनिकता और कल्पना का लोक नहीं है।

E. पुरुष है कुतूहल और प्रश्न, और स्त्री है विश्लेषण, उत्तर और सब बातों का समाधान।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

a. B, C, D, A, E

Your Personal Exams Guide

Download Prepp APP GET IT ON Google Play

b. B, D, C, A, E

c. B, A, D, C, E

d. B, C, A, D, E

---

82. निबंध 'मजदूरी और प्रेम' के उपशीर्षकों को पहले से बाद के क्रम में लगाइए: **(+2)**

A. गड़रिये का जीवन

B. हल चलाने वाले का जीवन

C. मजदूर की मजदूरी

D. मजदूरी और कला

E. प्रेम मजदूरी

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

a. A, B, C, D, E

b. B, A, D, E, C

c. B, A, C, E, D

d. D, A, C, B, E

---

83. 'अरे यायावर रहेगा याद' में निम्नलिखित अध्यायों को पहले से बाद के क्रम में लगाइए- **(+2)**

A. देवताओं के अंचल में

B. एलुरा

C. किरणों की खोज में

D. परशुराम से तूरखम

E. मौत की घाटी में

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

a. A, D, B, E, C

b. D, C, A, E, B

c. D, B, A, C, E

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

d. B, A, E, C, D

---

84. नीचे दो कथन दिए गए हैं: (+2)

कथन – I: जिस भाषा के माध्यम से राष्ट्र की अधिकांश जनता विचार - विनिमय करती है, वही राष्ट्रभाषा होती है।

कथन – II: किसी राष्ट्र में सभी प्रचलित भाषाएँ राष्ट्रभाषाएँ होती हैं, किन्तु जो भाषा सम्पूर्ण देश की धार्मिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक परम्पराओं को धारण करने में सक्षम होती है, वह भाषा राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित होती है।

उपर्युक्त कथनों के आलोक में निम्नलिखित विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

a. कथन I और II दोनों सत्य हैं।

b. कथन I और II दोनों असत्य हैं।

c. कथन I सत्य है, किन्तु कथन II असत्य है।

d. कथन I असत्य है , किन्तु कथन II सत्य है।

---

85. नीचे दो कथन दिए गए हैं: (+2)

कथन – I: 'साकेत' के वियोग वर्णन के भीतर कवि ने पुरानी पद्धति के आलंकारिक चमत्कारपूर्ण पद्य तथा आजकल की नयी रंगत की वेदना लाक्षणिक वैचित्र्य वाले गीत, दोनों रखे हैं।

कथन – II: प्रेम के शुभ प्रभाव से उर्मिला के हृदय की उदारता का और भी प्रसार हो गया है। वियोग की दशा में प्रिय लक्ष्मण के गोरव की भावना उसे संभाले हुए है।

उपर्युक्त कथनों के आलोक में निम्नलिखित विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

a. कथन I और II दोनों सत्य हैं।

b. कथन I और II दोनों असत्य हैं।

c. कथन I सत्य है , किन्तु कथन II असत्य है।

d. कथन I असत्य है , किन्तु कथन II सत्य है।

---

86. नीचे दो कथन दिए गए हैं: (+2)

कथन – I: इलियट की दृष्टि में परंपरा की व्यापक अर्थवत्ता है। उसे दाय या विरासत के रूप में प्राप्त नहीं किया जा सकता ; उसकी प्राप्ति के लिए कठोर परिश्रम आवश्यक है।

कथन – II: परंपरा कोई मृत या अनुपयोगी वस्तु नहीं है। वस्तुतः जो मृत या अनुपयोगी है, उसे परंपरा की संज्ञा देना ही अनुचित है।

उपर्युक्त कथनों के आलोक में निम्नलिखित विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

Download Prepp APP GET IT ON Google Play

a. कथन I और II दोनों सत्य हैं।

b. कथन I और II दोनों असत्य हैं।

c. कथन I सत्य है, किन्तु कथन II असत्य है।

d. कथन I असत्य है , किन्तु कथन II सत्य है।

---

87. नीचे दो कथन दिए गए हैं : (+2)

कथन – I: हिंदी नवजागरण में महावीर प्रसाद द्विवेदी जी के योगदान का मूल्यांकन करते हुए ध्यान रखना चाहिए कि वे किसी क्रांतिकारी पार्टी के गुप्त रूप से प्रकाशित होने वाले गैर कानूनी पत्र के लिए नहीं लिख रहे थे।

कथन – II: 'सरस्वती' में रचना प्रकाशन का निर्णय करते समय महावीर प्रसाद द्विवेदी प्रेस मालिक का दबाव नहीं मानते थे।

उपर्युक्त कथनों के आलोक में निम्नलिखित विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

a. कथन I और II दोनों सही हैं।

b. कथन I और II दोनों गलत हैं।

c. कथन I सही है, किन्तु कथन II गलत है।

d. कथन I गलत है, किन्तु कथन II सही है।

---

88. नीचे दो कथन दिए गए हैं : एक अभिकथन (Assertion A) के रूप में लिखित है और दूसरा उसके कारण (Reason R) के रूप में है: (+2)

अभिकथन A: प्रेमचन्द, स्त्री-स्वतंत्रता के समर्थक थे, परन्तु वे विवाह को बनाए रखना चाहते थे।

कारण R: 'गोदान' उपन्यास में महत्वपूर्ण स्त्री-चरित्र सक्षम, शक्तिशाली और परिस्थितियों को अनुकूल बनाने के लिए संघर्षरत हैं। इनमें से अनेक का वैवाहिक जीवन तनावपूर्ण है, परन्तु वे इसे बनाये रखना चाहती हैं।

उपर्युक्त कथनों के आलोक में निम्नलिखित विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

a. कथन I और II दोनों सही हैं।

b. कथन I और II दोनों गलत हैं।

c. कथन I सत्य है, किन्तु कथन II गलत है।

d. कथन I असत्य है, किन्तु कथन II सही है।

---

89. नीचे दो कथन दिए गए हैं: (+2)

Download Prepp APP GET IT ON Google Play

कथन – I: 'सिंदूर की होली' नाटक की दु:खान्त परिणति हमें नाटक में आयी परिस्थितियों तथा जद्जन्य समस्याओं को सोचने-समझने के लिए बाध्य करती है और विचारों में डुबो देती है।

कथन – II: 'सिंदूर की होली' अद्भुत, गहन, गंभीर, सामान्य से परे नाटक है तथा उसके पात्र अत्यंत सहज हैं और स्वाभाविक मनोवृत्ति की प्रकृत भूमि पर विचरते नज़र आते हैं।

उपर्युक्त कथनों के आलोक में निम्नलिखित विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

जदजन्य

a. कथन I और II दोनों सही हैं।

b. कथन I और II दोनों गलत हैं।

c. कथन I सही है, किन्तु कथन II गलत है।

d. कथन I गलत है , किन्तु कथन II सही है।

---

90. नीचे दो कथन दिए गए हैं: **(+2)**

'शिवशंभु के चिट्ठे' से संबंधित निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन – I: इन चिट्ठों में से आठ चिट्ठे लार्ड कर्जन के नाम और दो लार्ड मिण्टो के नाम हैं।

कथन – II: ख़तों में से एक ख़त गुप्त जी ने शाइस्ता खाँ के नाम से फूलर साहब को तथा एक सर सय्यद अहमद के नाम से अलीगढ़ कॉलेज के छात्रों को लिखा है।

उपर्युक्त कथनों के आलोक में निम्नलिखित विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

a. कथन I और II दोनों सही हैं।

b. कथन I और II दोनों गलत हैं।

c. कथन I सही है, किन्तु कथन II गलत है।

d. कथन I गलत है, किन्तु कथन II सही है।

---

91. निम्नलिखित अनुच्छेद को ध्यान से पढ़कर उससे संबंधित प्रश्नों के उत्तरों का सही विकल्प चुनिए: **(+2)**

हम सब की मिली-जुली ज़िंदगी में कला के रूपों का ख़ज़ाना हर तरह बेहिसाब बिखरा चला गया है। सुंदरता का अवतार हमारे सामने पल-छिन होता रहता है। अब यह हम पर है, ख़ासतौर से कवियों पर, कि हम अपने सामने और चारों ओर की इस अनन्त और अपार लीला को कितना अपने अंदर बुला सकते हैं। इसका सीधा-सादा मतलब हुआ अपने चारों तरफ़ की ज़िंदगी में दिलचस्पी लेना, उसको ठीक-ठीक यानी वैज्ञानिक आधार पर समझना और अनुभूति और अपने अनुभव को इसी समझ और जानकारी से सुलझाकर स्पष्ट करके, पुष्ट करके अपनी कला-भावना को जगाना। यह आधार इस युग के हर सच्चे और ईमानदार कलाकार के लिए बेहद ज़रूरी है। इस तरह अपनी कला-चेतना को जगाना और उसकी मदद से जीवन की सच्चाई और सौंदर्य को अपनी कला में सजीव से सजीव रूप देते जाना : इसी को मैं 'साधना' समझता हूँ, और इसी में कलाकार का संघर्ष छिपा हुआ देखता हूँ। कला में भावनाओं की तराश-खराश, चमक, तेज़ी और गर्मी सब उसी से पैदा होंगी, उसी 'संघर्ष' और 'साधना'

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

से, जिसमें अन्तर-बाह्य दोनों का मेल है। कला के इस सौंदर्य और उससे मिलने वाले आनंद के शत्रु वे जहाँ और जिस भेष में भी होंगे, जो भी होंगे-परिस्थितियाँ, व्यक्ति या दल-हर ईमानदार कलाकार के शत्रु होंगे।

कला जीवन का सच्चा दर्पण है। और आज के सभी देशों के जीवन में कायापलट तेज़ी के साथ आ रही है; क्योंकि आज किसको नहीं दिखाई दे रहा है कि यह क्रान्ति का युग है। थके हुए पुराने कलाकारों की आहों को भी उससे चमक मिलती है। नयों की तो वह काव्य सामग्री ही है ; क्योंकि वही उनके और उनके आगे की पीढ़ियों के लिए नये, उन्मुक्त, सुखी, आदर्श जीवन की नींव डालनेवाला है।

उपर्युक्त अनुच्छेद का केन्द्रीय विषय है:

a. कला के सामाजिक प्रभाव

b. कला की स्वायत्तता

c. कला और जीवन

d. कला की रचना-प्रक्रिया

---

92. निम्नलिखित अनुच्छेद को ध्यान से पढ़कर उससे संबंधित प्रश्नों के उत्तरों का सही विकल्प चुनिए: (+2)

हम सब की मिली-जुली ज़िंदगी में कला के रूपों का ख़ज़ाना हर तरह बेहिसाब बिखरा चला गया है। सुंदरता का अवतार हमारे सामने पल-छिन होता रहता है। अब यह हम पर है, ख़ासतौर से कवियों पर, कि हम अपने सामने और चारों ओर की इस अनन्त और अपार लीला को कितना अपने अंदर बुला सकते हैं। इसका सीधा-सादा मतलब हुआ अपने चारों तरफ़ की ज़िंदगी में दिलचस्पी लेना, उसको ठीक-ठीक यानी वैज्ञानिक आधार पर समझना और अनुभूति और अपने अनुभव को इसी समझ और जानकारी से सुलझाकर स्पष्ट करके, पुष्ट करके अपनी कला-भावना को जगाना। यह आधार इस युग के हर सच्चे और ईमानदार कलाकार के लिए बेहद ज़रूरी है। इस तरह अपनी कला-चेतना को जगाना और उसकी मदद से जीवन की सच्चाई और सौंदर्य को अपनी कला में सजीव से सजीव रूप देते जाना : इसी को मैं 'साधना' समझता हूँ, और इसी में कलाकार का संघर्ष छिपा हुआ देखता हूँ। कला में भावनाओं की तराश-खराश, चमक, तेज़ी और गर्मी सब उसी से पैदा होंगी, उसी 'संघर्ष' और 'साधना' से, जिसमें अन्तर-बाह्य दोनों का मेल है। कला के इस सौंदर्य और उससे मिलने वाले आनंद के शत्रु वे जहाँ और जिस भेष में भी होंगे, जो भी होंगे-परिस्थितियाँ, व्यक्ति या दल-हर ईमानदार कलाकार के शत्रु होंगे।

कला जीवन का सच्चा दर्पण है। और आज के सभी देशों के जीवन में कायापलट तेज़ी के साथ आ रही है; क्योंकि आज किसको नहीं दिखाई दे रहा है कि यह क्रान्ति का युग है। थके हुए पुराने कलाकारों की आहों को भी उससे चमक मिलती है। नयों की तो वह काव्य सामग्री ही है ; क्योंकि वही उनके और उनके आगे की पीढ़ियों के लिए नये, उन्मुक्त, सुखी, आदर्श जीवन की नींव डालनेवाला है।

उपर्युक्त अनुच्छेद के अनुसार कलाकार के लिए जरूरी नहीं है:

a. ज़िंदगी में दिलचस्पी रखना

b. जिंदगी को वैज्ञानिक आधार पर समझना

c. सामाजिक क्रान्ति करना

d. कला-भावना और कला-चेतना को जगाना

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

93. निम्नलिखित अनुच्छेद को ध्यान से पढ़कर उससे संबंधित प्रश्नों के उत्तरों का सही विकल्प चुनिए: **(+2)**

हम सब की मिली-जुली ज़िंदगी में कला के रूपों का ख़ज़ाना हर तरह बेहिसाब बिखरा चला गया है। सुंदरता का अवतार हमारे सामने पल-छिन होता रहता है। अब यह हम पर है, ख़ासतौर से कवियों पर, कि हम अपने सामने और चारों ओर की इस अनन्त और अपार लीला को कितना अपने अंदर बुला सकते हैं। इसका सीधा-सादा मतलब हुआ अपने चारों तरफ़ की ज़िंदगी में दिलचस्पी लेना, उसको ठीक-ठीक यानी वैज्ञानिक आधार पर समझना और अनुभूति और अपने अनुभव को इसी समझ और जानकारी से सुलझाकर स्पष्ट करके, पुष्ट करके अपनी कला-भावना को जगाना। यह आधार इस युग के हर सच्चे और ईमानदार कलाकार के लिए बेहद ज़रूरी है। इस तरह अपनी कला-चेतना को जगाना और उसकी मदद से जीवन की सच्चाई और सौंदर्य को अपनी कला में सजीव से सजीव रूप देते जाना : इसी को मैं 'साधना' समझता हूँ, और इसी में कलाकार का संघर्ष छिपा हुआ देखता हूँ। कला में भावनाओं की तराश-खराश, चमक, तेज़ी और गर्मी सब उसी से पैदा होंगी, उसी 'संघर्ष' और 'साधना' से, जिसमें अन्तर-बाह्य दोनों का मेल है। कला के इस सौंदर्य और उससे मिलने वाले आनंद के शत्रु वे जहाँ और जिस भेष में भी होंगे, जो भी होंगे-परिस्थितियाँ, व्यक्ति या दल-हर ईमानदार कलाकार के शत्रु होंगे।

कला जीवन का सच्चा दर्पण है। और आज के सभी देशों के जीवन में कायापलट तेज़ी के साथ आ रही है; क्योंकि आज किसको नहीं दिखाई दे रहा है कि यह क्रान्ति का युग है। थके हुए पुराने कलाकारों की आहों को भी उससे चमक मिलती है। नयों की तो वह काव्य सामग्री ही है ; क्योंकि वही उनके और उनके आगे की पीढ़ियों के लिए नये, उन्मुक्त, सुखी, आदर्श जीवन की नींव डालनेवाला है।

उपर्युक्त अनुच्छेद के आधार पर बताइए कि ईमानदार कलाकार के शत्रु कौन हैं?

a. दल-साधना-दायरा

b. व्यक्ति-संघर्ष-समर्पण

c. संघर्ष-साधना-त्याग

d. परिस्थितियाँ-व्यक्ति-दल

---

94. निम्नलिखित अनुच्छेद को ध्यान से पढ़कर उससे संबंधित प्रश्नों के उत्तरों का सही विकल्प चुनिए: **(+2)**

हम सब की मिली-जुली ज़िंदगी में कला के रूपों का ख़ज़ाना हर तरह बेहिसाब बिखरा चला गया है। सुंदरता का अवतार हमारे सामने पल-छिन होता रहता है। अब यह हम पर है, ख़ासतौर से कवियों पर, कि हम अपने सामने और चारों ओर की इस अनन्त और अपार लीला को कितना अपने अंदर बुला सकते हैं। इसका सीधा-सादा मतलब हुआ अपने चारों तरफ़ की ज़िंदगी में दिलचस्पी लेना, उसको ठीक-ठीक यानी वैज्ञानिक आधार पर समझना और अनुभूति और अपने अनुभव को इसी समझ और जानकारी से सुलझाकर स्पष्ट करके, पुष्ट करके अपनी कला-भावना को जगाना। यह आधार इस युग के हर सच्चे और ईमानदार कलाकार के लिए बेहद ज़रूरी है। इस तरह अपनी कला-चेतना को जगाना और उसकी मदद से जीवन की सच्चाई और सौंदर्य को अपनी कला में सजीव से सजीव रूप देते जाना : इसी को मैं 'साधना' समझता हूँ, और इसी में कलाकार का संघर्ष छिपा हुआ देखता हूँ। कला में भावनाओं की तराश-खराश, चमक, तेज़ी और गर्मी सब उसी से पैदा होंगी, उसी 'संघर्ष' और 'साधना' से, जिसमें अन्तर-बाह्य दोनों का मेल है। कला के इस सौंदर्य और उससे मिलने वाले आनंद के शत्रु वे जहाँ और जिस भेष में भी होंगे, जो भी होंगे-परिस्थितियाँ, व्यक्ति या दल-हर ईमानदार कलाकार के शत्रु होंगे।

कला जीवन का सच्चा दर्पण है। और आज के सभी देशों के जीवन में कायापलट तेज़ी के साथ आ रही है; क्योंकि आज किसको नहीं दिखाई दे रहा है कि यह क्रान्ति का युग है। थके हुए पुराने कलाकारों की आहों को भी उससे चमक मिलती है। नयों की तो वह काव्य सामग्री ही है ; क्योंकि वही उनके और उनके आगे की पीढ़ियों के लिए नये, उन्मुक्त, सुखी, आदर्श जीवन की नींव डालनेवाला है।

Download Prepp APP GET IT ON Google Play

कला चेतना जाग्रत कर जीवन की सच्चाई और सौंदर्य को सजीव रूप देना क्या कहलाएगा?

a. लीला

b. आनंद

c. साधना

d. अनुभूति

---

95. निम्नलिखित अनुच्छेद को ध्यान से पढ़कर उससे संबंधित प्रश्नों के उत्तरों का सही विकल्प चुनिए: (+2)

हम सब की मिली-जुली ज़िंदगी में कला के रूपों का ख़ज़ाना हर तरह बेहिसाब बिखरा चला गया है। सुंदरता का अवतार हमारे सामने पल-छिन होता रहता है। अब यह हम पर है, ख़ासतौर से कवियों पर, कि हम अपने सामने और चारों ओर की इस अनन्त और अपार लीला को कितना अपने अंदर बुला सकते हैं। इसका सीधा-सादा मतलब हुआ अपने चारों तरफ़ की ज़िंदगी में दिलचस्पी लेना, उसको ठीक-ठीक यानी वैज्ञानिक आधार पर समझना और अनुभूति और अपने अनुभव को इसी समझ और जानकारी से सुलझाकर स्पष्ट करके, पुष्ट करके अपनी कला-भावना को जगाना। यह आधार इस युग के हर सच्चे और ईमानदार कलाकार के लिए बेहद ज़रूरी है। इस तरह अपनी कला-चेतना को जगाना और उसकी मदद से जीवन की सच्चाई और सौंदर्य को अपनी कला में सजीव से सजीव रूप देते जाना : इसी को मैं 'साधना' समझता हूँ, और इसी में कलाकार का संघर्ष छिपा हुआ देखता हूँ। कला में भावनाओं की तराश-खराश, चमक, तेज़ी और गर्मी सब उसी से पैदा होंगी, उसी 'संघर्ष' और 'साधना' से, जिसमें अन्तर-बाह्य दोनों का मेल है। कला के इस सौंदर्य और उससे मिलने वाले आनंद के शत्रु वे जहाँ और जिस भेष में भी होंगे, जो भी होंगे-परिस्थितियाँ, व्यक्ति या दल-हर ईमानदार कलाकार के शत्रु होंगे।

कला जीवन का सच्चा दर्पण है। और आज के सभी देशों के जीवन में कायापलट तेज़ी के साथ आ रही है; क्योंकि आज किसको नहीं दिखाई दे रहा है कि यह क्रान्ति का युग है। थके हुए पुराने कलाकारों की आहों को भी उससे चमक मिलती है। नयों की तो वह काव्य सामग्री ही है ; क्योंकि वही उनके और उनके आगे की पीढ़ियों के लिए नये, उन्मुक्त, सुखी, आदर्श जीवन की नींव डालनेवाला है।

उपर्युक्त अनुच्छेद के आधार पर बताइए कि आज का युग किस प्रकार का है?

a. संघर्ष का

b. दलगत राजनीति का

c. क्रांति का

d. उन्मुक्त जीवन शैली का

---

96. निम्नलिखित अनुच्छेद को ध्यान से पढ़कर उससे संबंधित प्रश्नों के उत्तरों का सही विकल्प चुनिए: (+2)

भक्ति आंदोलन पहले शहरों में बसने वाले लोगों, खासकर छोटे-छोटे व्यापारियों, जुलाहों, टोकरी बनाने वालों और भिश्तियों जैसे लोगों के बीच से शुरू हुआ था। किन्तु सत्रहवीं शताब्दी तक वह किसानो में भी व्याप्त हो गया। इसने एक जन आंदोलन का रूप धारण कर लिया और मुगल शासन तथा सामन्ती सरदारों के विरुद्ध कभी-कभी सशस्त विद्रोहों के रूप में भी प्रकट हुआ। इस आंदोलन के नेता अपनी कवितायें और अपने गीत फारसी और संस्कृत जैसी दुरुह और क्लिष्ट भाषाओं में नहीं, वरन

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

जनता की भाषाओं में रचते थे। इससे राष्ट्रीय इकाइयों तथा राष्ट्रीय भाषाओं के विकास को प्रोत्साहन मिला, जो भारतीय राष्ट्र के विकास की एक ऐतिहासिक प्रक्रिया थी।

भक्ति आंदोलन ने देश के भिन्न-भिन्न भागों में, भिन्न-भिन्न मात्राओं में तीव्रता और वेग ग्रहण किया। यह आंदोलन विभिन्न रूपों में प्रकट हुआ। किन्तु कुछ मूलभूत सिद्धांत ऐसे थे जो समग्र रूप से पूरे आंदोलन पर लागू होते थे -पहले, धार्मिक विचारों के बावजूद जनता की एकता को स्वीकार करना; दूसरे, ईश्वर के सामने सबकी समानता; तीसरे, जाति प्रथा का विरोध; चौथे, यह विश्वास कि मनुष्य और ईश्वर के बीच तादात्म्य प्रत्येक मनुष्य के सद्गुणों पर निर्भर करता है, न कि ऊंची जाति अथवा धन-संपत्ति पर; पांचवे, इस विचार पर जोर कि भक्ति की आराधना का उच्चतम स्वरूप है; और अंत में, कर्मकाण्डों, मूर्ति पूजा, तीर्थाटनों और अपने को दी जाने वाली यंत्रणाओं की निन्दा। भक्ति आंदोलन मनुष्य की सत्ता को सर्वश्रेष्ठ मानता था और सभी वर्गगत एवं जातिगत भेदभावों तथा धर्म के नाम पर किये जानेवाले सामाजिक उत्पीड़न का विरोध करता था।

किन्तु भक्ति आंदोलन की अपनी सीमाएं थीं। भक्ति आंदोलन ने आम जनता में जागृति तो पैदा की, किन्तु वह सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था में मौजूद असंगतियों के वास्तविक कारणों को समझने और मानव के दुखों और पीड़ाओं के नूतन समाधान प्रस्तुत करने में सफल नहीं हुआ। यही एक मुख्य कारण है कि इस आंदोलन की परिणति, जिसने सामन्ती उत्पीड़न और पुरोहिती रूढ़िवाद के विरुद्ध जनता को संयुक्त किया था, अन्ततः घोर संकीर्णता वाद में हुई।

उपर्युक्त अनुच्छेद के अनुसार, भक्ति आंदोलन की सीमा क्या थी?

a. वह मनुष्य की पीड़ाओं का नया समाधान न दे सका।

b. वह सामन्ती उत्पीड़न का विरोधी था।

c. वह आम जनता को धर्मगुरुओं के विरुद्ध भड़काता था।

d. वह सामाजिक भेदभावों पर चुप्पी ओढ़े रहा।

---

97. निम्नलिखित अनुच्छेद को ध्यान से पढ़कर उससे संबंधित प्रश्नों के उत्तरों का सही विकल्प चुनिए: **(+2)**

भक्ति आंदोलन पहले शहरों में बसने वाले लोगों, खासकर छोटे-छोटे व्यापारियों, जुलाहों, टोकरी बनाने वालों और भिश्तियों जैसे लोगों के बीच से शुरू हुआ था। किन्तु सत्रहवीं शताब्दी तक वह किसानो में भी व्याप्त हो गया। इसने एक जन आंदोलन का रूप धारण कर लिया और मुगल शासन तथा सामन्ती सरदारों के विरुद्ध कभी-कभी सशस्त्र विद्रोहों के रूप में भी प्रकट हुआ। इस आंदोलन के नेता अपनी कवितायें और अपने गीत फारसी और संस्कृत जैसी दुरुह और क्लिष्ट भाषाओं में नहीं, वरन जनता की भाषाओं में रचते थे। इससे राष्ट्रीय इकाइयों तथा राष्ट्रीय भाषाओं के विकास को प्रोत्साहन मिला, जो भारतीय राष्ट्र के विकास की एक ऐतिहासिक प्रक्रिया थी।

भक्ति आंदोलन ने देश के भिन्न-भिन्न भागों में, भिन्न-भिन्न मात्राओं में तीव्रता और वेग ग्रहण किया। यह आंदोलन विभिन्न रूपों में प्रकट हुआ। किन्तु कुछ मूलभूत सिद्धांत ऐसे थे जो समग्र रूप से पूरे आंदोलन पर लागू होते थे -पहले, धार्मिक विचारों के बावजूद जनता की एकता को स्वीकार करना; दूसरे, ईश्वर के सामने सबकी समानता; तीसरे, जाति प्रथा का विरोध; चौथे, यह विश्वास कि मनुष्य और ईश्वर के बीच तादात्म्य प्रत्येक मनुष्य के सद्गुणों पर निर्भर करता है, न कि ऊंची जाति अथवा धन-संपत्ति पर; पांचवे, इस विचार पर जोर कि भक्ति की आराधना का उच्चतम स्वरूप है; और अंत में, कर्मकाण्डों, मूर्ति पूजा, तीर्थाटनों और अपने को दी जाने वाली यंत्रणाओं की निन्दा। भक्ति आंदोलन मनुष्य की सत्ता को सर्वश्रेष्ठ मानता था और सभी वर्गगत एवं जातिगत भेदभावों तथा धर्म के नाम पर किये जानेवाले सामाजिक उत्पीड़न का विरोध करता था।

किन्तु भक्ति आंदोलन की अपनी सीमाएं थीं। भक्ति आंदोलन ने आम जनता में जागृति तो पैदा की, किन्तु वह सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था में मौजूद असंगतियों के वास्तविक कारणों को समझने और मानव के दुखों और पीड़ाओं के नूतन समाधान

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

प्रस्तुत करने में सफल नहीं हुआ। यही एक मुख्य कारण है कि इस आंदोलन की परिणति, जिसने सामन्ती उत्पीड़न और पुरोहिती रूढ़िवाद के विरुद्ध जनता को संयुक्त किया था, अन्ततः घोर संकीर्णता वाद में हुई।

उपर्युक्त अनुच्छेद के अनुसार भक्ति आंदोलन ने भाषाओं के प्रति क्या नीति रखी?

a. जनता की भाषाओं को हेय माना

b. अभिजन भाषाओं में साहित्य-रचना को प्रोत्साहित किया

c. राष्ट्रीय भाषाओं को प्रोत्साहन दिया

d. संस्कृत का महिमामंडन किया

---

98. निम्नलिखित अनुच्छेद को ध्यान से पढ़कर उससे संबंधित प्रश्नों के उत्तरों का सही विकल्प चुनिए: **(+2)**

भक्ति आंदोलन पहले शहरों में बसने वाले लोगों, खासकर छोटे-छोटे व्यापारियों, जुलाहों, टोकरी बनाने वालों और भिश्तियों जैसे लोगों के बीच से शुरू हुआ था। किन्तु सत्रहवीं शताब्दी तक वह किसानो में भी व्याप्त हो गया। इसने एक जन आंदोलन का रूप धारण कर लिया और मुगल शासन तथा सामन्ती सरदारों के विरुद्ध कभी-कभी सशस्त्र विद्रोहों के रूप में भी प्रकट हुआ। इस आंदोलन के नेता अपनी कवितायें और अपने गीत फारसी और संस्कृत जैसी दुरूह और क्लिष्ट भाषाओं में नहीं, वरन जनता की भाषाओं में रचते थे। इससे राष्ट्रीय इकाइयों तथा राष्ट्रीय भाषाओं के विकास को प्रोत्साहन मिला, जो भारतीय राष्ट्र के विकास की एक ऐतिहासिक प्रक्रिया थी।

भक्ति आंदोलन ने देश के भिन्न-भिन्न भागों में, भिन्न-भिन्न मात्राओं में तीव्रता और वेग ग्रहण किया। यह आंदोलन विभिन्न रूपों में प्रकट हुआ। किन्तु कुछ मूलभूत सिद्धांत ऐसे थे जो समग्र रूप से पूरे आंदोलन पर लागू होते थे -पहले, धार्मिक विचारों के बावजूद जनता की एकता को स्वीकार करना; दूसरे, ईश्वर के सामने सबकी समानता; तीसरे, जाति प्रथा का विरोध; चौथे, यह विश्वास कि मनुष्य और ईश्वर के बीच तादात्म्य प्रत्येक मनुष्य के सद्गुणों पर निर्भर करता है, न कि ऊंची जाति अथवा धन-संपत्ति पर; पांचवे, इस विचार पर जोर कि भक्ति की आराधना का उच्चतम स्वरूप है; और अंत में, कर्मकाण्डों, मूर्ति पूजा, तीर्थटिनों और अपने को दी जाने वाली यंत्रणाओं की निन्दा। भक्ति आंदोलन मनुष्य की सत्ता को सर्वश्रेष्ठ मानता था और सभी वर्गगत एवं जातिगत भेदभावों तथा धर्म के नाम पर किये जानेवाले सामाजिक उत्पीड़न का विरोध करता था।

किन्तु भक्ति आंदोलन की अपनी सीमाएं थीं। भक्ति आंदोलन ने आम जनता में जागृति तो पैदा की, किन्तु वह सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था में मौजूद असंगतियों के वास्तविक कारणों को समझने और मानव के दुखों और पीड़ाओं के नूतन समाधान प्रस्तुत करने में सफल नहीं हुआ। यही एक मुख्य कारण है कि इस आंदोलन की परिणति, जिसने सामन्ती उत्पीड़न और पुरोहिती रूढ़िवाद के विरुद्ध जनता को संयुक्त किया था, अन्ततः घोर संकीर्णता वाद में हुई।

उपर्युक्त अनुच्छेद के अनुसार, भक्ति आंदोलन की जाति-व्यवस्था को लेकर क्या नीति थी:

a. भक्ति आंदोलन जाति व्यवस्था को ईश्वर-जन्य मानता था।

b. भक्ति आंदोलन जाति-प्रथा का विरोध करता था।

c. भक्ति आंदोलन मानता था कि ऊँची जातियों के लोग ईश्वर के प्रिय हैं।

d. भक्ति आंदोलन मानता था कि भक्तों को जाति जैसे प्रश्नों पर विचार नहीं करना चाहिए।

---

99. निम्नलिखित अनुच्छेद को ध्यान से पढ़कर उससे संबंधित प्रश्नों के उत्तरों का सही विकल्प चुनिए: **(+2)**

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

भक्ति आंदोलन पहले शहरों में बसने वाले लोगों, खासकर छोटे-छोटे व्यापारियों, जुलाहों, टोकरी बनाने वालों और भिश्तियों जैसे लोगों के बीच से शुरू हुआ था। किन्तु सत्रहवीं शताब्दी तक वह किसानो में भी व्याप्त हो गया। इसने एक जन आंदोलन का रूप धारण कर लिया और मुगल शासन तथा सामन्ती सरदारों के विरुद्ध कभी-कभी सशस्त विद्रोहों के रूप में भी प्रकट हुआ। इस आंदोलन के नेता अपनी कवितायें और अपने गीत फारसी और संस्कृत जैसी दुरूह और क्लिष्ट भाषाओं में नहीं, वरन जनता की भाषाओं में रचते थे। इससे राष्ट्रीय इकाइयों तथा राष्ट्रीय भाषाओं के विकास को प्रोत्साहन मिला, जो भारतीय राष्ट्र के विकास की एक ऐतिहासिक प्रक्रिया थी।

भक्ति आंदोलन ने देश के भिन्न-भिन्न भागों में, भिन्न-भिन्न मात्राओं में तीव्रता और वेग ग्रहण किया। यह आंदोलन विभिन्न रूपों में प्रकट हुआ। किन्तु कुछ मूलभूत सिद्धांत ऐसे थे जो समग्र रूप से पूरे आंदोलन पर लागू होते थे -पहले, धार्मिक विचारों के बावजूद जनता की एकता को स्वीकार करना; दूसरे, ईश्वर के सामने सबकी समानता; तीसरे, जाति प्रथा का विरोध; चौथे, यह विश्वास कि मनुष्य और ईश्वर के बीच तादात्म्य प्रत्येक मनुष्य के सद्गुणों पर निर्भर करता है, न कि ऊंची जाति अथवा धन-संपत्ति पर; पांचवे, इस विचार पर जोर कि भक्ति की आराधना का उच्चतम स्वरूप है; और अंत में, कर्मकाण्डों, मूर्ति पूजा, तीर्थटिनों और अपने को दी जाने वाली यंत्रणाओं की निन्दा। भक्ति आंदोलन मनुष्य की सत्ता को सर्वश्रेष्ठ मानता था और सभी वर्गगत एवं जातिगत भेदभावों तथा धर्म के नाम पर किये जानेवाले सामाजिक उत्पीड़न का विरोध करता था।

किन्तु भक्ति आंदोलन की अपनी सीमाएं थीं। भक्ति आंदोलन ने आम जनता में जागृति तो पैदा की, किन्तु वह सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था में मौजूद असंगतियों के वास्तविक कारणों को समझने और मानव के दुखों और पीड़ाओं के नूतन समाधान प्रस्तुत करने में सफल नहीं हुआ। यही एक मुख्य कारण है कि इस आंदोलन की परिणति, जिसने सामन्ती उत्पीड़न और पुरोहिती रूढ़िवाद के विरुद्ध जनता को संयुक्त किया था, अन्ततः घोर संकीर्णता वाद में हुई।

उपर्युक्त अनुच्छेद के अनुसार, भक्ति आंदोलन का केन्द्रीय विश्वास है:

a. मनुष्य की सत्ता सर्वश्रेष्ठ है।

b. जनता का धार्मिक विचारों के आधार पर विभाजित रहना उचित है।

c. सामाजिक भेद भक्ति से दूर नहीं किये जा सकते।

d. मनुष्य से ईश्वर का संबंध तभी हो सकता है, जबकि वह सामाजिक रूप से श्रेष्ठ हो।

---

100. निम्नलिखित अनुच्छेद को ध्यान से पढ़कर उससे संबंधित प्रश्नों के उत्तरों का सही विकल्प चुनिए: **(+2)**

भक्ति आंदोलन पहले शहरों में बसने वाले लोगों, खासकर छोटे-छोटे व्यापारियों, जुलाहों, टोकरी बनाने वालों और भिश्तियों जैसे लोगों के बीच से शुरू हुआ था। किन्तु सत्रहवीं शताब्दी तक वह किसानो में भी व्याप्त हो गया। इसने एक जन आंदोलन का रूप धारण कर लिया और मुगल शासन तथा सामन्ती सरदारों के विरुद्ध कभी-कभी सशस्त विद्रोहों के रूप में भी प्रकट हुआ। इस आंदोलन के नेता अपनी कवितायें और अपने गीत फारसी और संस्कृत जैसी दुरूह और क्लिष्ट भाषाओं में नहीं, वरन जनता की भाषाओं में रचते थे। इससे राष्ट्रीय इकाइयों तथा राष्ट्रीय भाषाओं के विकास को प्रोत्साहन मिला, जो भारतीय राष्ट्र के विकास की एक ऐतिहासिक प्रक्रिया थी।

भक्ति आंदोलन ने देश के भिन्न-भिन्न भागों में, भिन्न-भिन्न मात्राओं में तीव्रता और वेग ग्रहण किया। यह आंदोलन विभिन्न रूपों में प्रकट हुआ। किन्तु कुछ मूलभूत सिद्धांत ऐसे थे जो समग्र रूप से पूरे आंदोलन पर लागू होते थे -पहले, धार्मिक विचारों के बावजूद जनता की एकता को स्वीकार करना; दूसरे, ईश्वर के सामने सबकी समानता; तीसरे, जाति प्रथा का विरोध; चौथे, यह विश्वास कि मनुष्य और ईश्वर के बीच तादात्म्य प्रत्येक मनुष्य के सद्गुणों पर निर्भर करता है, न कि ऊंची जाति अथवा धन-संपत्ति पर; पांचवे, इस विचार पर जोर कि भक्ति की आराधना का उच्चतम स्वरूप है; और अंत में, कर्मकाण्डों, मूर्ति पूजा, तीर्थटिनों और अपने को दी जाने वाली यंत्रणाओं की निन्दा। भक्ति आंदोलन मनुष्य की सत्ता को सर्वश्रेष्ठ मानता था और सभी वर्गगत एवं जातिगत भेदभावों तथा धर्म के नाम पर किये जानेवाले सामाजिक उत्पीड़न का विरोध करता था।

Download Prepp APP GET IT ON Google Play

किन्तु भक्ति आंदोलन की अपनी सीमाएं थीं। भक्ति आंदोलन ने आम जनता में जागृति तो पैदा की, किन्तु वह सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था में मौजूद असंगतियों के वास्तविक कारणों को समझने और मानव के दुखों और पीड़ाओं के नूतन समाधान प्रस्तुत करने में सफल नहीं हुआ। यही एक मुख्य कारण है कि इस आंदोलन की परिणति, जिसने सामन्ती उत्पीड़न और पुरोहिती रूढ़िवाद के विरुद्ध जनता को संयुक्त किया था, अन्ततः घोर संकीर्णता वाद में हुई।

उपर्युक्त अनुच्छेद के अनुसार, भक्ति आंदोलन जन आंदोलन बन सका, क्योंकि

a. जनता अपनी माँगों के लिए आन्दोलनरत थी।

b. जनता केन्द्रीय सत्ता के विरुद्ध संघर्षरत थी।

c. जनता खुद को सर्वश्रेष्ठ मानती थी।

d. जनता का बड़ा भाग, विशेष रूप से छोटे व्यापारी, शिल्पी और किसान किसी न किसी रूप में भक्ति से सम्बद्ध हुए।

Your Personal Exams Guide

Download Prepp APP GET IT ON Google Play

Answers

1. **Answer: b**

Explanation:

देवनागरी लिपि का सही विकास क्रम है- **ब्राह्मी लिपि – गुप्त लिपि – कुटिल लिपि – देवनागरी**

- ब्राह्मी लिपि की उत्तरी शैली से गुप्त लिपि का विकास हुआ है।
- गुप्त लिपि से कुटिल लिपि का विकास हुआ है।
- कुटिल लिपि से देवनागरी लिपि और शारदा लिपि का विकास हुआ है।

⭐ Key Points

देवनागरी लिपि-

- बाएँ से दाएँ लिखी जाती है।
- ध्वन्यात्मक लिपि,ब्राह्मी से विकसित।
- अन्य विकसित भाषा-संस्कृत,अपभ्रंश,पाली, हिंदी,मराठी आदि।

⭐ Important Points

ब्राह्मी लिपि-

- बाएँ से दाएँ लिखी जाती है।
- मात्रात्मक लिपि,व्यंजनों पर मात्रा लगा कर लिखी जाती है।
- प्राचीन उदहारण अशोक के शिलालेख है।

गुप्त लिपि-

- इसे गुप्त ब्राह्मी लिपि भी कहते है।
- गुप्त काल में संस्कृत लिखने के लिए प्रयोग की जाती थी।

कुटिललिपि-

- **कुटिललिपि केअन्यनाम-**
  - उत्तर लिच्छवी लिपि, विकटाक्षर लिपि, सिद्ध मातृका लिपि, न्यूनकोणीय लिपि।
- इस **लिपि** में अक्षरों के सिर ठोस त्रिकोण जैसे हैं,लेकिन कहीं-कहीं ये आड़े-तिरछे,टेढ़े-मेढ़े या कुटिल ढंग से भी हैं।
- यह **लिपि** छठी शताब्दी से नवीं शताब्दी तक प्रचलन में रही।

⭐ Additional Information

- लिपिअर्थ-लेखन प्रणाली/किसी भाषा की लिखावट/लिखने का ढंग।

---

2. **Answer: c**

Explanation:

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

हिंदी में अनुनासिक व्यंजनों की संख्या है- पाँच

⭐ **Key Points**

अनुनासिक व्यंजन-

- अनुनासिक वे शब्द जिनका उच्चारण नाक और मुँह दोनों से होता है, उन्हे अनुनासिक कहते हैं।
- जिन स्वरों के उच्चारण में मुख के साथ-साथ नासिका की भी सहायता लेनी पड़ती है।
- अर्थात् जिन स्वरों का उच्चारण मुख और नासिका दोनों से किया जाता है, वे अनुनासिक कहलाते हैं।
- जब किसी स्वर का उच्चारण नासिका और मुख दोनों से किया जाता है, तब उसके ऊपर चंद्रबिंदु (ँ) लगा दिया जाता है।
- जैसे- हँसना, आँख, चाँद। इनका चिह्न चन्द्रबिन्दु (ँ) है।
- अनुनासिक - ङ, ञ, ण, न, म।

⭐ **Important Points**

व्यंजन की परिभाषा	**उदाहरण**
वे वर्ण जिनका उच्चारण बिना स्वर की सहायता के बिना सम्भव नही है, अर्थात इनको स्वर की सहायता से बोला जाता है, व्यंजन कहलाते हैं, अर्थात जिनका उच्चारण स्वर की सहायता से किया जाता है वे व्यंजन वर्ण कहलाते हैं। **उदाहरण** - क, ख, ग, घ आदि	
स्पर्श व्यंजन	च, छ, ज, ट, ठ आदि।
ऊष्म व्यंजन	श, ष, स, ह आदि।
अंतःस्थ व्यंजन	य, र, ल, व आदि।
संयुक्त व्यंजन	क्ष, त्र, ज्ञ आदि।
आगत व्यंजन	ज़, फ़ आदि
अनुनासिक	ङ, ञ, ण, न, म
श्वास की मात्रा के आधार पर दो भागों में बांटा गया है- अल्पप्राण और महाप्राण।	क्रमशः- क, ब, प, म और ख, घ, छ, झ आदि
उच्चारण में ध्वनि गूंज के आधार पर भी इनके दो भेद किए गए हैं- घोष और अघोष व्यंजन।	क्रमशः- ग, घ, ज, झ और क, ख, च, छ आदि।

Prepp Your Personal Exams Guide

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

3. **Answer: d**

Explanation:

गोविन्द बल्लभ पंत की अध्यक्षता में संयुक्त संसदीय राजभाषा समिति का गठन **1957** में किया गया।

⭐ Key Points

- राजभाषा संसदीय समिति का गठन - संविधान के अनुच्छेद 344 (4) के अनुसार 1957 में राजभाषा संसदीय समिति का गठन राष्ट्रपति के आदेश से हुआ।
- इसमें कुल तीस सदस्य (लोक सभा से 20 व राज्य सभा से 10) थे। पंडित गोविन्द वल्लभ पंत को इस समिति का अध्यक्ष बनाया गया। समिति का कार्य था - आयोग की रिपोर्ट की जांच करना तथा उस पर विचार करके अपनी रिपोर्ट राष्ट्रपति को प्रस्तुत करना।
- अपनी 26 बैठकों में समिति ने आयोग की रिपोर्ट के सभी पहलुओं का अध्ययन किया तथा 08 फरवरी, 1959 को अपनी रिपोर्ट राष्ट्रपति महोदय को दे दी।

---

4. **Answer: c**

Explanation:

बुंदेली बोली की उपबोलियाँ हैं- **भदौरी, बनाफरी, खटोला**

⭐ Key Points

बुंदेली भाषा के उपबोलियाँ निम्नलिखित हैं-

- **चतरगुंवा** (Chitrakootiya):
  - चतरगुंवा उपबोली चित्रकूट जिले, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के कुछ हिस्सों में बोली जाती है।
- **भदावरी** (Bhadauri):
  - भदावरी उपबोली भदोही जिले, उत्तर प्रदेश में बोली जाती है।
- **नरसिंहपुरिया** (Narsinghpuriya):
  - नरसिंहपुरिया उपबोली नरसिंहपुर जिले, मध्य प्रदेश में बोली जाती है।
- **बगहेलखंडी** (Bagheli-Khadi):
  - बगहेलखंडी उपबोली बगेलखंड जिले, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के कुछ हिस्सों में बोली जाती है।
- **बागदी** (Bagdi):
  - बागदी उपबोली बुंदेलखंड विभाग के कुछ हिस्सों, जैसे जबलपुर, शहडोल, उमरिया जिले, मध्य प्रदेश में बोली जाती है।
- ये उपबोलियाँ भाषा के विभिन्न क्षेत्रों में उपयोग होने वाली वैरांगणिकताओं को दर्शाती हैं और विशेष शब्दावली, उच्चारण और व्याकरणिक विशेषताएं रखती हैं।

---

5. **Answer: a**

Explanation:

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

"यूरोप में 'बिहारी सतसई' के समकक्ष कोई रचना नहीं है।"- यह कथन **जॉर्ज ग्रियर्सन** का है।

जॉर्ज ग्रियर्सन-

- "पूरे यूरोप में एक भी कवि बिहारी की बराबरी नहीं कर सकता।यूरोप में बिहारी सतसई के समकक्ष को रचना प्राप्त नहीं होती है।"

⭐ Key Points

सतसई-

- दोहा छंद मे रचित मुक्तक काव्य है।
- श्रृंगार,नायिका भेद,रीति,गुण आदि पर सुंदर दोहे लिखे गए है।
- कुल दोहे 719 है।
- परंतु जगन्नाथ दास 'रत्नाकर' ने इसके दोहों की संख्या 713 मानी है।
- सतसई पर प्रभाव है-
  - हाल कृत गाथा सप्तशती
  - गोवर्धनाचार्य कृत आर्य सप्तशती
  - अमरुक कृत आमरुक शतक
- इसमें माधुर्य गुण की प्रधानता है।

⭐ Important Points

बिहारी-

- जन्म-1595-1663 ई.
- ये रीतिकाल की रीतिसिद्ध शाखा के प्रमुख कवि है।
- राजा जयसिंह के दरबारी कवि थे।
- **प्रमुख रचना-**
  - बिहारी सतसई-दोहा छंद में रचित मुक्तक काव्य है।
- बिहारी को राधचरण गोस्वामी ने 'पीयूषवर्षी मेघ' कहा है।
- बिहारी के काव्य को पद्म सिंह शर्मा ने 'शक्कर की रोटी' कहा है।

⭐ Additional Information

आचार्य शुक्ल-

- यदि प्रबंधकाव्य एक विस्तृत वनस्थली है तो मुक्तक एक चुना हुआ गुलदस्ता है।"
- "कविता का अन्तिम लक्ष्य जगत के मार्मिक पक्षों का प्रत्यक्षीकरण करके उनके साथ मनुष्य हृदय का सामंजस्य स्थापन है।"

डॉ. नगेन्द्र-

- "सौन्दर्य कोई निरपेक्ष वस्तु नहीं है। उसका निर्माण भी तो कलाकार की अपनी भावनाओं और धारणाओं के आधार पर ही होता है।"

रामकुमार वर्मा-

- "कला और विषय वस्तु दोनों ही समान रूप से साहित्य-रचना के लिए निर्णायक महत्त्व की नहीं है। निर्णायक भूमिका हमेशा विषय-वस्तु की ही होती है।"

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

6. **Answer: c**

Explanation:

"लोग कबीर आदि भक्तों को ज्ञानाश्रयी, निर्गुनिया आदि कहते हैं, वे प्रायः भूल जाते हैं कि निर्गुनिया होकर भी कबीरदास भक्त हैं और उनके राम वेदांतियों के ब्रह्म की अपेक्षा भक्तों के भगवान अधिक हैं।" - यह **आचार्य हज़ारीप्रसाद द्विवेदी**का कथन है।

⭐ Key Points

आचार्यहजारीप्रसादद्विवेदी-

- **जन्म-** 1907-1979ई.
- रचनाएँ-
  - सुर साहित्य(1930)
  - हिंदी साहित्य की भूमिका(1940)
  - कबीर(1942)
  - हिंदी साहित्य का आदिकाल(1952)
  - कालिदास की लालित्य योजना(1965) आदि।

⭐ Important Points

आचार्य रामचंद्र शुक्ल-

- **जन्म-** 1884-1941ई.
- **प्रसिद्ध आलोचनात्मक पुस्तक-**
  - गोस्वामी तुलसीदास(1923)
  - भ्रमरगीत सार(1925)
  - हिंदी साहित्य का इतिहास(1929)
  - काव्य में रहस्यवाद(1929) आदि।

नंददुलारेवाजपेयी-

- **जन्म-** 1906-1967ई.
- रचनाएँ-
  - हिंदी साहित्य:बीसवीं शताब्दी(1942)
  - जयशंकर प्रसाद(1940)
  - आधुनिक साहित्य(1950)
  - नया साहित्य:नये प्रश्न(1955) आदि।

डॉ. परशुराम चतुर्वेदी-

- **जन्म-**1894-1979 ई.
- **रचनाएँ-**
  - नव निबंध(1951 ई.)
  - हिन्दी काव्यधारा में प्रेम प्रवाह(1952 ई.)
  - मध्यकालीन प्रेम साधना(1952 ई.)
  - कबीर साहित्य की परख(1954 ई.) आदि।

Download Prepp APP GET IT ON Google Play

⭐ Additional Information

आचार्य रामचंद्र शुक्ल-

- "काव्य की पूर्ण अनुभूति के लिए कल्पना का व्यापार कवि और श्रोता दोनों के लिए अनिवार्य है।"

नंददुलारेवाजपेयी-

- "कला कभी अश्लील नहीं हो सकती और सौंदर्य असत्य तो हो ही नहीं सकता,वह तो चेतना की झलक है।"

हजारीप्रसादद्विवेदी-

- "जब तक हमारे सामने उद्देश्य स्पष्ट नहीं हो जाता, तब तक कोई भी कार्य, कितनी ही व्यापक शुभेच्छा के साथ क्यों न आरम्भ किया जाय, वह फलदायक नहीं होगा।"

---

7. **Answer: c**

Explanation:

'नई कहानी : संदर्भ और प्रकृति' पुस्तक के संपादक **देवीशंकर अवस्थी** हैं।

नयी कहानी : सन्दर्भ और प्रकृति-

- **प्रकाशन वर्ष-** 1966 ई.

⭐ Key Points

देवीशंकर अवस्थी-

- **जन्म-**1930-1966 ई.
- **रचनाएँ-**
  - आलोचना और आलोचना (1960)
  - रचना और आलोचना (1979)
  - आलोचना का द्वन्द्व (1999)
  - विवेक के कुछ और रंग (2002) आदि।
- **संपादित रचनाएँ-**
  - कविताएँ (1954)
  - कहानी विविधा (राजकमल प्रकाशन से 43वाँ संस्करण 2016 में)
  - विवेक के रंग (1965)
  - साहित्य विधाओं की प्रकृति (विश्व साहित्य के प्रमुख चिन्तकों-लेखकों के निबन्धों का संकलन-अनुवाद)-1981

⭐ Important Points

नामवर सिंह-

- **जन्म-**1926-2019ई.
- **आलोचनात्मक ग्रंथ-**
  - छायावाद(1955ई.)
  - इतिहास और आलोचना(1957ई.)

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- कहानी:नयी कहानी(1965ई.)
- कविता के नये प्रतिमान(1968ई.)
- दूसरी परंपरा की खोज(1982ई.) आदि।

राजेन्द्र यादव-

- **जन्म**-1929-2005ई.
- **कहानी संग्रह-**
  - देवताओं की मूर्तियाँ(1951ई.)
  - खेल खिलौने(1953ई.)
  - अभिमन्यु की आत्महत्या(1959ई.)
  - टूटना(1966ई.) आदि।

भैरवप्रसाद गुप्त-

- **जन्म** -1918-1995 ई.
- **कहानी-**
  - मुहब्बत की राहें (1945 ई.)
  - इंसान (1950 ई.)
  - सितार का तार (1951 ई.)
  - मंजिल (1951 ई.)
  - आँखों का सवाल (1965 ई.) आदि।

---

8. **Answer: d**

Explanation:

महाभारत के अंतिम अंश को आधार बनाकर लिखा गया नाटक है- **अँधा युग**

⭐ Key Points

अंधा युग-

- **रचनाकार**-धर्मवीर भारती
- **विधा**-नाटक
- **प्रकाशन वर्ष**-1954 ई.
- **विषय-**
  - यह महाभारत के 18 वें दिन पर आधारित है।
  - इसके 5 अंक है।
  - इसमें युद्ध की विभीषिका के बारे में बताया गया है।

⭐ Important Points

पहला राजा-

- **रचनाकार**-जगदीशचन्द्र माथुर
- **प्रकाशन वर्ष**-1969 ई.

Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- **विधा-**नाटक
- **विषय-**
  - इसमें प्राचीन पात्रों व प्रसंगों के माध्यम से समसामयिक समस्याओं का विश्लेषण किया गया है।
  - इस नाटक में पृथु के रूप में प्रकारांतर से नेहरू को मूर्त किया गया है।
  - इस नाटक में नेहरूयुगीन,लोकतंत्र की अनेकानेक समस्याओं को उठाया गया है।

कोणार्क-

- रचनाकार-जगदीश चन्द्र माथुर
- **प्रकाशन वर्ष-**1951ई.
- **विधा-**नाटक
- **विषय-**
  - यह भुवनेश्वर के कोणार्क जीर्ण-शीर्ण मंदिर के इतिहास पर रचित है।

शकविजय-

- **रचनाकार-** उदयशंकर भट्ट
- **विधा-** नाटक

---

9. **Answer: d**

Explanation:

"यह 'परीक्षागुरु' से भी एक वर्ष पूर्व लिखा गया, लेकिन प्रकाशित न हो पाने के कारण इसे प्रथम उपन्यास या 'परीक्षागुरु' से पूर्व लिखे जाने के श्रेय से वंचित रखा गया।" - यह उक्ति **निःसहाय हिंदू** उपन्यास से संबंधित है।

⭐ Key Points

निस्सहाय हिन्दू-

- **रचनाकार-** राधाकृष्ण दास
- **विधा-** उपन्यास
- **प्रकाशन वर्ष-** 1890 ई.
- **विषय-**
  - हिंदी का पहला पूर्ण उपन्यास है।
  - इसमें मुस्लिम समाज का अंकन हुआ है।
  - गोवध निवारण हेतु यह उपन्यास लिखा गया है।

⭐ Important Points

वामाशिक्षक-

- **रचनाकार-** ईश्वरी प्रसाद - कल्याण राय
- **विधा-** उपन्यास
- **प्रकाशन वर्ष-** 1872 ई.
- **विषय-**
  - 'ढाई गाँव के जमींदार' लाला भगवानदास के परिवार की कथा का वर्णन हैं।

Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- उपन्यास का पात्र 'मथुरादास' बल विवाह और विवाह के अवसर पर किये जाने वाले अपव्यय का विरोधी है।

भाग्यवती-

- **रचनाकार-** श्रद्धाराम फिल्लौरी
- **विधा-** उपन्यास
- **प्रकाशन वर्ष-** 1877 ई.
- **विषय-**
  - स्त्री-शिक्षा मुख्य बिंदु है।
  - मध्यवर्गीय ब्राह्मण परिवार तथा समाज की तत्कालीन जीवन दशा का चित्रण किया गया है।

---

10. **Answer: c**

Explanation:

लक्षणामूला ध्वनि का भेद है: **अर्थान्तरसंक्रमितवाच्य ध्वनि**

⭐ Key Points

अर्थान्तरसंक्रमितवाच्य ध्वनि-

- एक ऐसी स्थिति को दर्शाती है जब दो या अधिक विभिन्न ध्वनियों का अर्थान्तरात्मक या समान उच्चारण होता है, लेकिन वे वाच्य या शब्दरूप में अलग होते हैं।
- अर्थान्तरसंक्रमितवाच्य ध्वनियों के उदाहरण निम्नलिखित हैं:
  - "माता" (Mother) और "माता" (Fish)
  - "अंगूर" (Grape) और "अंगूर" (Finger)
  - "आम" (Mango) और "आम" (Common)
- इस प्रकार की ध्वनियाँ वाच्य या शब्द के संकेतार्थ को अस्पष्ट या अनिश्चित बना सकती हैं और वाक्यांश को समझने में गड़बड़ी का कारण बन सकती हैं।

Your Personal Exams Guide

⭐ Important Points

लक्षणामूला ध्वनि-

- जब किसी कथन में वाच्यार्थ कथ्य या विवक्षित नहीं होता वहाँ पर अविवक्षित वाच्य ध्वनि होती हैं।
- इसी ध्वनि को लक्षणामूला ध्वनि भी कहते हैं क्योंकि इस ध्वनि के मूल में लक्षणा शक्ति रहती हैं।
- अतः स्पष्ट है कि इस ध्वनि में मुख्यार्थ का बोध होता है और लक्षणा का प्रयोजन व्यंग्य रहता है।
- **उदाहरण-**
  - यदि कोई ये कहें कि 'हरि कुम्भकर्ण है' इस वाक्य में 'कुम्भकर्ण' शब्द में 'बहुब्रीहि' समास है।
  - जिसका अर्थ है- कुम्भ घड़े जैसे कान है। अर्थात् ऐसा व्यक्ति जो कुम्भकर्ण है अर्थात रावण का छोटा भाई।
  - अब यहाँ पर मुख्यार्थ बाध हुआ क्योंकि हरि के न तो कुम्भ जैसे कान हैं और न ही वह रावण का छोटा भाई है।
  - मुख्यार्थ बाध होने पर लक्षणा शक्ति का आश्रय लिया गया और उससे अर्थ निकला 'निद्रालु' अर्थात् हरि निद्रालु हैं।
- इसके **दो** भेद है-
  - अर्थान्तर संक्रमित वाच्य ध्वनि
  - अत्यंत तिरस्कृत वाच्य ध्वनि

⭐ Additional Information

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

ध्वनि-

- **आनन्दवर्धन** ने ध्वनि की परिभाषा इस प्रकार दी हैं-
  - "जिस रचना में वाचक विशेष और वाच्य विशेष अपने अभिधेय अर्थ को गौण बनाकर काव्यार्थ (व्यंग्यार्थ) व्यक्त करते हैं वह 'ध्वनि' कहलाती है।"
- इसके **दो** भेद है-
  - लक्षणामूला ध्वनि
  - अभिधामूला ध्वनि
- **अभिधामूला ध्वनि-** इसके भी **दो** भेद है-
  - असंलक्ष्यक्रम व्यंग्यध्वनि
  - संलक्ष्यक्रम व्यंग्यध्वनि

---

11. **Answer: c**

Explanation:

भामह ने समस्त अलंकारों का मूल **वक्रोक्ति** अलंकार को माना है।

⭐ Key Points

वक्रोक्ति अलंकार-

- जिस शब्द से कहने वाले व्यक्ति के कथन का अभिप्रेत अर्थ ग्रहण न कर श्रोता अन्य ही कल्पित या चमत्कारपूर्ण अर्थ लगाये और उसका उत्तर दे, उसे वक्रोक्ति कहते हैं।
- वक्रोक्ति अलंकार के **दो** भेद हैं-
  - श्लेष वक्रोक्ति अलंकार
  - काकु वक्रोक्ति अलंकार
- **उदाहरण-**
  - एक कबूतर देख हाथ में पूछा कहाँ अपर है ?
    कहा अपर कैसा ? वह उड़ गया सपर है॥
  - यहाँ जहाँगीर ने दूसरे कबूतर के बारे में पूछने के लिये "अपर" (दूसरा) उपयोग किया है जबकि उत्तर में नूरजहाँ ने 'अपर' का अर्थ 'अ-पर' अर्थात 'बिना पंख वाला' किया है।

⭐ Important Points

उपमा अलंकार-

- जब किन्ही दो वस्तुओं के गुण,आकृति,स्वभाव आदि में समानता दिखाई जाए या दो भिन्न वस्तुओं कि तुलना कि जाए,तब वहां उपमा अलंकर होता है।
- उपमा अलंकार में एक वस्तु या प्राणी कि तुलना दूसरी प्रसिद्ध वस्तु के साथ की जाती है।
- **उदाहरण-**
  - हरि पद कोमल कमल।
  - उदाहरण में हरि के पैरों कि तुलना कमल के फूल से की गयी है।

रूपक अलंकार-

- जब गुण की अत्यंत समानता के कारण उपमेय को ही उपमान बता दिया जाए, तब वह रूपक अलंकार कहलाता है।

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- रूपक अलंकार अर्थालंकारों में से एक है।
- **उदाहरण-**
  - पायो जी मैंने राम रतन धन पायो।
  - उदाहरण में राम रतन को ही धन बता दिया गया है।
  - 'राम रतन'- उपमेय पर 'धन'- उपमान का आरोप है।

यमक अलंकार-

- जब एक शब्द प्रयोग दो बार होता है और दोनों बार उसके अर्थ अलग-अलग होते हैं तब यमक अलंकार होता है।
- **उदाहरण-**
  - ऊँचे घोर मन्दर के अन्दर रहन वारी, ऊँचे घोर मन्दर के अन्दर रहाती हैं।

---

12. **Answer: c**

Explanation:

श्रीमती एनी बीसेंट का भारत आगमन **सन् 1893 ई.** वर्ष हुआ।

⭐ Key Points

एनी बीसेंट-

- **जन्म-** 1847-1933 ई.
- यह आध्यात्मिक, थियोसोफिस्ट, महिला अधिकारों की समर्थक, लेखक, वक्ता एवं भारत प्रेमी महिला थी।
- इनका संबंध थियोसोफिकल सोसायटी से था, यह इसकी अध्यक्ष रही है।
- इनका उद्देश्य हिंदू समाज के आई हुई विकृतियों को दूर करना था।
- वह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के समर्थक थीं और महात्मा गांधी की आश्रित थीं।
- उन्होंने गांधीजी के अध्यक्षता में चल रहे नॉन-कोऑपरेशन आंदोलन को संगठित किया और भारतीय महिलाओं को स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित किया।
- उन्होंने विभिन्न भारतीय राज्यों में स्त्री सभाओं की स्थापना की और महिलाओं के अधिकारों के लिए संघर्ष किया।

---

13. **Answer: c**

Explanation:

रामकृष्ण परमहंस चिंतक ने धर्म को शास्त्रार्थ का विषय न मानकर उसके मूल तत्व को अपने जीवन में अपनाकर विश्व को संदेश दिया।

⭐ Key Points

रामकृष्ण परमहंस-

- **जन्म** -1836-1886 ई.
- भारत के एक महान संत, आध्यात्मिक गुरु एवं विचारक थे।
- **विचार-**

Download Prepp APP
GET IT ON Google Play

- "यदि आत्मज्ञान प्राप्त करने की इच्छा रखते हो, तो पहले अहम्भाव को दूर करो। क्योंकि जब तक अहंकार दूर न होगा, अज्ञान का परदा कदापि न हटेगा।"

⭐ Important Points

स्वामी दयानंद सरस्वती-

- **जन्म-**1824-1983 ई.
- **बचपन का नाम -** मूलशंकर
- आधुनिक भारत के चिन्तक तथा आर्य समाज के संस्थापक थे।
- **प्रमुख नारा-** वेदों की ओर लौटो
- **रचना-**
  - सत्यार्थ प्रकाश आदि

केशवचंद्र सेन-

- **जन्म-**1938 - 1884 ई.
- बंगाल के हिन्दू दार्शनिक, धार्मिक उपदेशक एवं समाज सुधारक थे।
- 1856 में ब्रह्मसमाज के अंतर्गत केशवचंद्र सेन के आगमन के साथ द्रुत गति से प्रसार पानेवाले इस आध्यात्मिक आंदोलन के सबसे गतिशील अध्याय का आरंभ हुआ।
- केशवचन्द्र सेन ने ही आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती को सलाह दी की वे सत्यार्थ प्रकाश की रचना हिन्दी में करें।

राम मोहन राय-

- **जन्म-**1772 - 1833 ई.
- इन्हें भारतीय पुनर्जागरण का अग्रदूत और आधुनिक भारत का जनक कहा जाता है।
- वे ब्रह्म समाज के संस्थापक, भारतीय भाषायी प्रेस के प्रवर्तक, जनजागरण और सामाजिक सुधार आंदोलन के प्रणेता तथा बंगाल में नव-जागरण युग के पितामह थे।
- उन्होंने भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम और पत्रकारिता के कुशल संयोग से दोनों क्षेत्रों को गति प्रदान की।
- उनके आन्दोलनों ने जहाँ पत्रकारिता को चमक दी, वहीं उनकी पत्रकारिता ने आन्दोलनों को सही दिशा दिखाने का कार्य किया।

- बाल-विवाह, सती प्रथा, जातिवाद, कर्मकांड, पर्दा प्रथा आदि का उन्होंने भरपूर विरोध किया।
- राजा राममोहन राय ने 'ब्रह्ममैनिकल मैग्ज़ीन', 'संवाद कौमुदी', मिरात-उल-अखबार ,(एकेश्वरवाद का उपहार) बंगदूत जैसे स्तरीय पत्रों का संपादन-प्रकाशन किया।

---

14. Answer: b

Explanation:

"अब एक सभ्यता का सूर्य सुदूर पश्चिम से उदय हो रहा है, जिसने इस नारकीय महाजनवाद या पूँजीवाद की जड़ खोदकर फेंक दिया है।" यह कथन **प्रेमचंद** लेखक का है।

⭐

Key Points प्रेमचंद-

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- जन्म-1880-1936 ई.
- अन्य नाम- धनपत राय, नवाब राय
- प्रमुख कहानियाँ-
  - बड़े घर की बेटी(1910 ई.)
  - नमक का दरोगा(1913 ई.)
  - सौत(1915 ई.)
  - सवा सेर गेहूँ(1924 ई.)
  - पुस की रात(1930 ई.)
  - बड़े भाई साहब(1934 ई.) आदि।
- कहानी संग्रह-
  - सप्त सरोज(1917 ई.)
  - नवनिधि(1917 ई.)
  - प्रेम पूर्णिमा(1918 ई.)
  - प्रेम तीर्थ(1928 ई.)
  - कफन(1936 ई.) आदि।

⭐ Important Points

रामचंद्र शुक्ल-

- **जन्म-**1884-1941 ई.
- **आलोचनात्मक ग्रंथ-**
  - गोस्वामी तुलसीदास(1923 ई.)
  - भ्रमरगीत सार(1925 ई.)
  - काव्य में रहस्यवाद(1929 ई.)
  - रसमीमांसा(1949 ई.) आदि।

महावीर प्रसाद द्विवेदी-

- जन्म-1864-1938 ई.
- निबंध-
  - संपत्तिशास्त्र
  - रसज्ञ रंजन
  - नाट्य-शास्त्र
  - भाषा और व्याकरण
  - कवि और कविता
  - आत्मनिवेदन आदि।

श्यामसुंदर दास-

- जन्म- 1875 ई.
- श्यामसुंदर दास हिंदी के विद्वान,साहित्यकार एवं आलोचक थे।
- हिंदी नवजागरण में इनका विशेष योगदान है।
- प्रमुख रचनाएँ-(आलोचना ग्रन्थ)
  - साहित्यालोचन- 1922 ई.
  - भाषाविज्ञान -1923 ई.
  - कबीर ग्रंथावली- 1928 ई.

Download Prepp APP
GET IT ON Google Play

- हिंदी भाषा और साहित्य- 1930 ई.
- रूपकहस्य- 1931 ई.
- भाषारहस्य- 1935 ई. आदि।

⭐ Additional Information

रामचंद्र शुक्ल-

- 'कबीर ने जिस प्रकार निराकार ईश्वर के लिए भारतीय वेदान्त का पल्ला पकड़ा उसी प्रकार निराकार ईश्वर की भक्ति के लिए सूफियों का प्रेमतत्व लिया और अपना 'निर्गुण पंथ' बड़ी धूमधाम से निकाला।'

---

15. **Answer: b**

Explanation:

हिन्दी का पहला दैनिक समाचार-पत्र **समाचार सुधावर्षण** है।

⭐ Key Points

समाचार सुधावर्षण-

- **संपादक-**श्यामसुंदर सेन
- **प्रकाशन वर्ष-**1854 ई.
- यह कलकत्ता से प्रकाशित होता था।

⭐ Important Points

बनारस अखबार-

- **संपादक-**राजा शिवप्रसाद सिंह
- **प्रकाशन** -1845 ई.
- यह हिन्दी भाषी क्षेत्र में हिन्दी भाषा का प्रथम अखबार था।
- यह **साप्ताहिक** था व **बनारस** से प्रकाशित होता था।
- इसकी भाषा हिन्दी-उर्दू थी।

⭐

Additional Information भारतेन्दु युगीन पत्रिकाएं-

Prepp Your Personal Exams Guide

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

पत्रिका	वर्ष	संपादक	स्थान
कविवचन सुधा	1868ई.	भारतेन्दु हरिश्चंद्र	बनारस
सदादर्श	1874ई.	लाला श्रीनिवास दास	काशी
हिन्दी प्रदीप	1877ई.	बालकृष्ण भट्ट	प्रयाग
ब्राह्मण	1883ई.	प्रताप नारायण मिश्र	कानपुर
पीयूष प्रवाह	1884ई.	अंबिकादत्त व्यास	काशी

---

16. **Answer: b**

Explanation:

'असाध्यवीणा' कविता में प्रियवंद ने **वज्रकीर्ति**को वीणा का रचयिता मानकर याद किया है।

⭐

Key Points असाध्य वीणा-

- रचनाकार -अज्ञेय
- प्रकाशन वर्ष -1961 ई.
- यह कविता 'आंगन के पार द्वार' काव्य संग्रह में संकलित है।
- विषय-
  - यह कविता पाश्चात्य कथा को भारतीय मूल में रूपांतरित करके रचित है।
  - किरीटी नामक वृक्ष से यह वीणा बनायी गयी है।
  - दरबार के समस्त कलावंत इसे बजाने में असमर्थ है।
  - सभी की विद्या व्यर्थ हो जाती है क्योकि इस वीणा को केवल एक सच्चा साधक ही साध सकता है।
  - अन्त में इस 'असाध्य वीणा' को केशकम्बली प्रियंवद ने साधकर दिखाया।
  - जब केशकम्बली प्रियंवद ने असाध्य वीणा को बजाकर दिखाया तब उससे निकलने वाले स्वरों को राजा,रानी और प्रजाजनों ने अलग-अलग सुना।

⭐

Important Points अज्ञेय-

- जन्म-1911-1987 ई.
- तार सप्तक(1943 ई.) के प्रणेता है।
- प्रयोगवादी कवि है।
- मुख्य रचनाएँ-
  - भग्नदूत(1933 ई.)
  - चिंता(1942 ई.)
  - इत्यलम्(1946 ई.)
  - हरी घास पर क्षणभर(1949 ई.)
  - इन्द्रधनुष रौंदे हुए ये(1957 ई.) आदि।

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

★

Additional Information कविता का सार-

- असाध्य वीणा जीवन का प्रतीक है, हर व्यक्ति को अपनी भावना के अनुरूप ही उसकी स्वर लहरी प्रतीत होती है।
- कला की विशिष्टता उसके अलग-अलग सन्दर्भों में , अलग-अलग अर्थों में होती है।
- 'असाध्य वीणा' को वही साध पाता है जो सत्य को एवं स्वयं को शोधता है या वो जो परिवेश और अपने को भूलकर उसी के प्रति समर्पित हो जाता है।
- बौद्ध दर्शन में इसे 'तथता' कहा गया है जिसमे स्वयं को देकर ही सत्य को पाया जा सकता है।

---

17. **Answer: b**

Explanation:

सूरदास का पद 'आयो घोष बड़ो व्योपारी' उद्धवकी ओर संकेतित है।

"आयो घोष बड़ो ब्योपारी।
लादि खेप गुन ज्ञान - जोग की ब्रज में आय उतारी।
फाटक दै कर हाटक माँगत भोरै निपट सु धारी।"

पंक्ति का भाव:-

- गोपियाँ उद्धव के संबंध में परस्पर कह रही हैं-देखो सखियो, अहीरों की इस बस्ती में एक बहुत बड़ा व्यापारी आया है।
- इस व्यापारी ने अपने ज्ञान और योग के माल का भारी बोझ सीधे ब्रज में आकर उतारा।
- यह हम ब्रजवासियों को सर्वथा भोला-भाला जान कर फटकन (निस्सार निर्गुण) देकर हम से महार्थ स्वर्ण (कृष्ण की भक्ति और प्रेम) को माँग रहा है।

★

Key Points भ्रमगीत सार-

- **रचनाकार-** आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
- **विधा-** कविता
- **विषय-** सूरदास के पदों का संग्रह
- **पदों की संख्या-**400

★

Important Points आचार्य रामचंद्र शुक्ल-

- **जन्म-**1884 -1941 ई.
- बीसवीं शताब्दी के हिन्दी के प्रमुख साहित्यकार थे।
- **मुख्य रचनाएँ-**
  - हिन्दी साहित्य का इतिहास
  - चिंतामणि (निबन्ध)
  - हिन्दी शब्द सागर
  - नागरी प्रचारिणी पत्रिका।

Your Personal Exams Guide

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- **सम्पादित कृतियाँ-**
  - जायसी ग्रन्थावली
  - **भ्रमर गीतसार**
  - काशी नागरी प्रचारिणी पत्रिका
  - हिन्दी शब्द सागर
  - तुलसी ग्रन्थावली।

---

18. **Answer: c**

Explanation:

'शासन की बंदूक' कविता **दोहा**छन्द में है।

- 'शासन की बंदूक' कविता नागार्जुन द्वारा रचित है।

⭐ Key Points

दोहा छंद-

- दोहा अर्द्धसम मात्रिक छंद है।
- यह दो पंक्ति का होता है इसमें चार चरण माने जाते हैं।
- इसके विषम चरणों प्रथम तथा तृतीय में 13-13 मात्राएँ और सम चरणों द्वितीय तथा चतुर्थ में 11-11 मात्राएँ होती हैं।
- **उदाहरण-**
  - मुरली वाले मोहना, मुरली नेक बजाय। तेरी मुरली मन हरे, घर अँगना न सुहाय॥

⭐ Important Points

नागार्जुन-

- **जन्म-**1911-1998 ई.
- **मूल नाम-**वैद्यनाथ मिश्र
- मैथिली में **यात्री** उपनाम से लिखते थे।
- **रचनाएँ-**
  - युगधारा(1953 ई.)
  - सतरंगे पंखों वाली(1959 ई.)
  - प्यासी पथराई आँखें(1962 ई.)
  - खिचड़ी विप्लव देखा हमने(1980 ई.)
  - तुमने कहा था(1980 ई.)
  - पुरानी जूतियों का कोरस(1983 ई.) आदि।

⭐ Additional Information

सोरठा छंद-

- इस छंद में चार चरण होते हैं।
- पहले और तीसरे चरण में 11-11 मात्राएँ तथा दूसरे और चौथे चरण में 13-13 मात्राएँ होती हैं।
- चरण के अन्त में यति होती है।

Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- पहले और तीसरे चरण के अन्त में 1 लघु वर्ण अवश्य होना चाहिए
- **उदाहरण–**
  - नील सरोरुह श्याम, तरुन अरुन वारिज नयन।
    करहु सो मम उर धाम, सदा क्षीर सागर सयन ॥

बरवै छंद–

- यह मात्रिक अर्द्धसम छन्द है।
- इस छन्द के विषम चरणों (प्रथम और तृतीय) में 12 और सम चरणों (दूसरे और चौथे) में 7 मात्राएँ होती है।
- सम चरणों के अन्त में जगण या तगण आने से इस छन्द में मिठास बढ़ती है।
- यति प्रत्येक चरण के अन्त में होती है।
- **उदाहरण–**
  - वाम अंग शिव शोभित, शिवा उदार।

उल्लाला छंद–

- यह एक मात्रिक छंद होता हैं।
- इसके प्रत्येक चरण में 15 व 13 के क्रम से 28 मात्राएं होती हैं।
- इसके पहले और तीसरे चरणों में 15-15 तथा दूसरे और चौथे चरणों में 13-13 मात्राएँ होती हैं।
- **उदाहरण–**
  - हे शरणदायिनी देवि तू, करती सबका त्राण है।
    हे मातृभूमि ! संतान हम, तू जननी, तू प्राण है।।

---

19. **Answer: c**

Explanation:

'सुनी है कै नाहीं यह प्रगट कहावति जू, काहू कल्पाय है सु कै कल पाय है।'- घनानंद की इस पंक्ति में **यमक**अलंकार है।

⭐ Key Points

यमक अलंकार–

- जब एक शब्द प्रयोग दो बार होता है और दोनों बार उसके अर्थ अलग-अलग होते हैं तब यमक अलंकार होता है।
- **उदाहरण**–
  - ऊँचे घोर मन्दर के अन्दर रहन वारी, ऊँचे घोर मन्दर के अन्दर रहाती हैं।

⭐ Important Points

घनानंद–

- **जन्म**–1689-1739 ई.
- रीतिकाल की रीतिमुक्त काव्यधारा के मुख्य कवि रहे है।
- मुगल बादशाह **मुहम्मद** के मीर मुंशी थे।
- **प्रेमिका** – सुजान
- घनानंद को **'प्रेम की पीर'** का कवि कहा जाता है।
- **मुख्य रचनाएँ–**

Download Prepp APP
GET IT ON Google Play

    - वियोगवेली
    - इश्कलता
    - प्रीतिपावस
    - कृपाकंद
    - विरह लीला
    - कोकसार आदि।
- **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल–**
    - "इनकी-सी विशुद्ध, सरस और शक्तिशालिनी ब्रजभाषा लिखने में और कोई कवि समर्थ नही हुआ।"
    - "भाषा पर जैसा अचूक अधिकार इनका था वैसा और किसी कवि का नहीं।"

⭐ Additional Information

सन्देह अलंकार–

- जहाँ एक वस्तु के सम्बन्ध में अनेक वस्तुओं का सन्देह हो और समानता के कारण अनिश्चय की मनोदशा बनी रहे, वहाँ 'सन्देह' अलंकार होता है।
- **उदाहरण–**
    - कैधौं ब्योमबीथिका भरे हैं भूरि धूमकेतु,
      बीर–रस बीर तरवारि सी उघारी है।

भ्रान्तिमान अलंकार–

- जहाँ समानता के कारण एक वस्तु में किसी दूसरी वस्तु का भ्रम हो, वहाँ 'भ्रान्तिमान्' अलंकार होता है।
- **उदाहरण–**
    - पांय महावर देन को, नाइन बैठी आय।
      फिरि–फिरि जानि महावरी, एड़ी मीड़ति जाय।

श्लेष अलंकार–

- जब किसी पद में प्रयुक्त एक ही शब्द के अलग-अलग संदर्भ के अनुसार अलग-अलग अर्थ प्रयुक्त हो जाते हैं तो वहाँ श्लेष अलंकार होता है।
- श्लेष शब्द 'शिलष्+अण् (अ)' के योग से बना है।
    - जिसका शाब्दिक अर्थ होता है- 'चिपकना'
    - अर्थात् जहाँ एक ही शब्द से प्रसंगानुसार अनेक अर्थ प्रकट होते हैं, वहाँ श्लेष अलंकार होता है।
- **उदाहरण–**
    - 'को घटि ये वृषभानुजा वे हलधर के बीर।'

---

20. **Answer: d**

Explanation:

'सभी संथालों को दामुल हौज हो गया' - 'मैला आँचल' उपन्यास के इस वाक्य में 'दामुल हौज' का अर्थ है- आजीवन कारावास

⭐ Key Points

मैला आँचल–

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- **रचनाकार-** फणीश्वरनाथ रेणु
- **विधा-**उपन्यास
- **प्रकाशन वर्ष-**1954ई.
- **पात्र-**
  - डॉ. प्रशांत,कमला,बलदेव,कालीचरन,बावनदास आदि।
- **विषय-**
  - इसका कथाकाल 1946 से 1948ई. के बीच का है।
  - पूर्णिया जिले के मेरीगंज गाँव की कथा है।
  - ग्रामीण अंचल के सामाजिक,राजनीतिक और आर्थिक यथार्थ को चित्रित किया गया है।

⭐ Important Points

फणीश्वरनाथ रेणु-

- **जन्म-**1921-1977ई.
- प्रमुख आंचलिक उपन्यासकार है।
- **उपन्यास-**
  - परती परिकथा(1957ई.)
  - दीर्घतपा(1964ई.)
  - जुलूस(1965ई.)
  - कितने चौराहे(1966ई.)
  - पल्टूबाबू रोड(1979ई.) आदि।

---

21. **Answer: d**

Explanation:

जैसे-जैसे उच्चस्तरीय वर्ग में ग़बन, धोखाधड़ी, भ्रष्टाचार और वंशवाद अपनी जड़ें मजबूत करता जाता है, वैसे-वैसे यह उपन्यास और ज़्यादा प्रासंगिक होता जा रहा है।' - यह कथन **राग दरबारी** उपन्यास के लिए उसके उपन्यासकार ने पुनर्प्रकाशन की भूमिका में लिखा था।

राग दरबारी-

- **रचनाकार-**श्रीलाल शुक्ल
- **विधा-**उपन्यास
- **प्रकाशन वर्ष-**1968 ई.
- **विषय-**
  - पूर्वांचल के गाँव शिवपालगंज के आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन का यथार्थ चित्रण हुआ है।

⭐ Key Points

श्रीलाल शुक्ल-

- **जन्म-**1925-2011 ई.
- **उपन्यास-**
  - सुनी घाटी का सूरज(1957 ई.)
  - अज्ञातवास(1962 ई.)

Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- सीमाएं टूटती हैं(1973 ई.)
- पहला पड़ाव(1987 ई.)
- विश्रामपुर संत(1998 ई.) आदि।

⭐ Important Points

महाभोज-

- **रचनाकार-**मन्नू भंडारी
- **विधा-**उपन्यास
- **प्रकाशन वर्ष-**1979 ई.
- **विषय-**
  - समकालीन राजनीति में मूल्यहीनता, धन और बाहुबल की प्रवृति एवं दोहरे चरित का चित्रण है।

आखिरी कलाम-

- **रचनाकार-** जायसी
- **विधा-** काव्य
- **विषय-**
  - कयामत का वर्णन और मुगल बादशाह बाबर की प्रशंसा।

काशी का अस्सी-

- **रचनाकार-** काशीनाथ सिंह
- **विधा-** उपन्यास
- **प्रकाशन वर्ष-** 2004 ई.
- **विषय-**
  - इसमें पाँच कथाएं है और सबके मूल में 'अस्सी' है।
  - यह काशी की पृष्ठभूमि पर लिखा गया उपन्यास है।

⭐ Additional Information

मन्नू भण्डारी-

- **उपन्यास-**
  - आपका बंटी(1971 ई.)
  - स्वामी(2003 ई.) आदि।

जायसी-

- **जन्म-**1446-1542 ई.
- भक्तिकाल की सूफी काव्यधारा के मुख्य कवि है।
- **रचनाएँ-**
  - अखरावट
  - आखिरी कलाम
  - कहरनामा
  - चित्ररेखा
  - कान्हावत आदि।

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

काशीनाथ सिंह-

- **जन्म**-1937 ई.
- **उपन्यास**-
  - अपना मोर्चा (1972 ई.)
  - काशी का अस्सी (2002 ई.)
  - रेहन पर रग्घू (2008 ई.)
  - महुआ चरित (2012 ई.)
  - उपसंहार (2014 ई.)आदि।

---

22. **Answer: b**

Explanation:

"वतन की फ़िक्र कर, ज्यादा मुसीबत आने वाली है। तेरी बरबादियों के तज़करे हैं आसमानों में॥"- यह छंद **तमस** उपन्यास में आया है।

तमस-

- रचनाकार-भीष्म साहनी
- विधा-उपन्यास
- प्रकाशन वर्ष-1973 ई.
- विषय-
  - इसमें लाहौर के आस-पास के पाँच दिनों की कहानी वर्णित है।

⭐ Key Points

भीष्म साहनी-

- **जन्म**-1915-2003 ई.
- **उपन्यास**-
  - झरोखा(1967 ई.)
  - कड़ियाँ(1970 ई.)
  - बसंती(1980 ई.)
  - मय्यादास की माड़ी(1988 ई.) आदि।

⭐ Important Points

झूठा सच-

- रचनाकार-यशपाल
- विधा-उपन्यास
- विषय-
  - भारत के राष्ट्रीय व सामाजिक जीवन का चित्रण किया गया है।
  - यह **दो** भागों में प्रकाशित उपन्यास हैं- वतन और देश तथा देश का भविष्य।

जिन्दगीनामा-

- रचनाकार- कृष्णा सोबती

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- विधा- उपन्यास
- प्रकाशन वर्ष- 1979 ई.
- मुख्य पात्र- किसान, ग्रामीण
- विषय-
    - बीसवीं शताब्दी के प्रथम पन्द्रह वर्षों में **पंजाब** के किसानों-ग्रामीणों के जीवन का चित्रण है।

रागदरबारी-

- रचनाकार- श्रीलाल शुक्ल
- विधा- उपन्यास
- प्रकाशन वर्ष- 1968 ई.
- विषय-
    - रागदरबारी उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल के एक कस्बानुमा गाँव **शिवपाल गंज** की कहानी है।

⭐ Additional Information

यशपाल-

- **जन्म-**1903-1976 ई.
- **उपन्यास-**
    - दादा कामरेड(1941 ई.)
    - देशद्रोही(1943 ई.)
    - दिव्या(1945 ई.)
    - पार्टी कामरेड(1946 ई.)
    - मेरी तेरी उसकी बात(1974 ई.) आदि।

कृष्णा सोबती-

- अन्य उपन्यास-
    - डार से बिछुड़ी -1958 ई.
    - यारों के यार -1968 ई.
    - सूरजमुखी अँधेरे के -1972 ई.
    - दिलोदानिश -1993 ई.
    - समय सरगम -2000 ई. आदि।

श्रीलाल शुक्ल-

- अन्य उपन्यास-
    - सूनी घाटी का सूरज- 1957 ई.
    - अज्ञातवास - 1962 ई.
    - आदमी का ज़हर (1972 ई.
    - सीमाएँ टूटती हैं - 1973 ई.
    - पहला पड़ाव -1987 ई. आदि।

---

23. **Answer: d**

Explanation:

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

'पुरुष निसंग है, स्त्री आसक्त, पुरुष निर्द्वन्द है, स्त्री द्वन्द्वोन्मुखी, पुरुष मुक्त है, स्त्री बद्ध।'- यह कथन **महामाया भैरवी** चरित्र का है।

पूर्ण कथन है-

- "पुरुष निसंग है, स्त्री आसक्त, पुरुष निर्द्वन्द है, स्त्री द्वन्द्वोन्मुखी, पुरुष मुक्त है, स्त्री बद्ध।पुरुष स्त्री को शक्ति समझकर ही पूर्ण हो सकता है ;पर स्त्री, स्त्री को शक्ति समझकर अधूरी रह जाती है।"

⭐ Key Points

महामाया भैरवी-

- महारानी राज्यश्री की सौत

⭐ Important Points

बाणभट्ट की आत्मकथा-

- **रचनाकार-**हजारीप्रसाद द्विवेदी
- **विधा-**उपन्यास
- **प्रकाशन वर्ष-**1946ई.
- **पात्र-**
  - निपुणिका,भट्टिनी,सुचरिता,बाणभट्ट,अघोर भैरव आदि।
- **विषय-**
  - ऐतिहासिक उपन्यास है।
  - प्रेम का उदात्त स्वरूप चित्रित हुआ है।

⭐

Additional Information हजा**रीप्रसाद द्विवेदी-**

- **जन्म-**1907-1979ई.
- प्रमुख ऐतिहासिक उपन्यासकार है।
- **उपन्यास-**
  - चारुचन्द्र लेख(1963ई.)
  - पुनर्नवा(1973ई.)
  - अनामदास का पोथा(1976ई.) आदि।

---

24. Answer: c

Explanation:

उसका युवापन एक प्रतिष्ठा की जिद कहीं चुराए बैठा है। वह इस प्रतिष्ठा के आगे कभी बहुत मजबूर, कभी कमज़ोर हो जाता है और उसे भुगत भी रहा है।

उपर्युक्त कथन **पिता** कहानी से उद्धृत है।

पिता-

- **रचनाकार-** ज्ञानरंजन

Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- **विधा-** कहानी
- **पात्र-**
  - पिता, देव और कथावाचक।
- **विषय-**
  - नये-पुराने मूल्यों और संस्कारों की टकराहट का विश्लेषण किया गया है।

⭐ Key Points

ज्ञानरंजन-

- **जन्म-** 1936 ई.
- **कहानी संग्रह-**
  - फेंस के इधर और उधर(1968)
  - यात्रा(1971)
  - क्षणजीवी(1977)
  - सपना नहीं(1977) आदि।

⭐ Important Points

अपना-अपना भाग्य-

- **रचनाकार-**जैनेन्द्र
- **विधा-**कहानी
- **पात्र-**
  - लेखक, लेखक का मित्र, 10 वर्षीय बालक
- **विषय-**
  - कहानी द्वारा लेखक ने अपने-अपने व्यक्तिगत स्वार्थों से ऊपर उठकर नैतिकता, परोपकार और सामाजिक जिम्मेदारी का संदेश दिया है।
  - कहानी का बालक केवल इसलिए मृत्यु को प्राप्त हो जाता है क्योंकि कोई उसकी मदद नहीं करता।
  - यह मनोवैज्ञानिक कहानी है।

Your Personal Exams Guide

गैंग्रीन-

- **रचनाकार-**अज्ञेय
- **विधा-**कहानी
- इस कहानी को **रोज** नाम से भी जाना जाता है।
- **पात्र-**
  - मालती, डॉ. महेश्वर, टीटी आदि।
- **विषय-**
  - किसी भी प्रकार के नयेपन से रहित जीवन में व्यक्तियों के संबंधों की टूटन की कहानी है।

राजा निरबंसिया-

- **रचनाकार-** कमलेश्वर
- **प्रकाशन वर्ष-** 1957ई.
- **विधा-** कहानी
- **पात्र-**
  - जगपति, चंदा, जगपति की मां, दयाराम, बच्चन सिंह आदि।

Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- **विषय-**
  - 'राजा निरबसिया' कहानी कस्बाई जीवन पर आधारित है, जो आम आदमी की ही कथा कहती है।
  - कमलेश्वर ने दो भिन्न युगों की कहानियों को निरबंसिया कहानी आर्थिक विवशताओं, निरुपताओं द्वारा दांपत्य सम्बन्धों की समान्तर रूप से इस कहानी में रख दिया है।
  - एक ही समय में पुराने तथा आधुनिक युग की दो कहानियाँ साथ चलती हैं।

⭐ Additional Information

जैनेन्द्र-

- **जन्म-**1905-1988 ई.
- **कहानी संग्रह-**
  - फाँसी(1929 ई.)
  - वातायन(1930 ई.)
  - नीलम देश की राजकन्या(1933 ई.)
  - दो चिड़िया(1935 ई.)
  - पाजेब(1942 ई.) आदि।

अज्ञेय-

- **कहानी संग्रह-**
  - विपथगा(1937 ई.)
  - परम्परा(1940 ई.)
  - कोठरी की बात(1945 ई.)
  - अमर वल्लरी(1945 ई.) आदि।

कमलेश्वर-

- **जन्म-** 1932-2007 ई.
- **कहानियाँ-**
  - कस्बे का आदमी(1958 ई.)
  - खोयी हुई दिशाएं(1963 ई.)
  - मांस का दरिया(1966 ई.) आदि।

---

25. **Answer: d**

Explanation:

माँ के हाथ की बनी **फुलकारी** की कला को देखकर चीफ प्रसन्न हो गए।

⭐ Key Points

चीफ की दावत-

- रचनाकार- भीष्म साहनी
- विधा- कहानी
- प्रकाशन वर्ष- 1956 ई.

Download Prepp APP
GET IT ON Google Play

- **मुख्य पात्र-**
  - मिस्टर शामनाथ, उनकी पत्नी एवं विधवा बूढ़ी मां आदि।
- विषय-
  - मां के त्याग और बेटे की उपेक्षा का ताना-बाना बुनती है।
  - जो **'पहला पाठ'** कहानी संग्रह में संकलित है।

⭐ Important Points

भीष्म साहनी-

- **जन्म-** 1915-2003 ई.
- **कहानियाँ-**
  - भाग्यरेखा(1953 ई.)
  - पहला पाठ(1957 ई.)
  - भटकती राख(1966 ई.)
  - पटरियाँ(1973 ई.)
  - शोभा यात्रा(1981 ई.) आदि।

---

26. **Answer: a**

Explanation:

'तीसरी कसम' कहानी में गीत नहीं है- **'नान्हीं-नान्हीं दँतवा, पातर ठोरवा छटकै जैसन बिजलिया ______।**

⭐ Key Points

तीसरी कसम-

- **रचनाकार-** फणीश्वरनाथ रेणु
- **विधा-** कहानी
- **प्रकाशन वर्ष-** 1956 ई.
- इसका दूसरा नाम **'मारे गए गुलफाम'** है।
- यह **ठुमरी** कहानी संग्रह में संकलित है।
- **विषय-**
  - यह हीरामन और हीराबाई के बैलगाड़ी सफर के माध्यम से लोक संस्कृति उसमें निहित रस और मर्यादित निश्छल प्रेम को व्यक्त करने वाली कहानी है।
- **मुख्य पात्र-**
  - गाड़ीवान हीरामन और कंपनी की औरत हीराबाई।
- **गौण पात्र-**
  - पलटदास
  - लाल मोहर
  - लाल मोहर का नौकर लहसनवाँ
  - धुन्नीराम आदि।
- **हीरामन की 3 कसमें-**
  - चोरबाजरी का माल नही लादेगा।
  - बाँस नहीं ढोयेगा।

Prepp Your Personal Exams Guide

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- कम्पनी की औरत नहीं बैठाएगा।

⭐ Important Points

फणीश्वरनाथ रेणु-

- **जन्म-** 1921-1977 ई.
- **कहानी संग्रह-**
  - ठुमरी(1959 ई.)
  - एक आदिम रात्रि की महक(1967 ई.)
  - अग्निखोर(1973 ई.)
  - एक श्रावणी दोपहर की धूप(1984 ई.)
  - अच्छे आदमी(1986 ई.) आदि।
- **प्रमुख कहानियाँ-**
  - मारे गये गुलफाम (तीसरी कसम)
  - पंचलाइट
  - तबे एकला चलो रे
  - ठेस
  - संवदिया आदि।

---

27. **Answer: b**

Explanation:

सिद्धों और नागपंथी योगियों के चिंतन का विवेचन करते हुए यह **आचार्य रामचंद्र शुक्ल**ने कहा था कि उनकी रचनाओं का जीवन की स्वाभाविक सरणियों, अनुभूतियों और दशाओं से कोई संबंध नहीं था।

⭐

Key Points रामचन्द्र शुक्ल-

- जन्म-1884-1941 ई.
- निबंध संग्रह-
  - चिंतामणि(भाग-1)- भाव या मनोविकार, श्रद्धा-भक्ति, करूणा
    - लज्जा और ग्लानि, लोभ और प्रीति
    - ईर्ष्या, कविता क्या है?
    - काव्य मे लोकमंगल की साधनावस्थाआदि।
  - चिंतामणि(भाग-2)- काव्य में रहस्यवाद
    - काव्य में अभिव्यंजनावाद आदि।
- इनके निबंधों का संग्रह चिंतामणि,भाग-1 1939 ई. में प्रकाशित हुआ।

⭐

Important Points हजारीप्रसाद द्विवेदी-

- जन्म-1907-1979 ई.
- निबंध संग्रह-

Your Personal Exams Guide

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- अशोक के फूल(1948 ई.)
- कल्पलता(1951 ई.)
- विचार और वितर्क(1957 ई.)
- कुटज(1964 ई.)
- आलोक पर्व(1972 ई.) आदि।

नंददुलारे बाजपेयी –

- **प्रसिद्धि –** शुक्लोत्तर युग के प्रख्यात समालोचक के रूप में
- **मुख्य आलोचनात्मक कृतियाँ –**
  - जयशंकर प्रसाद (1939)
  - आधुनिक साहित्य (1950)
  - महाकवि सूरदास (1953)
  - प्रेमचंद : साहित्यिक विवेचन (1954)
  - नया साहित्य : नए प्रश्न (1955) आदि।

रामविलास शर्मा–

- **प्रसिद्धि –** आधुनिक हिंदी के महत्वपूर्ण **मार्क्सवादी समीक्षक** के रूप में।
- **पुरस्कार –**
  - 1970 में 'निराला की साहित्य साधना के लिए **साहित्य अकादमी पुरस्कार**।
  - 1991 में 'भारत के प्राचीन भाषा परिवार और हिंदी' के लिए **व्यास सम्मान**।
- **प्रमुख** आलोचनात्मक कृतियाँ –
  - निराला (1946)
  - प्रेमचंद और उनका युग (1952)
  - आचार्य रामचंद्र शुक्ल और हिंदी आलोचना (1955)
  - निराला की साहित्य साधना (तीन भाग - 1969,1972,1976)
  - नयी कविता और अस्तित्ववाद (1978) आदि।

---

28. **Answer: a**

Explanation:

"त्रस्त प्रजा की रक्षा के लिए, सतीत्व के सम्मान के लिए, देवता-ब्राह्मण और गो की मर्यादा में विश्वास के लिए, आतंक से प्रकृति को आश्वासन देने के लिए- आपको अपने अधिकार का उपयोग करना होगा।" 'स्कंदगुप्त' नाटक में यह संवाद **पर्णदत्त** द्वारा कहा गया है।

Key Points स्कंदगुप्त-

- रचनाकार- जयशंकर प्रसाद
- **प्रकाशन वर्ष–** 1928 ई.
- विधा- नाटक
- विषय-
  - भारतीय व यूरोपीय नाटकों का समन्वय किया गया है।
  - कुमारगुप्त के विलासी साम्राज्य की आंतरिक स्थिति का चित्रण किया है।

Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- पात्र-
    - स्कंदगुप्त, कुमारगुप्त, पर्णदत्त, चक्रपालित, देवकी, आनंतदेवी, देवसेना, विजया आदि।

⭐ Important Points

जयशंकर प्रसाद-

- **जन्म-** 1889 ई.
- प्रसिद्ध नाटककार है।
- **नाटक-**
    - सज्जन(1910 ई.)
    - कल्याणी परिणय(1912 ई.)
    - करुणालय(1912 ई.)
    - विशाख(1921 ई.)
    - कामना(1927 ई.) आदि।

---

29. **Answer: c**

Explanation:

'चन्द्रगुप्त' नाटक से संबंधित पात्र नहीं है- **जयमाला**

- 'जयमाला' जयशंकर प्रसाद कृत **स्कंदगुप्त** नाटक की स्त्री पात्र है।

⭐ Key Points

चन्द्रगुप्त-

- **रचनाकार**-जयशंकर प्रसाद
- **प्रकाशन वर्ष**-1931ई.
- **विषय**-
    - इसमें विदेशियों से भारत का संघर्ष और उस संघर्ष में भारत की विजय की बात उठायी गयी है।
    - चन्द्रगुप्त नाटक चाणक्य के प्रतिशोध और विश्वास की कहानी कहता है।
- **पात्र**-
    - चाणक्य, चन्द्रगुप्त, सिंहरण, दाण्ड्यायन, नन्द, वररुचि, कार्नेलिया, अलका, सुवासिनी आदि।

⭐ Important Points

जयशंकर प्रसाद-

- **जन्म**-1889-1937 ई.
- छायावादी प्रमुख स्तम्भ है।
- **काव्य संग्रह-**
    - उर्वशी(1909 ई.)
    - वन मिलन(1909 ई.)
    - कानन कुसुम(1913 ई.)
    - प्रेम पथिक(1913 ई.)

Prepp Your Personal Exams Guide

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

    - चित्राधार(1918 ई.)
    - झरना(1918 ई.)
    - आँसू(1925 ई.) आदि।
- **उपन्यास-**
    - कंकाल(1929 ई.)
    - तितली(1934 ई.)
    - इरावती(1936 ई.) आदि।
- **नाटक-**
    - सज्जन(1910 ई.)
    - कल्याणी परिणय(1912 ई.)
    - करुणालय(1912 ई.)
    - विशाख(1921 ई.)
    - अजातशत्रु(1922 ई.)
    - स्कंदगुप्त(1928 ई.)
    - ध्रुवस्वामिनी(1933 ई.) आदि।
- **निबंध-**
    - काव्य और कला तथा अन्य निबंध(1959 ई.)
    - यथार्थवाद और छायावाद
    - रहस्यवाद
    - नाटकों का आरंभ आदि।

---

30. **Answer: d**

Explanation:

"एक निर्देशक की दृष्टि से 'आधे अधूरे' मुझे समकालीन ज़िंदगी का पहला सार्थक हिंदी नाटक लगता है।" - उपर्युक्त कथन **ओम शिवपुरी**का है।

Your Personal Exams Guide

⭐ Key Points

ओम शिवपुरी-

- **जन्म-** 1938 - 1990 ई.
- हिंदी फिल्मों के एक भारतीय रंगमंच अभिनेता-निर्देशक और चरित्र अभिनेता थे।
- राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय , नई दिल्ली के पूर्व छात्र, शिवपुरी राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय रेपर्टरी कंपनी (1964) के पहले प्रमुख और इसके अभिनेताओं में से एक बने।
- बाद में उन्होंने नई दिल्ली, दिशांतर में अपने युग के एक महत्वपूर्ण थिएटर समूह की स्थापना की।

⭐ Important Points

आधे-अधूरे-

- **रचनाकार-** मोहन राकेश
- **विधा-** नाटक
- **प्रकाशन वर्ष-** 1969 ई.
- **मुख्य पात्र-**

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- सावित्री, किन्नी, बिन्नी, अशोक, महेन्द्रनाथ, जगमोहन आदि।

- **विषय-**
  - इसमें स्त्री-पुरुष संबंधों के खोखलेपन और पारिवारिक विघटन की समस्या को चित्रित किया गया है।

⭐ Additional Information

मोहन राकेश-

- **नाटक-**
  - आषाढ़ का एक दिन(1958 ई.)
  - लहरों के राजहंस(1963 ई.) आदि।

---

31. **Answer: c**

Explanation:

"ज़िंदगी स्वयं एक महान घड़ी है। प्रातः -संध्या उसकी सुइयाँ हैं। नियम-बद्ध एक-दूसरी के पीछे घूमती रहती हैं। मैं चाहती हूँ - मेरा घर भी घड़ी ही की तरह चले। हम सब उसके पुर्जे बन जाएँ और नियम-पूर्वक अपना-अपना काम करते जाएँ।" - अंजो दीदी नाटक में यह संवाद **अंजली द्वारा अनिमा को कहा गया।**

⭐ Key Points

अंजो दीदी-

- **रचनाकार-**उपेंद्र नाथ अश्क
- **विधा-**नाटक
- **प्रकाशन वर्ष-**1955 ई.
- **पात्र-**
  - अंजली / अंजो दीदी (प्रमुख पात्र, लगभग 30 वर्ष)
  - इन्द्रनारायण (अंजो के पति)
  - श्रीपत (अंजो दीदी का 27-28 वर्षीय भाई)
  - अनिमा: अंजो की सहेली
  - नीरज: अंजो का पुत्र, 11 वर्ष
  - मुन्नी: नौकरानी, 25 वर्ष
- **विषय-**
  - इस नाटक में अंजो(अंजली) के माध्यम से स्त्री-पुरुष संबंधों के साठ साथ वक्त की पाबंदी वर्णित की गई है।

⭐ Important Points

उपेन्द्रनाथ अश्क-

- **नाटक-**
  - लक्ष्मी का स्वागत(1935 ई.)
  - स्वर्ग की झलक(1940 ई.)
  - छठा बेटा(1940 ई.)
  - जय पराजय(1937 ई.) आदि।

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

32. **Answer: c**

Explanation:

"क्रोध मेरी खुराक है, लोभ मेरा नयन अंजन है और काम-भुजंग मेरा क्रीड़ा-सहचर है। इसको ही मैं क्रमशः विद्रोह, प्रगति और नवलेखन कहकर पुकारता हूँ।" उपर्युक्त कथन में निबंधकार अपने जीवन की वर्तमान अवस्था को **पूर्वफाल्गुनी नक्षत्र से** जोड़ते हैं।

⭐ Key Points

उत्तराफाल्गुनी के आस-पास-

- **रचनाकार-** कुबेरनाथ राय
- **विधा-** निबंध
- **विषय-**
  - इसमें वर्षा ऋतु के अंतिम नक्षत्र उत्तरफाल्गुनी के विषय में बताया गया है।

⭐ Important Points

कुबेरनाथ राय-

- **जन्म-**1933-1996 ई.
- **निबंध-**
  - प्रिया नीलकंठी(1968 ई.)
  - रस आखेटक(1970 ई.)
  - विषाद योग(1973 ई.)
  - निषाद बाँसुरी(1974 ई.) आदि।

33. **Answer: b**

Explanation:

"आजकल की कविता में नयापन नहीं। उसमें पुराने ज़माने की कविता की पुनरावृत्ति मात्र है। इस नक़ल में असल की पवित्रता और कुँवारेपन का अभाव है।" - उपर्युक्त कथन **मजदूरी और प्रेम** निबंध से उद्धृत है।

मजदूरी और प्रेम-

- **रचनाकार-** अध्यापक पूर्ण सिंह
- निबंध में निम्न वर्ग के लोगों के जीवन तथ्यों को उजागर किया गया है।
- **निबंध के उपशीर्षक हैं-**
  - हल चलाने वाले का जीवन
  - गड़रिये का जीवन
  - मजदूर की मजदूरी
  - मजूरी और कला आदि।

⭐ Key Points

Your Personal Exams Guide

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

सरदार पूर्ण सिंह-

- **जन्म**-1881-1931 ई.
- द्विवेदी युगीन मुख्य निबंधकार है।
- **निबंध-**
  - आचरण की सभ्यता
  - सच्ची वीरता
  - पवित्रता
  - कन्यादान
  - अमेरिका का मस्त कवि वाल्ट व्हिटमैन आदि।

⭐ Important Points

उठ जाग मुसाफिर-

- **रचनाकार-** विवेकी राय
- **विधा-** निबंध
- **विषय-**
  - इसमें गाँवों में शहरी हस्तक्षेप को दिखाया गया है।
  - गाँवों में आर्थिक विकास के कारण मूल्यों के विघटन को दर्शाया गया है।

संस्कृति और सौंदर्य-

- **रचनाकार-** नामवर सिंह
- **विधा-** निबंध
- **प्रकाशन वर्ष**-1982 ई.
- **विषय-**
  - इसमें हजारीप्रसाद द्विवेदी की सौंदर्यात्मक दृष्टि का मूल्यांकन किया गया है।

कविता क्या है-

- **रचनाकार**-रामचन्द्र शुक्ल
- **विधा**-निबंध
- **प्रकाशन वर्ष**-1909 ई.
- **मुख्य-**
  - यह चिंतामणि भगा-1 में संकलित है।
  - सर्वप्रथम सरस्वती पत्रिका में प्रकाशित हुआ था।

⭐ Additional Information

नामवर सिंह-

- **जन्म**-1926-2019 ई.
- **निबंध-**
  - बकलम खुद(1951 ई.)
  - वाद विवाद संवाद(1989 ई.) आदि।

विवेकी राय-

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- **जन्म-**1924-2016 ई.
- **निबंध-**
  - किसानों के देश(1956 ई.)
  - त्रिधारा(1958 ई.)
  - फिर बैतलवा डाल पर(1962 ई.)
  - आम रास्ता नहीं है(1988 ई.) आदि।

रामचन्द्र शुक्ल-

- **जन्म-**1884-1941 ई.
- इनके निबंधों का संग्रह चार भागों में संकलित है-
  - **चिंतामणि भाग-1** 1939 ई. में रामचन्द्र शुक्ल द्वारा ही संपादित हुआ था।
  - **चिन्तामणि भाग-2** 1945 ई. में विश्वनाथ प्रसाद मिश्र के संपादन में प्रकाशित हुआ था।
  - **चिन्तामणि भाग-3** नामवर सिंह के संपादन में 1983 ई. में प्रकाशित हुआ था।
  - **चिन्तामणि भाग-4** 2002 ई. में कुसुम चतुर्वेदी एवं ओमप्रकाश सिंह के संपादन में प्रकाशित हुआ था।

---

34. **Answer: d**

Explanation:

विवेकी राय कृत निबंध संग्रह नहीं है- **हर बारिश में**

⭐ Key Points

हर बारिश में-

- **रचनाकार-** निर्मल वर्मा
- **विधा-** यात्रा वृतांत

⭐ Important Points

विवेकी राय-

- **जन्म-**1924-2016 ई.
- **निबंध-**
  - किसानों के देश(1956 ई.)
  - त्रिधारा(1958 ई.)
  - फिर बैतलवा डाल पर(1962 ई.)
  - आम रास्ता नहीं है(1988 ई.) आदि।

⭐

Additional Informationनिर्मल वर्मा-

- जन्म-1929-2005 ई.
- कहानी संग्रह-
  - परिन्दे(1960 ई.)

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- जलती झाड़ी(1965 ई.)
- पिछली गर्मियों में(1968 ई.)
- बीच बहस में(1973 ई.)
- कव्वे और काला पानी(1983 ई.) आदि।

---

35. **Answer: d**

Explanation:

'संस्कृति और सौंदर्य' निबंध में **शिरीष के फूल** निबंध का उल्लेख नहीं है।

शिरीष के फूल-

- **रचनाकार-** हजारीप्रसाद द्विवेदी
- **विधा-** निबंध
- शिरीष के फूल' शीर्षक निबंध 'कल्पलता' से उद्धृत है।

⭐

Key Points हज़ारी प्रसाद द्विवेदी-

- जन्म-1907-1979 ई.
- हिन्दीनिबन्धकार, आलोचक और उपन्यासकार थे।
- प्रमुख रचनाएँ:-
  - अशोक के फूल (1948ई.)
  - कल्पलता (1951ई.)
  - मध्यकालीन धर्मसाधना (1952ई.)
  - विचार और वितर्क (1957ई.)
  - विचार-प्रवाह (1959ई.)
  - कुटज (1964ई.)
  - आलोक पर्व (1972ई.) आदि।

⭐ Important Points

संस्कृति और सौंदर्य-

- **रचनाकार-** नामवर सिंह
- **विधा-** निबंध
- **प्रकाशन वर्ष-**1982 ई.
- **विषय-**
  - इसमें हजारीप्रसाद द्विवेदी की सौंदर्यात्मक दृष्टि का मूल्यांकन किया गया है।

⭐ Additional Information

नामवर सिंह-

- **जन्म-**1926-2019 ई.

Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- **निबंध-**
  - बकलम खुद(1951 ई.)
  - वाद विवाद संवाद(1989 ई.) आदि।

---

36. Answer: b

Explanation:

भारतेंदु - मंडल के लेखकों की चर्चा करते हुए रामचंद्र शुक्ल निबंध के लिए **ललित गद्य** पद का प्रयोग नहीं करते।

⭐ Key Points

भारतेन्दु युग के निबंध लेखक-

- भारतेन्दु हरिश्चंद्र
- बालकृष्ण भट्ट
- लाला श्रीनिवासदासस
- बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'
- प्रतापनारायण मिश्र
- राधाचरण गोस्वामी आदि।

---

37. Answer: b

Explanation:

"भारतीय समाज में एक द्वंद्व तो कर्म और सन्यास को लेकर है, दूसरा प्रवृत्ति और निवृत्ति के बीच तथा तीसरा स्वर्ग और नरक की कल्पनाओं को लेकर।"

उपर्युक्त कथन **संस्कृति के चार अध्याय** पुस्तक में है।

संस्कृति के चार अध्याय-

- **रचनाकार-** रामधारी सिंह 'दिनकर'
- **विधा-** आलोचना
- **प्रकाशन वर्ष-** 1964 ई.
- **विषय-**
  - भारतीय इतिहास को चार खंडों मे विभाजित कर भारतीय संस्कृति को समझने का सार्थक प्रयास किया गया है।
- यह पुस्तक भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को समर्पित है।
- तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. नेहरू ने इसकी भूमिका लिखी है।

⭐ Key Points

रामधारी सिंह दिनकर-

- **जन्म-**1908-1974 ई.

Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- **निबन्ध-**
  - मिट्टी की ओर(1946 ई.)
  - अर्द्धनारीश्वर(1952 ई.)
  - रेती के फूल(1954 ई.)
  - वेणुवन(1958 ई.)
  - वट पीपल(1961 ई.) आदि।

⭐ Important Points

मेरी तिब्बत यात्रा-

- **रचनाकार-** राहुल सांकृत्यायन
- **विधा-** यात्रावृतांत
- **प्रकाशन वर्ष-**1937 ई.
- **विषय-**
  - तिब्बत यात्रा का विवरण दिया गया है।

आवारा मसीहा-

- **रचनाकार**- विष्णु प्रभाकर
- **विधा-** जीवनी
- **प्रकाशन वर्ष**- 1974ई.
- **विषय**-
  - प्रसिद्ध बांग्ला लेखक शरतचंद्र चट्टोपाध्याय की जीवनी है।
  - यह जीवन चरित्र न केवल बहुत विस्तार से उन पर प्रकाश डालता है अपितु उनके जीवन के कई अज्ञात पहलुओं को भी उजागर करता है।
- **तीन खंडों में विभक्त-**
  - प्रथम पर्व- **'दिशाहारा'**
  - द्वितीय पर्व- **'दिशा की खोज'**
  - तृतीय पर्व- **'दिशांत'**

क्या भूलूँ क्या याद करूँ-

- **रचनाकार-** हरिवंशराय बच्चन
- **विधा-** आत्मकथा
- **प्रकाशन वर्ष-** 1969 ई.
- **विषय-**
  - इसमें बच्चन सिंह के बचपन के चित्र प्रस्तुत किए गए है।

⭐

Additional Information राहुल सांकृत्यायन-

- इन्हें हिन्दी का सबसे बड़ा यायावर माना जाता है।
- यात्रावृतांत-
  - मेरी लद्दाख यात्रा(1939 ई.)
  - किन्नर देश में(1948 ई.)
  - घुमक्कड़ शास्त्र(1948 ई.)

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- यात्रा के कुछ पन्ने(1952 ई.)
- चीन में कम्यून(1959 ई.) आदि।

हरिवंशराय बच्चन-

- इन्होनें अपनी आत्मकथा **चार** भागों मे प्रकाशित की-
  - क्या भूलूँ क्या याद करूँ
  - नीड़ का निर्माण फिर(1970 ई.)
  - बसेरे से दूर(1978 ई.)
  - दशद्वार से सोपान तक(1985 ई.)

विष्णु प्रभाकर-

- **जन्म**-1912-2009ई.
- विष्णु प्रभाकर हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक थे इन्होने अनेकों लघु कथाएँ, उपन्यास, नाटक तथा यात्रा संस्मरण लिखे।
- उनकी कृतियों में देशप्रेम, राष्ट्रवाद, तथा सामाजिक विकास मुख्य भाव हैं।
- **प्रमुख रचनाएँ-(उपन्यास)**
  - ढलती रात
  - स्वप्नमयी
  - अर्धनारीश्वर
  - धरती अब भी घूम रही है
  - क्षमादान, दो मित्र
  - पाप का घड़ा
  - होरी आदि।

---

38. **Answer: b**

Explanation:

'ठकुरी बाबा' **स्मृति की रेखाएँ** संग्रह से संकलित है।

⭐ Key Points

स्मृति की रेखाएँ-

- महादेवी वर्मा के संस्मरणात्मक रेखाचित्रों का दूसरा संग्रह है - स्मृति की रेखाएँ(1943 ई.)
- इसमें कुल **सात** रेखाचित्र संकलित हैं-
  - भक्तिन
  - चीनी
  - जंगिया - धनिया
  - मुन्नू की माँ
  - ठकुरी बाबा
  - बिबिया
  - बरेठिन गुंगिया
- 1943 में प्रकाशित, द्विवेदी - पदक से सम्मानित 'स्मृति की रेखाएँ' के **सात रेखाचित्रों** में पाँच दलित वर्ग को समर्पित हैं।

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

Important Points

महादेवी वर्मा-

- **जन्म -**1907-1987 ई.
- **अन्य नाम -** आधुनिक युग की मीरा
- छायावादी मुख्य कवयित्री रही है।
- **रचनाएँ-**
  - **काव्य संग्रह -** नीहार(1930 ई.), रश्मि(1932 ई.), नीरजा(1935 ई.), सांध्यगीत(1936 ई.), यामा(1940 ई.) आदि।
  - **रेखाचित्र -** स्मृति की रेखाएँ(1943 ई.), मेरा परिवार(1972 ई.) आदि।
  - **निबन्ध संग्रह -** शृंखला की कड़ियाँ(1942 ई.), विवेचनात्मक गद्य(1942 ई.), साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध(1962 ई.), संकल्पिता(1969 ई.) आदि।
  - **ललित निबन्धों का संग्रह -** क्षणदा(1956 ई.) आदि।
  - **कहानी संग्रह -** गिल्लू, नीलकंठ आदि।

Additional Information

मेरा परिवार-

- **रचनाकार -** महादेवी वर्मा
- **विधा -** संस्मरण
- **प्रकाशन वर्ष -** 1972 ई.

पथ के साथी-

- **रचनाकार-** महादेवी वर्मा
- **विधा -** संस्मरण
- **प्रकाशन वर्ष -** 1956 ई.
- **विषय-**
  - महादेवी वर्मा ने अपने समकालीन रचनाकारों का चित्रण किया है।
  - इसमें 11 संस्मरणों का संग्रह किया गया है-
    - दद्दा (मैथिली शरण गुप्त)
    - निराला भाई
    - स्मरण प्रेमचंद
    - प्रसाद
    - सुमित्रानंदन पंत
    - सुभद्रा (कुमारी चौहान) आदि।

अतीत के चलचित्र-

- **रचनाकार-** महादेवी वर्मा
- **विधा -** रेखाचित्र
- **प्रकाशन वर्ष -** 1941 ई.
- **विषय-**
  - इसमें लेखिका हमारा परिचय रामा, भाभी, बिन्दा, सबिया, बिट्टो, बालिका माँ, घीसा, अभागी स्त्री, अलोपी, बबलू तथा अलोपा इन ग्यारह चरित्रों से करवाती हैं।

Prepp Your Personal Exams Guide

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

39. **Answer: a**

Explanation:

शरत् चंद्र ने रवीन्द्रनाथ को **व्यास** कवि के बाद भारत का सर्वोत्तम कवि घोषित किया।

⭐ Key Points

आवारा मसीहा-

- **प्रकाशन वर्ष-** 1974 ई.
- **विधा-**जीवनी
- **रचनाकार-**विष्णु प्रभाकर
- **आवारा मसीहा** प्रसिद्ध बांग्ला लेखक **शरतचंद्र चट्टोपाध्याय** की जीवनी है।

⭐ Important Points

विष्णु प्रभाकर-

- **जन्म-** 1912-2009 ई.
- विष्णु प्रभाकर हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक थे इन्होने अनेकों लघु कथाएँ, उपन्यास, नाटक तथा यात्रा संस्मरण लिखे।
- उनकी कृतियों में देशप्रेम, राष्ट्रवाद, तथा सामाजिक विकास मुख्य भाव हैं।
- **प्रमुख रचनाएँ-(उपन्यास)**
  - ढलती रात
  - स्वप्नमयी
  - अर्धनारीश्वर
  - धरती अब भी घूम रही है
  - क्षमादान, दो मित्र
  - पाप का घड़ा
  - होरी आदि।

---

40. **Answer: c**

Explanation:

'गौतम बुद्ध के लिए जो स्थान था आम्रपाली का, सम्भवतः वही थी मेरे लिए नटिनिया।'- यह कथन **तुलसीराम**का है।

⭐ Key Points

डॉ. तुलसीराम-

- **जन्म-** 1949-2015 ई.
- डॉ. तुलसीराम हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार एवं दलित चिन्तक थे।
- इनका जन्म आजमगढ़ में हुआ।
- **प्रमुख रचनाएँ-**
  - मुर्दहिया

Download Prepp APP
GET IT ON Google Play

- मणिकर्णिका आदि।

⭐ Important Points

शरत् चंद्र-

- **जन्म-** 1876-1938 ई.
- शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय बांग्ला के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार एवं लघुकथाकार थे।
- वे बांग्ला के सबसे लोकप्रिय उपन्यासकार हैं।
- उनकी अधिकांश कृतियों में गाँव के लोगों की जीवनशैली, उनके संघर्ष एवं उनके द्वारा झेले गए संकटों का वर्णन है।
- इनकी रचनाओं में तत्कालीन बंगाल के सामाजिक जीवन की झलक मिलती है।
- **प्रमुख रचनाएँ-**
  - बड़दिदि (1913 ई.)
  - बिराजबौ(1914 ई.)
  - परिणीता(1914 ई.)
  - बैकुन्ठेर उइल(1915 ई.)
  - पल्लीसमाज(1916 ई.) आदि।

हरिवंशराय बच्चन-

- जन्म- 1907-2003 ई.
- हिन्दी में हालावाद के प्रवर्तक है।
- काव्य रचनाएं-
  - मधुशाला (1935 ई.)
  - मधुबाला (1936 ई.)
  - मधुकलश (1937 ई.)
  - आत्म परिचय (1937 ई.)
  - निशा निमंत्रण (1938 ई.)
  - एकांत संगीत (1939 ई.)
  - सतरंगिनी (1945 ई.) आदि।

राहुल सांकृत्यायन-

- जन्म- 1893-1963 ई.
- यात्रा वृतांत-
  - मेरी लद्दाख यात्रा(1926 ई.)
  - तिब्बत में सवा वर्ष(1939 ई.)
  - मेरी यूरोप यात्रा(1932 ई.)
  - मेरी तिब्बत यात्रा(1934 ई.)
  - रूस में पच्चीस मास(1944-47 ई.)
  - घुमक्कड़ शास्त्र(1949 ई.)
  - चीन में कम्यून(1959 ई.) आदि।

---

41. **Answer: c**

Explanation:

Download Prepp APP GET IT ON Google Play

देवनागरी लिपि के सम्बन्ध में सही तथ्य मिलते हैं-

- B. देवनागरी की वर्णमाला का वर्णक्रम वैज्ञानिक है।
- C. नगरों में प्रचलित होने से 'देवनागरी' नाम पड़ा।
- D. गुजरात के नागर ब्राह्मणों के नाम पर 'नागरी' नाम पड़ा।

⭐ Key Points

देवनागरी लिपि-

- बाएँ से दाएँ लिखी जाती है।
- यह लिपि मूलत: वर्णाक्षरीय है, लेकिन उपयोग में यह आक्षरिक है, जिसमें प्रत्येक व्यंजन के अंत में एक लघु ध्वनि को मान लिया जाता है।
- देवनागरी को स्वर चिह्नों के बिना भी लिखा जाता रहा है।
- यह एक ध्वन्यात्मक लिपि है जो प्रचलित लिपियों (रोमन, अरबी, चीनी आदि) में सबसे अधिक वैज्ञानिक है।
- देवनागरी का विकास उत्तर भारतीय ऐतिहासिक गुप्त लिपि से हुआ, हालांकि अंतत: इसकी व्युत्पत्ति ब्राह्मी वर्णाक्षरों से हुई, जिससे सभी आधुनिक भारतीय लिपियों का जन्म हुआ है।
- अन्य विकसित भाषा-संस्कृत,अपभ्रंश,पाली, हिंदी,मराठी आदि।
- एक ऐसी लिपि है जिसमें अनेक भारतीय भाषाएँ तथा कुछ विदेशी भाषाएँ लिखीं जाती हैं।
- संस्कृत, पालि, हिन्दी, मराठी, कोंकणी, सिन्धी, कश्मीरी, नेपाली, गढ़वाली, बोडो, अंगिका, मगही, भोजपुरी, मैथिली, संथाली आदि भाषाएँ देवनागरी में लिखी जाती हैं।
- इसे **नागरी लिपि** व **हिन्दी लिपि** भी कहा जाता है।
- इसके अतिरिक्त कुछ स्थितियों में गुजराती, पंजाबी, बिष्णुपुरिया मणिपुरी, रोमन और उर्दू भाषाएं भी देवनागरी में लिखी जाती हैं।

---

42. **Answer: d**

Explanation:

अवधी और ब्रज में वैषम्य मिलता है-

- A. अवधी का संबंध पूर्वी हिंदी से है, जबकि ब्रज का संबंध पश्चिमी हिंदी से है।
- B. अवधी में ऐ, औ स्वर का उच्चारण अइ, अउ के रूप में होता है, किंतु ब्रज में ये स्वर अए, अओ के रूप में उच्चरित होते हैं।
- E. अवधी में पुल्लिंग संज्ञा पदों में 'वा' परसर्ग जुड़ने की प्रवृत्ति मिलती है, जबकि ब्रज में प्रायः ऐसा नहीं होता।

⭐

Key Points अवधी-

- **अवधी** बोली पूर्वी हिंदी के अंतर्गत आती है
- यह उत्तर प्रदेश के "**अवध क्षेत्र**" में बोली जाती है।
- '**अवध**' शब्द की व्युत्पत्ति "**अयोध्या**" से है।
- इसे 'बैसवाड़ी' भी कहा जाता है।
- यह उत्तर प्रदेश के "अवध क्षेत्र" लखनऊ, रायबरेली, सुल्तानपुर, बाराबंकी, उन्नाव, हरदोई, सीतापुर, लखीमपुर, अयोध्या, जौनपुर, प्रतापगढ़, प्रयागराज आदि में बोली जाती है।

ब्रज-

prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- ब्रज का अर्थ है- चरागाह।
- यह पश्चिमी हिंदी की उपभाषा है।
- इसका आरंभिक रूप आदिकालीन साहित्य में पिंगल तथा मध्यकाल में भाखा नाम से मिलता है।
- **उपबोलियाँ-**
  - अंतर्वेदी, भरतपुरी, माथुरी आदि।
- "मथुरा केंद्र है। दक्षिण में आगरे तक, भरतपुर, धौलपुर और करौली तक ब्रजभाषा बोली जाती है।
- ग्वालियर के पश्चिमी भागों तथा जयपुर के पूर्वी भाग तक भी यही प्रचलित है। उत्तर में इसकी सीमा गुड़गाँव के पूर्वी भाग तक पहुँचती है।
- उत्तर- पूर्व में इसकी सीमाएँ दोआब तक हैं।
- बुलंदशहर, अलीगढ़, एटा तथा गंगापार के बदाँयू, बरेली तथा नैनीताल के तराई परगने भी इसी क्षेत्र में है।

---

43. Answer: d

Explanation:

सही कथन है-

- A. 'प्रभु जी तुम चन्दन हम पानी' की रचना रैदास द्वारा की गई।
- B. कबीर परिचई में अनंतदास ने कबीर के व्यक्तित्व और जीवनी से संबंधित तथ्यों का उल्लेख किया है।
- E. दादू की समग्र रचनाओं को अंगवधू शीर्षक से संत रज्जब ने संकलित किया।

⭐ Key Points

जांभोजी-

- **जन्म**-1451-1523 ई.
- इन्हें जंभनाथ भी कहा जाता है।
- इन्होंने विश्नोई संप्रदाय की स्थापना की।
- जांभोजी का जन्म जोधपुर राज्य के नागौर इलाके के पीपासर ग्राम में सन् 1451 (वि.सं. 1508, सोमवार, भाद्रपद कृष्ण अष्टमी) को परमार वंशीय राजपूत परिवार में हुआ था।

अलख दरीबा-

- एक पंजाबी कविता है और इसका संबंध सिख संप्रदाय से है।
- यह कविता पंजाबी साहित्य का महत्वपूर्ण हिस्सा है और इसे सिख धर्म के संबंधित साहित्य में गिना जाता है।
- अलख दरीबा **गुरु गोबिंद सिंह** जी के द्वारा लिखी गई है और इसमें धार्मिक और मानवीय तत्वों पर चर्चा की गई है।

⭐ Important Points

रैदास-

- **जन्म-** 1388-1518 ई.
- **जन्म स्थान**-
  - काशी
- **गुरु**-
  - रामानंद
- **शिष्य**-

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

    - धन्ना व मीरा।
- इन्होंने भक्ति परक काव्य की रचना की।
- भक्तिकाल की संत काव्यधारा के महत्त्वपूर्ण कवि रहे है।
- इनके 40 पद गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित है।
- **पंक्तियाँ हैं-**
    - प्रभु जी तुम चंदन हम पानी। जाकी अंग-अंग बास समानी॥
      प्रभु जी तुम घन बन हम मोरा। जैसे चितवत चंद चकोरा॥
      प्रभु जी तुम दीपक हम बाती। जाकी जोति बरै दिन राती॥
      प्रभु जी तुम मोती हम धागा। जैसे सोनहिं मिलत सोहागा।
      प्रभु जी तुम स्वामी हम दासा। ऐसी भक्ति करै 'रैदासा॥

दादूदयाल-

- **जन्म**-1544-1603 ई.
- भक्तिकाल की संत काव्यधारा के कवि है।
- इन्होंने दादू पंथ की शुरुआत की।
- **रचनाएँ-**
    - हरड़े बानी
    - अंगवधू आदि।

रज्जब-

- जन्म-
- भक्तिकाल की निर्गुण काव्य परंपरा के कवि है।
- **रचनाएँ-**
    - सब्बंगी
    - रज़्जब बानी आदि।

अनंतदास-

- एक प्रमुख हिंदी कवि थे जिन्होंने 17वीं सदी में काव्य सृजन किया।
- उनका जन्म वर्तमान उत्तर प्रदेश, भारत में हुआ था।
- अनंतदास ने भारतीय धार्मिक परंपराओं, व्रत-त्योहारों, पौराणिक कथाओं और साहित्यिक विषयों के बारे में कविताएँ लिखीं।
- उनकी प्रमुख रचनाएँ "भक्तिकाल" के मानी जाती हैं और उन्होंने अपनी कविताओं में भगवान श्रीकृष्ण के लीला, राधा-कृष्ण प्रेम, और भक्ति के भाव को प्रशंसा की है।
- अनंतदास की कविताएँ अपार प्रेम, श्रद्धा और भक्ति के अद्भुत अनुभवों को व्यक्त करती हैं।
- उन्होंने हिंदी साहित्य को एक महत्वपूर्ण युगद्रष्टा के रूप में योगदान दिया है।

---

44. Answer: c

Explanation:

यात्रा वृतांत पर आधारित सही कथन हैं-

- A. मोहन राकेश कृत 'आखिरी चट्टान तक' में दक्षिण भारत के जीवन को रेखांकित किया गया है।
- B. रघुवंश की 'हरी घाटी' में राँची-हज़ारीबाग के आस-पास के प्रदेशों का चित्रण हुआ है।

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- E. निर्मल वर्मा के यात्रा वृतांत 'चीड़ों की चाँदनी' में आइसलैंड का उल्लेख मिलता है।

⭐ **Key Points**

सही है-

- गगन गिल का 'अवाक्' विश्व की कठिनतम यात्राओं में मानी जाने वाली **कैलाश मानसरोवर की यात्रा** का एक महत्वपूर्ण यात्रा वृत्तांत है।
- 'घुमक्कड़ शास्त्र' नामक पुस्तक की रचना **राहुल सांकृत्यायन** ने की।

⭐ **Important Points**

- 'आखिरी चट्टान तक' रचना का **1953 ई.** में प्रकाशन हुआ।
- 'चीड़ों की चाँदनी' रचना का प्रकाशन **1959 ई.** में हुआ।

⭐ **Additional Information**

निर्मल वर्मा-

- **जन्म-**1929-2005 ई.
- हिन्दी के आधुनिक कथाकारों में एक मूर्धन्य कथाकार और पत्रकार थे।
- **कहानी संग्रह-**
  - परिंदे (1959 ई.)
  - जलती झाड़ी (1965 ई.)
  - पिछली गर्मियों में (1968 ई.)
  - बीच बहस में (1973 ई.)
  - मेरी प्रिय कहानियाँ (1973 ई.)
- **यात्रा-संस्मरण व डायरी-**
  - चीड़ों पर चाँदनी (1963 ई.)
  - हर बारिश में (1970 ई.)
  - धुँध से उठती धुन (1977 ई.)

मोहन राकेश-

- **जन्म-**1925-1972ई.
- 'नई कहानी आन्दोलन' के साहित्यकार थे।
- **नाटक-**
  - आषाढ़ का एक दिन(1958ई.)
  - लहरों के राजहंस(1963ई.)
  - आधे-अधूरे(1969ई.) आदि।

नागार्जुन-

- **जन्म-**1911-1998 ई.
- **पुरा नाम-**वैद्यनाथ मिश्र
- **रचनाएँ-**
  - सतरंगे पंखों वाली(1959 ई.)
  - भस्मांकुर(1971 ई.)
  - खिचड़ी विप्लव देखा हमने(1980 ई.)

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- हज़ार-हज़ार बाहों वाली(1981 ई.)
- पुरानी जूतियों का कोरस(1983 ई.) आदि।

---

45. Answer: b

Explanation:

नाटक और रंगमंच से संबंधित सही तथ्य है-

- A. 'अश्क' का नाटक 'कैद' काफी मंचित हुआ, जिसके परिवर्द्धित नवीन रूप को बाद में 'लौटता हुआ दिन' के नाम से प्रस्तुत किया गया।
- B. पुराण कथा का आधुनिक उपयोग जगदीशचंद्र माथुर के 'पहला राजा' में अत्यंत सर्जनात्मक रूप में हुआ है।
- D. प्रसाद का नाटक 'ध्रुवस्वामिनी' और भुवनेश्वर का नाटक 'प्रतिभा का विवाह' एक ही वर्ष में प्रकाशित हुए।

⭐ Key Points

सही है-

- C. प्रसाद का अंतिम नाटक 'ध्रुवस्वामिनी' है।
- E. प्रसाद के नाटकों में प्रेम-संबंधों की पवित्रता एवं कोमलता तथा भुवनेश्वर में प्रेम-संबंधी मान्यताओं का सहज तिरस्कार मिलता है।

⭐ Important Points

उपेन्द्रनाथ अश्क-

- **नाटक-**
  - लक्ष्मी का स्वागत(1935 ई.)
  - स्वर्ग की झलक(1940 ई.)
  - छठा बेटा(1940 ई.)
  - जय पराजय(1937 ई.) आदि।

जयशंकर प्रसाद-

- जन्म- 1889-1937ई.
- हिन्दी के प्रसिद्ध नाटककार है।
- मुख्य नाटक-
  - सज्जन(1910ई.)
  - कल्याणी परिणय(1912ई.)
  - करुणालय(1912ई.)
  - विशाख(1921ई.)
  - कामना(1927ई.) आदि।

जगदीशचंद्र माथुर-

- **जन्म-** 1917 - 1978 ई०
- **नाटक-**
  - कोणार्क (1951)

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- शारदीया (1959)
- रघुकुल रीति (1985)
- दशरथनंदन (1974) आदि।

भुवनेश्वर प्रसाद-

- जन्म- 1910-1957ई.
- हिन्दी के प्रसिद्ध एकांकीकार, लेखक एवं कवि थे।
- कहानी संग्रह-
  - फोटोग्राफर के सामने(1945ई.)
  - कठपुतलियाँ(1942ई.) आदि।
- एकांकी-
  - श्यामा-एक वैवाहिक विडंबना(1933ई.)
  - शैतान(1934ई.)
  - प्रतिभा का विवाह(1933ई.)
  - स्ट्राइक(1938ई.) आदि।

---

46. Answer: b

Explanation:

रिपोर्ताज से सम्बंधित सही कथन हैं-

- A. अंग्रेजी शब्द 'रिपोर्ट' का समानार्थी शब्द 'रिपोर्ताज' है।
- C. इलिया एहरेनबुर्ग ने रिपोर्ताज के कुशल लेखक के रूप में सर्वाधिक प्रतिष्ठा प्राप्त की।
- D. हिंदी में रिपोर्ताज-लेखन की परंपरा शिवदान सिंह चौहान की रचना 'लक्ष्मीपुरा 'रूपाभ, दिसंबर 1938 से आरंभ हुई।

⭐ Key Points

सही है-

- B. इस रचना-विधा का प्रादुर्भाव **द्वितीय** विश्व युद्ध के समय हुआ था।
- E. बंगाल के दुर्भिक्ष तथा महामारी के संदर्भ में रांगेय राघव द्वारा '**तूफानों के बीच**' के लिए लिखित रिपोर्ताज भी अपनी मार्मिकता के लिए प्रसिद्ध है। इसका प्रकाशन 1942 ई. में हुआ।

⭐ Important Points

रिपोर्ताज-

- रिपोर्ताज गद्य-लेखन की एक विधा है।
- रिपोर्ताज फ्रांसीसी भाषा का शब्द है।
- रिपोर्ट अंग्रेजी भाषा का शब्द है।
- रिपोर्ट किसी घटना के यथातथ्य वर्णन को कहते हैं।
- विश्व में रिपोर्ताज के जनक-रूसी साहित्यकार इलिया एहरेनवर्ग है।
- द्वितीय विश्वयुद्ध के समय यूरोप के रचनाकारों ने युद्ध के मोर्चे से साहित्यिक रिपोर्ट तैयार की। इन रिपोर्टों को ही बाद में रिपोर्ताज कहा गया।

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

⭐ Additional Information

हिन्दी के कुछ रिपोर्ताज हैं-

- **लक्ष्मीपुरा-**
  - **रचनाकार-**शिवदान सिंह
  - **विधा-**रिपोर्ताज
  - **प्रकाशन वर्ष-**1938 ई.
  - रूपाभ पत्रिका में प्रकाशित हुआ था।
- **जलूस रुका है-**
  - **रचनाकार-** विवेकीराय
  - **विधा-** रिपोर्ताज
  - **प्रकाशन वर्ष-** 1977 ई.
- **फाइटर की डायरी-**
  - **रचनाकार-** मैत्रीय पुष्पा
  - **विधा-** रिपोर्ताज
- बाढ़! बाढ़!, पाँच पानी खेत में पचास पानी खलिहान में-
  - **रचनाकार-** विवेकी राय
  - **विधा-** रिपोर्ताज

---

47. **Answer: a**

Explanation:

सही कथन हैं-

- A. नयी समीक्षा काव्य के निरपेक्ष अस्तित्व को स्वीकार करती है।
- C. इलियट का मत है कि केवल अतीत ही वर्तमान के रूप को मर्यादित नहीं करता वर्तमान भी अतीत को प्रभावित करता है।
- D. इलियट के अनुसार कवि का मन असंख्य भावनाओं, पदावलियों, बिंबों के ग्रहण एवं संचयन के निमित्त एक आधान पात्र की भाँति होता है।

⭐ Key Points

सही है-

- B. नयी समीक्षा का आरम्भ **20** वीं सदी में अमेरिका में हुआ। इस नाम का सर्वप्रथम प्रयोग **स्पिनबर्न** ने किया।
- E. **इलियट** ने कविता में भावना के स्थान पर कथानक का महत्त्व स्थापित किया है।

⭐ Important Points

नयी समीक्षा-

- नयी समीक्षा 'new criticism' का अनुवाद है।
- यह 20 वीं शताब्दी के आरंभ में अमेरिका व यूरोप में विकसित हुई नयी समीक्षा आंदोलन से प्रभावित भी है।
- नयी समीक्षा शब्द का प्रथम प्रयोग स्पिनबर्न ने किया।
- इस समीक्षा के अनुसार-
  - रचना एक स्वायत्त इकाई है जिसका मूल्यांकन भाषिक एवं साहित्यिक प्रतिमानों पर ही होना चाहिए।

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- रचना निर्वैयक्तिकता के साथ रची जानी चाहिए।

- **प्रमुख आलोचक-**
  - लक्ष्मीकान्त वर्मा
  - धर्मवीर भारती
  - विजयदेव नारायण साही
  - निर्मल वर्मा
  - रमेशचंद्र शाह आदि।

⭐ Additional Information

वड्र्सवर्थ-

- **जन्म**-1770-1850 ई.
- **पूरा नाम**-विलियम वड्र्सवर्थ
- **मुख्य रचनाएँ-**
  - लिरिकल बैलेड्स(1798 ई.)
  - दप्रिल्युड(1799 ई.) आदि।

इलियट-

- **जन्म**-1888-1965 ई.
- **रचनाएँ-**
  - द सैक्रेड वुड(1920 ई.)
  - द वेस्टलैंड(1922 ई.)
  - सेलेक्टेड ऐसेज(1932 ई.)
  - ऑन पोएट्री एंड पोयट्स(1957 ई.) आदि।
- **इलियट के अनुसार-**
  - "भावनाएं जब भी कविता में निकलती हैं, तो कथानक बन जाती हैं।"

---

48. **Answer: b**

Explanation:

बिंब और प्रतीक पर आधारित सही कथन है-

- B. बिंब किसी अप्रस्तुत वस्तु का मानसिक या काल्पनिक रूप है।
- C. अर्थ की स्पष्टता के समान ही, भाव की सम्प्रेषणा एवं उत्तेजना में बिंब विधान का मुख्य हाथ रहता है।
- E. प्रतीक द्वारा प्रायः सूक्ष्म एवं विशिष्ट अनुभूतियों को सहज ग्राह्य बनाने का प्रयत्न किया जाता है।

⭐ Key Points

बिम्ब-

- बिम्ब शब्द अंग्रेजी के 'इमेज' का हिन्दी रूपान्तर है।
- इसका अर्थ है, - "मूर्त रूप प्रदान करना"।
- काव्य में कार्य के मूर्तीकरण के लिए सटीक बिम्ब योजना होती है।
- काव्य में बिम्ब को वह शब्द चित्र माना जाता है जो कल्पना द्वारा ऐन्द्रिय अनुभवों के आधार पर निर्मित होता है।

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

प्रतीक विधान-

- एक विज्ञान है जो चिह्न, प्रतीक और अर्थ के अध्ययन पर आधारित है।
- यह विज्ञान भाषा, संकेत, चिह्न, संवेदना, और सांस्कृतिक पदार्थों के रूप में विभिन्न प्रतीकों की व्याख्या करता है।
- प्रतीक-विधान विश्लेषण के माध्यम से संवेदनाओं के बीच चुनाव करने की प्रक्रिया तक पहुंचने में सहायता नहीं करता है।
- यह अध्ययन चिह्नित करने और उनके अर्थ को समझने पर ज्यादा ध्यान केंद्रित होता है, जो कि भाषा, चित्रकला, सांस्कृतिक पदार्थ और सामाजिक प्रथाओं में उपयोग होते हैं।
- इसे सामान्य रूप से संवेदनाओं के विवेकपूर्ण विश्लेषण के लिए नहीं उपयोग किया जाता है।
- चुनाव करने की प्रक्रिया, जो मानसिक, नैतिक और सामाजिक विचारों को शामिल करती है, अन्य शास्त्रों जैसे राजनीतिक विज्ञान, मनोविज्ञान, नैतिकता विज्ञान, और समाजशास्त्र के अध्ययन के अधीन होती है।

---

49. Answer: c

Explanation:

फोर्ट विलियम कॉलेज के संबंध में सत्य कथन हैं-

- A. फोर्ट विलियम कॉलेज की ओर से उर्दू-हिन्दी गद्य पुस्तकें लिखने की व्यवस्था हुई।
- C. जॉन गिलक्राइस्ट हिंदी उर्दू के अध्यापक थे।
- E. सदल मिश्र ने कॉलेज से जुड़कर खड़ी बोली गद्य के विकास में योगदान दिया।

⭐ Key Points

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के इतिहास से-

- शिक्षा-संबंधिनी पुस्तकों के प्रकाशन के लिये सवत् 1890 के लगभग आगरे में पादरियों की एक **"स्कूल-बुक-सोसाइटी"** स्थापित हुई थी जिसने 1894 में इँगलैंड के इतिहास का और संवत् 1896 में मार्शमैन साहब के "प्राचीन इतिहास" का अनुवाद "कथासार" के नाम से प्रकाशित किया।
- "कथासार" के लेखक या अनुवादक पं० रतनलाल थे।

इंजील-

- **इंजील** इस्लामी शब्दावली के अनुसार ईसा के सुसमाचार को कहा जाता है।

विलियम केरे-

- एक ब्रिटिश मिशनरी थे जो 18वीं शताब्दी में भारत जाकर काम करते थे।
- उन्होंने भाषाओं के अनुवाद के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया।
- विशेष रूप से, उन्होंने बंगाली भाषा में कार्य किया और बाइबल का अनुवाद किया।
- इसके अलावा, वह और अन्य पादरियों ने भी अपने उद्योग से भाषाओं के अनुवाद का समर्थन किया हो सकता है, जिसने लोगों को धार्मिक पाठ्यपुस्तकों और साहित्य के पहुंच में सहायता प्रदान की हो।

⭐ Important Points

फोर्ट विलियम कॉलेज-

- **कोलकाता** में स्थित प्राच्य विद्याओं एवं भाषाओं के अध्ययन का केन्द्र है।
- इसकी स्थापना **10 जुलाई सन् 1800** को तत्कालीन गवर्नर जनरल **लॉर्ड वेलेजली** ने की थी।

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- वेलेजली का मानना था कि सिविल सेवकों को स्थानीय भाषा संस्कृति आदि का ज्ञान होना चाहिये।
- फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना के बाद **हिन्दी खड़ी बोली** गद्य का विकास तीव्र गति से हुआ।
- फोर्ट विलियम कॉलेज के अध्यापक **जॉन गिलक्रिस्ट** ने सन् 1803 ई0 में देशी भाषाओं (उर्दू और हिन्दी) में गद्य पुस्तकें तैयार कराने की अलग-अलग व्यवस्था की।
- यहाँ हिंदी, **मराठी, गुजराती, तमिल** आदि देशीय भाषाओं में पुस्तकेंअनूदित होती थीं।
- हिंदी/हिंदुस्तानी विभाग के अध्यक्ष जॉन ग्रिलक्राइस्ट थे।
- उर्दू तथा भाखा (हिन्दवी) के लिये अलग मुंशी नियुक्त हुए।
- **भाखा मुंशियों** के रूप में **लल्लूलाल** व **सदल मिश्र** की नियुक्ति हुई।
- लल्लूलाल की **'प्रेमसागर'** व सदल मिश्र की **'नासिकेतोपाख्यान"** इस क्रम में प्रसिद्ध हुई।
- हिंदी को अन्य भाषाओं से भिन्न कर उसे स्थापित करने में 'प्रेमसागर'का बहुत योगदान है।
- यह खड़ी बोली में लिखी गई जिसमें **भागवत के दशम स्कन्ध की कथा** है। हालाँकि भाषा ब्रज-रंजित हो गई है।
- 'नासिकेतोपाख्यान' की भाषा व्यवहारोपयोगी है- तथा जहाँ तक हो सका, खड़ी बोली का व्यवहार किया गया।
- परंतु ब्रज व पूरबी भाषा के शब्द भी मिलते रहते हैं।

---

50. Answer: d

Explanation:

राम मोहन राय के संबंध में उपयुक्त कथन हैं-

- B. वे भारत में राष्ट्रीय पत्रकारिता के संस्थापक थे।
- C. वे ईसाई धर्म की नैतिक प्रणाली से प्रभावित थे।
- E. वे मूलतः युक्तिवादी और नैतिकतावादी धर्मानुयायी बने रहे।

⭐ Key Points

राम मोहन राय-

- राम मोहन राय एक महान समाजसेवी, सामाजिक कार्यकर्ता, धर्म सुधारक और भारतीय नवजागरण के प्रमुख आंदोलनकारी थे।
- वह 19वीं शताब्दी के प्रमुख समाजसेवी और सामाजिक सुधारक माने जाते हैं।
- उन्होंने धर्म सुधार, नारी सम्मान, शिक्षा सुधार, प्रेस स्वतंत्रता और विवाह प्रथाओं में सुधार के लिए कार्य किया।
- राम मोहन राय ने सामाजिक और धार्मिक आन्दोलनों के माध्यम से भारतीय समाज को सुधारने की योजना बनाई और उन्होंने साम्राज्यवाद, सती प्रथा और जातिवाद जैसे दुर्गम प्रथाओं के खिलाफ आवाज उठाई।
- उनकी प्रमुख रचनाएं "**तत्त्वमिमांसा**" और "**ब्रह्म समाज**" हैं।
- राम मोहन राय ने अपने धर्म और सामाजिक उद्देश्यों के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित किया और उनका कार्य महानतम समाज सुधारकों में गिना जाता है।
- राजा राममोहन राय को **स्वतंत्र पत्रकारिता का जनक** कहा गया है।
- प्रेस की स्वतंत्रता के लिए उन्होंने कठिन संघर्ष किया।
- **पत्रिका-**
  - ब्राह्मणवादी पत्रिका (1821)
  - बंगाली साप्ताहिक- संवाद कौमुदी (1821)

Download Prepp APP
GET IT ON Google Play

51. **Answer: b**

Explanation:

'सरोज स्मृति' कविता में कवि ने सरोज के लिए संबोधन प्रयुक्त किए हैं-

- A. धन्ये
- C. शुचिते
- E. गीते

⭐ Key Points

सरोज स्मृति-

- **रचनाकार-** सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
- **प्रकाशन वर्ष-**1935 ई.
- यह कविता **अनामिका**(1938 ई.) काव्य संग्रह के द्वितीय संकलन में पसंकलित है।
- यह निराला की छायावादी रचना है।
- **मुख्य-**
  - सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का एक शोक गीत है।
  - इसमें कवि ने अपनी युवा कन्या सरोज की अकाल मृत्युपर अपने शोक संतप्त हृदय के उद्गार व्यक्त किए हैं।
  - इस प्रसिद्ध लोकगीत में जीवन की पीड़ा और संघर्षों के हलाहल का पान करने वाले कविवर निराला के निजी जीवन के कुछ अंशों का उद्घाटन भी है।
  - छायावादी कवि होने के कारण निराला ने अपनी बात को प्रतीकात्मक शैली में अभिव्यक्त किया है।

⭐ Important Points

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला-

- **जीवनकाल-** 1899-1961 ई.
- **जन्मस्थान-** मेदिनीपुर
- **पहली कविता-** जुही की कली' (1916 ई.)
- आचार्य शुक्ल के अनुसार-
  - बहुवस्तुस्पर्शिनी प्रतिभा निरालाजी में है।"
- **इनके काव्य संग्रह-**
  - अनामिका (1923 ई.)
  - परिमल (1930 ई.)
  - गीतिका (1936 ई.)
  - तुलसीदास (1938 ई.)
  - कुकुरमुत्ता (1942 ई.)
  - गीतगुंज (1954 ई.)
  - सांध्यकाकली (1969 ई.)
- **प्रसिद्ध कविताएँ-**
  - जुही की कली (1916 ई.)
  - तोड़ती पत्थर
  - सरोज स्मृति (1935 ई.)

prepp Your Personal Exams Guide

prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

    - राम की शक्ति पूजा (1936 ई.)
- इनको छायावाद का **शलाका पुरुष** भी कहा जाता है।

⭐ Additional Information

सरोज स्मृति कविता की कुछ पंक्तियाँ-

- अशब्द अधरों का सुना भाष,
  मैं कवि हूँ, पाया है प्रकाश
  मैंने कुछ, अहरह रह निर्भर
  ज्योतिस्तरणा के चरणों पर।
- धन्ये, मैं पिता निरर्थक था,
  कुछ भी तेरे हित न कर सका!

---

52. **Answer: c**

Explanation:

'भारत भारती' के वर्तमान खण्ड में उपशीर्षकों का वर्णन है-

- B. कृषि और कृषक
- C. शिक्षा की अवस्था
- E. दुर्भिक्ष

⭐ Key Points

भारत-भारती-

- **प्रकाशन वर्ष- 1912** ई.
- इस रचना को पढ़ने के लिए कई लोगों ने हिन्दी भी सीखी। इसकी मूल प्रेरणा **'मुसद्दसे हाली'** से प्राप्त हुई।
- यह रचना नवजागरण की चेतना का काव्य है। कई और विद्वानों ने भी इसकी महत्ता बतायी है।
- **अज्ञेय** मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित इस काव्य के बारे में कहते हैं-
    - "भारतीयता की खोज का जैसा प्रयास भारत भारती में दिखाई देता है, वैसा किसी अन्य रचना में नहीं। भारत भारती ने जिस तरह समाज के हर वर्ग को छुआ, संवेदना के हर स्तर को झकझोरा और भावनामूलक, बौद्धिक व आध्यात्मिक सभी प्रकार के सरोकारों की पुष्टि की, वह अद्वितीय है।"
- इसकी कथा वस्तु **तीन** भागों में विभक्त हैं-
    - अतीत खंड
    - वर्तमान खंड
    - भविष्यत खंड

⭐

Important Points**मैथिलीशरण गुप्त-**

- **जन्म-1886**-1964 ई.
- द्विवेदी युगीन कवि है।
- **'रसिकेन्द्र'** नाम से ब्रजभाषा में कविताएँ लिखते थे।

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- **रचनाएँ–**
  - रंग में भंग(1909 ई.)
  - जयद्रथ वध(1910 ई.)
  - किसान(1918 ई.)
- विकट भट(1929 ई.)
- झंकार(1929 ई.)
- यशोधरा(1932 ई.)
- द्वापर(1936 ई.)
- जयभारत(1952 ई.)
- विष्णुप्रिया(1957 ई.) आदि।

---

53. Answer: d

Explanation:

'भूल गलती' कविता में ऐतिहासिक व्यक्तियों का उल्लेख हुआ है–

- C. अलग़ज़ाली
- D. इब्ने सीना
- E. अलबरूनी

⭐ Key Points

भूल गलती –

- रचनाकार - गजानन माधव मुक्तिबोध
- **कविता – संग्रह** - चाँद का मुह टेढ़ा है (1964ई.)
- **प्रमुख पंक्ति –**
  - भूल-ग़लती
    आज बैठी है ज़िरहबख़्तर पहनकर तख़्त पर दिल के,
    चमकते हैं खड़े हथियार उसके दूर तक,
    आँखें चिलकती हैं नुकीले तेज़ पत्थर-सी।
  - वह क़ैद कर लाया गया ईमान
    सुलतानी निगाहों में निगाहें डालता,
    बेख़ौफ़ नीली बिजलियों को फेंकता
    ख़ामोश।

⭐ Important Points

गजानन माधव मुक्तिबोध –

- **काव्य – कृतियाँ –**
  - चाँद का मुह टेढ़ा है (1964 ई.)
  - भूरि भूरि ख़ाक धूल (1980 ई.

Download Prepp APP
GET IT ON Google Play

54. **Answer: a**

Explanation:

'मानस का हंस' उपन्यास के पात्र हैं-

- B. अब्दुल्ला बेग
- C. मोहिनी बाई
- D. मेघा भग

⭐ Key Points

मानस का हंस -

- **उपन्यासकार -** अमृतलाल नागर
- **विधा -** उपन्यास
- **प्रकाशन वर्ष -** 1972 ई.
- **पात्र-**
  - मैना कहारिन
  - बतासो
  - रतना
  - श्यामो की बुआ
  - बाबा -तुलसीदास
  - राजा -रजिया नाम से पुकारे जाने वाला पात्र, बाबा से आयु में एक दिन छोटे
  - संत बेनीमाधव (सूकरखेत निवासी शिष्य)- पचास-पचपन वर्षीय
  - रामू द्विवेदी (काशी से आए हुए शिष्य) -बाबा के शिष्य, इकतीस वर्षीय
  - बकरीदी कक्का- बाबा से आयु में चार दिन बड़े
  - पण्डित गणपति उपाध्याय -बाबा के पुराने शिष्य, अड़सठ-उनहत्तर वर्षीय
  - बूढ़ा रमज़ानी - बकरीदी दर्ज़ी का छोटा बेटा, इकसठ-बासठ वर्षीय
  - शिवदीन दुबे, नन्हकू, मनकू- गाँव के लोग
  - हुलसिया-पंडाइन की मुँहबोली ननद
  - पंडाइन
  - पण्डित आत्माराम
  - भैरोसिंह
- **विषय -**
  - यह उपन्यास तुलसीदास के जीवन पर आधारित है।
  - इसमें तुलसी के व्यक्तित्व की विभिन्न परतों को उजागर किया गया है।
  - व्यक्तित्व के साथ-साथ इनके कृतित्व का भी उल्लेख किया गया है।

⭐ Important Points

अमृतलाल नागर-

- **जन्म -** 1916-1960 ई.
- **मुख्य उपन्यास -**
  - बूंद और समुंद्र(1956 ई.)

Prepp Your Personal Exams Guide

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- शतरंज के मोहरे(1959 ई.)
- सुहाग के नुपूर(1960 ई.)
- अमृत और विषय(1966 ई.) आदि।

- **खंजन नयन**(1981 ई.) उपन्यास **सूरदास** के जीवन पर आधारित है।

---

55. Answer: d

Explanation:

'झूठा सच' उपन्यास की स्त्री-पात्र हैं:

- B. पूरन देई
- D. शीलो
- E. बंती

⭐ Key Points

झूठा-सच-

- **रचनाकार-** यशपाल
- विधा- उपन्यास
- प्रकाशन वर्ष- 1958 ई.
- **मुख्य पात्र-**
  - तार
  - जयदेव
  - कनक
  - गिल
  - डाक्टर नाथ
  - नैयर
  - सूद जी
  - सोमराज
  - रावत
  - ईसाक
  - असद
  - प्रधान मंत्रीआदि।
- **विषय-**
  - 'वतन और देश' तथा 'देश का भविष्य' नाम से दो भागों में विभाजित इस महाकाय उपन्यास में विभाजन के समय देश में होने वाले भीषण रक्तपात एवं भीषण अव्यवस्था तथा स्वतन्त्रता के उपरान्त चारित्रिक स्खलन एवं विविध विडम्बनाओं का व्यापक फलक पर कलात्मक चित्र उकेरा गया है।
  - झूठा सच (1958-60) हिन्दी के सुप्रसिद्ध कथाकार यशपाल का सर्वोत्कृष्ट एवं वृहद्काय उपन्यास है।
  - यह उपन्यास हिन्दी साहित्य के सर्वोत्तम उपन्यासों में परिगण्य माना गया है।

⭐ Important Points

यशपाल-

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- **जन्म**–1903-1977ई.
- यशपाल हिन्दी साहित्य के प्रेमचंदोत्तर युगीन कथाकार हैं।
- **प्रमुख रचनाएँ –**
  - दादा कामरेड(1941 ई.)
  - देशद्रोही(1943 ई.)
  - दिव्या(1945 ई.)
  - पार्टी कामरेड(1946 ई.) आदि।

---

56. Answer: d

Explanation:

'आपका बंटी' उपन्यास के बाल-पात्र हैं:

- B. जोत
- C. अमी
- D. टीटू

⭐ Key Points

आपका बंटी–

- रचनाकार-मन्नू भंडारी
- विधा-उपन्यास
- प्रकाशन वर्ष-1971 ई.
- पात्र-
  - बंटी (शकुन और अजय का बेटा)
  - शकुन (अजय की पत्नी और कॉलेज की प्रिंसिपल)
  - अजय (बंटी का पिता)
  - वकील चाचा
  - फूफी
  - डॉ. जोशी
  - अमी और जोत(डॉ. जोशी के बच्चे)
  - मीरा आदि।
- विषय-
  - बाल मनोविज्ञान का उपन्यास है।
  - तलाक शुदा दंपति का उसकी संतान पर पड़े प्रभाव का चित्रण किया गया है।

⭐ Important Points

मन्नू भंडारी–

- **उपन्यास**–
  - महाभोज(1979 ई.)
  - स्वामी(2003 ई.) आदि।

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

57. **Answer: b**

Explanation:

'इंस्पेक्टर मातादीन चाँद पर' के संदर्भ में सही विचार है-

- B. मातादीन को, चाँद से एड़ी चमकाने का पत्थर लाने का आदेश प्राप्त हुआ।
- C. मातादीन ने कहा - 'हमारा सिद्धांत है : हमें पैसा नहीं काम प्यारा है।'
- D. चाँद पर मातादीन का सार्वजनिक अभिनंदन हुआ।

⭐ Key Points

- A. मातादीन चाँद पर चाँद की पुलिस को शिक्षित करने गए थे।
- E. मातादीन ने चाँद की पुलिस की तनख्वाह कम कर दी।

⭐ Important Points

इंस्पेक्टर मातादीन चांद पर

- **रचनाकार-** हरिशंकर परसाई
- **विधा-** व्यंग्य कहानी
- यह कहानी परसाई के कहानी संग्रह 'ठिठुरता हुआ गणतंत्र' में शामिल है।
- पात्र-
  - मातादीन
  - सचिव
  - पुलिस मंत्री
  - अब्दुल गफ़ूर
  - बलभद्दर
  - यान चालक आदि।
- **विषय-**
  - इस कहानी में परसाई जी भारतीय पुलिस व्यवस्था तथा उसमें व्याप्त भ्रष्टाचार पर व्यंग्य करते किया है।

⭐ Additional Information

हरिशंकर परसाई-

- **जन्म-**1924-1995 ई.
- हरिशंकर परसाई हिंदी के प्रसिद्ध लेखक और व्यंगकार थे।
- **प्रमुख रचनाएँ-**
  - हँसते हैं रोते हैं
  - जैसे उनके दिन फिरे
  - भोलाराम का जीव आदि।
- **निबंध - संग्रह -**
  - पगडंडियों का जमाना(1966ई0)
  - जैसे उनके दिन फिरे(1963ई0)
  - सदाचार की ताबीज (1967ई0)
  - शिकायत मुझे भी है(1970ई0)

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- ठिठुरता हुआ गणतंत्र(1970ई0)
- अपनी-अपनी बीमारी (1972ई0)
- वैष्णव की फिसलन(1967 ई0)
- विकलांग श्रद्धा का दौर(1980ई0)
- भूत के पाँव पीछे
- बेईमानी की परत
- तुलसीदास चंदन घिसें(1986ई0)
- कहत कबीर(1987ई0)
- हँसते हैं रोते हैं
- तब की बात और थी
- ऐसा भी सोचा जाता है(1993ई0)
- आवारा भीड़ के खतरे(1998ई0)
- प्रेमचंद के फटे जूते आदि।

---

58. Answer: c

Explanation:

सही कथन है-

- B. 'एक टोकरी भर मिट्टी' कहानी में एक असहाय विधवा के स्वाभिमान को अभिव्यक्ति मिली है।
- C. 'दुलाईवाली' कहानी पर्दा प्रथा की विसंगति पर आधारित है।
- E. 'कानों में कंगना' तत्कालीन सामंती परिवेश में पत्नी और वेश्या के प्रति प्रेम की टकराहट पर आधारित एक भावुकतापूर्ण कहानी है।

⭐ Key Points

एक टोकरी भर मिट्टी-

- **रचनाकार-** माधवराव सप्रे
- **प्रकाशन वर्ष-** 1901 ई.
- **विधा-** कहानी
- **पात्र-**
  - जमींदार, अनाथ विधवा।
- **विषय-**
  - यह एक बहुत ही छोटी और कर्तव्य श्रेष्ठ कहानी है।
  - यह कहानी आज के यथार्थ से जुड़ी हुई है।
  - यह कहानी वर्ग भेद पर आधारित है। इसमें एक गरीब के शोषण का चित्रण है।
  - इस कहानी में अहंकार और स्वार्थ का चित्रण जमींदार के रूप में किया गया है।
  - एक गरीब बुजुर्ग महिला द्वारा जमींदार का हृदय परिवर्तन होना दिखाया गया है।

कानों में कंगना-

- रचनाकार- राधिकारमण प्रसाद सिंह
- विधा- कहानी
- प्रकाशन वर्ष- 1931 ई.

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- पात्र-
  - नरेंद्र, किरण, योगीश्वर आदि।
- विषय-
  - नरेंद्र का किरण से प्रेम, विवाह और प्रेम विमुख हो किन्नरी के प्रेम में पड़कर सब कुछ लुटाने की कहानी है।
  - अंतः में नरेंद्र द्वारा प्रयश्चित दिखाया गया है परंतु तब तक किरण अपने प्राण त्याग चुकी थी।

अपना-अपना भाग्य-

- **रचनाकार-** जैनेन्द्र
- **विधा-** कहानी
- **पात्र-**
  - लेखक, लेखक का मित्र, 10 वर्षीय बालक
- **विषय-**
  - कहानी द्वारा लेखक ने अपने-अपने व्यक्तिगत स्वार्थों से ऊपर उठकर नैतिकता, परोपकार और सामाजिक जिम्मेदारी का संदेश दिया है।
  - कहानी का बालक केवल इसलिए मृत्यु को प्राप्त हो जाता है क्योंकि कोई उसकी मदद नहीं करता।
  - यह मनोवैज्ञानिक कहानी है।

राही-

- रचनाकार- सुभद्रा कुमारी चौहान
- विधा- कहानी
- पात्र-
  - राही, अनीता आदि।
- विषय-
  - जेल का परिवेश है।
  - गरीबी के कारण विवश माँ द्वारा चोरी करने पर जेल की सजा का वर्णन है।
  - गरीबों की सेवा हि वास्तविक देशभक्ति है यह संदेश चित्रित किया गया है।

दुलाईवाली-

- **रचनाकार-** बंग महिला
- **विधा-** कहानी
- **प्रकाशन वर्ष-** 1907 ई.
- **पात्र-**
  - बंशीधर, जानकी देई, नकल किशोर आदि।
- **विषय-**
  - दो मित्रों का द्वारा किए गए मजाक का चित्रण किया गया है।

⭐ Important Points

माधवराव सप्रे-

- **जन्म-**1871-1926 ई.
- प्रेमचंद पूर्व युग के कहानीकार है।
- **रचनाएँ-**
  - स्वदेशी आंदोलन और बॉयकाट
  - यूरोप के इतिहास से सीखने योग्य बातें

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- हमारे सामाजिक ह्रास के कुछ कारणों का विचार
- माधवराव सप्रे की कहानियाँ (संपादन : देवी प्रसाद वर्मा) आदि।

राधिकारमण प्रसाद सिंह-

- **कहानियाँ-**
  - गांधी टोपी(1938 ई.)
  - कुसुमांजलि
  - सावनी समाँ आदि।

सुभद्राकुमारी चौहान-

- कहानियाँ-
  - बिखरे मोती(1932 ई.)
  - उन्मादिनी(1934 ई.) आदि।

जैनेन्द्र-

- **जन्म**-1905-1988 ई.
- **कहानी संग्रह-**
  - फाँसी(1929 ई.)
  - वातायन(1930 ई.)
  - नीलम देश की राजकन्या(1933 ई.)
  - दो चिड़िया(1935 ई.)
  - पाजेब(1942 ई.) आदि।

राजेन्द्रबाला घोष-

- **जन्म**-1882-1951 ई.
- **छद्मनाम**-बंग महिला
- **कहानियाँ-**
  - चंद्रदेव से मेरी बातें(1904 ई.)
  - कुंभ में छोटी बहू(1906 ई.)
  - दालिया(1909 ई.) आदि।

---

59. Answer: a

Explanation:

'अंधेर नगरी' नाटक के सम्बंध में निम्नलिखित पर विचार कीजिए-

- A. महंत जी, गोबरधनदास और नारायणदास के गुरु हैं।
- C. 'अंधेर नगरी' का प्रकाशन सन् 1881 ई. में हुआ।
- D. इसके तीसरे अंक का 'स्थान' 'जंगल' है।

⭐ Key Points

अंधेर नगरी-

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- **रचनाकार-** भारतेन्दु
- **विधा-** नाटक
- **प्रकाशन वर्ष-** 1881ई.
- **मुख्य पात्र-**
  - महंत
  - नारायणदास
  - गोवर्धनदास
  - राजा आदि।
- **विषय-**
  - 6 अंकों का प्रहसन है।
  - अंकों की जगह दृश्य शब्द का प्रयोग किया गया है।
  - तत्कालीन समय मे सत्ता की विसंगतियों,मूर्खताओं और उससे उत्पन्न परिस्थितियों का व्यंग्यात्मक चित्रण है।
- **अंक हैं-**
  - बाह्य प्रांत
  - बाजार
  - जंगल
  - राजसभा
  - अरण्य
  - श्मशान

⭐ Important Points

भारतेन्दु हरिश्चंद्र-

- जन्म-1850-1885ई.
- हिन्दी के प्रमुख नाटककार के रूप में विख्यात है।
- मौलिक नाटक-
  - वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति(1873ई.)
  - चंद्रावली(1876ई.)
  - नील देवी(1881ई.)
  - सती प्रताप(1883ई.) आदि।
- **अनूदित नाटक-**
  - रत्नावली(1868ई.)
  - विद्यासुंदर(1868ई.)
  - पाखंड विडंबन(1872ई.)
  - धनंजय विजय(1873ई.)
  - मुद्रा राक्षस(1878ई.) आदि।

---

60. **Answer: d**

Explanation:

'भारत दुर्दशा' नाटक के संबंध में सही बातें हैं-

- B. 'भारत दुर्दशा' नाटक का प्रकाशन सन् 1880 ई. में हुआ।

Download Prepp APP
GET IT ON Google Play

- D. 'जागो जागो रे भाई' गीत को राग चैती गोरी में प्रस्तुत करने का निर्देश नाटककार द्वारा दिया गया है।
- E. 'भारत दुर्दशा' नाटक को भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने 'नाट्यरासक' की संज्ञा दी है।

⭐ Key Points

सही है-

- A. 'भारत के भुजबल जग रक्षित। भारत विद्या लहि जग सिच्छित' - यह पँक्ति नाटक के **छठा** अंक की है।
- C. इसके पाँचवे अंक का स्थान ' **किताबखाना**' है।

⭐

Important Points भारत दुर्दशा-

- रचनाकार- भारतेन्दु
- विधा- नाटक
- प्रकाशन वर्ष- 1880ई.
- पात्र-
  - भारत भाग्य,भारत दुर्दैव,अंधकार,डिसलॉयल्टी,मदिरा,रिपोर्टर,आलस्य आदि।
- विषय-
  - 6 अंकों का नाट्य रासक है।
  - भारत की दुर्दशा को चित्रित किया गया है।
  - अंग्रेजी शासन व्यवस्था पर व्यंग किया गया है।
  - मनोभावों का मानवीकरण किया गया है।

⭐ Additional Information

भारतेन्दु हरिश्चंद्र-

- जन्म- 1850-1885ई.
- हिन्दी के प्रमुख नाटककार के रूप में विख्यात है।
- मौलिक नाटक-
  - वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति(1873ई.)
  - चंद्रावली(1876ई.)
  - नील देवी(1881ई.)
  - सती प्रताप(1883ई.) आदि।
- **अनूदित नाटक-**
  - रत्नावली(1868ई.)
  - विद्यासुंदर(1868ई.)
  - पाखंड विडंबन(1872ई.)
  - धनंजय विजय(1873ई.)
  - मुद्रा राक्षस(1878ई.) आदि।

---

61. **Answer: a**

Explanation:

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

'अंधायुग' के संबंध में सही कथन हैं-

- A. इसमें युद्ध से उत्पन्न होने वाली मूल्यहीनता, अमानवीयता, विकृति, कुंठा, वैयक्तिक एवं सामूहिक विघटन का सजीव चित्र प्रस्तुत किया गया है।
- C. इस नाटक पर इलियट के वेस्टलैंड का प्रभाव माना गया है।
- E. 'अंधायुग' के किसी भी पात्र का चरित्र नितांत उज्वल और निर्मल नहीं है।

⭐ Important Points

अंधायुग-

- **रचनाकार**- धर्मवीर भारती
- **विधा**- नाटक
- **प्रकाशन वर्ष**- 1954ई.
- **विषय**-
  - युद्ध उपरांत होने वाली भीषण विभीषिका को दर्शाया गया है तथा महाभारत के युद्ध के अंतिम की कथा पर आधारित है।
- **अंक**-5
  - कौरव नगरी
  - पशु का उदय
  - अश्वत्थामा का अर्द्धसत्य
  - गांधारी का श्राप
  - विजय:एक क्रमिक आत्महत्या
- **पात्र**-
  - अश्वत्थामा, गान्धारी, धृतराष्ट्र, कृतवर्मा, संजय, वृद्ध याचक, प्रहरी-1, व्यास, विदुर, युधिष्ठिर, कृपाचार्य, युयुत्सु आदि।

⭐ Additional Information

कौरव नगरी-

- "है कुरुक्षेत्र से कुछ भी खबर न आयी जीता या हरा बचा खुचा कौरव दल जाने किसकी लोथों पर जा उतरेगा वः नरभक्षी गिद्धों का भूखा बादल अंत:पुर में मरघट की सी ख़ामोशी कृश गांधारी बैठी है शीश झुकाये सिंहासन पर धृतराष्ट्र मौन बैठे हैं संजय अब तक कुछ भी संवाद न लाये।"

पशु का उदय-

- "आज इस पराजय की बेला में,सिद्ध हुआ,झूठी थी सारी अनिवार्यता भविष्य की,केवल कर्म सत्य है मानव जो करता है, इसी समय,उसी में निहित है भविष्य,युग युग तक का।"

गांधारी का श्राप-

- "और जब पुत्र वः पराक्रमी यशस्वी है संजय चलो,व्ही रहने दो युयुत्सु को पुत्र कहीं छिप जाओ,प्राण बचाओ,अब तुम ही आश्रय,अपने अंधे पिता,वृद्ध माता के"

प्रभु की मृत्यु-

- "तुम जो हो शब्द ब्रह्म,अर्थों के परम अर्थ,जिसका आश्रय पाकर वाणी होती है व्यर्थ,है तुम्हें नमन हैं,उन्हें नमन करते आये हैं जो निर्मल मन सदियों से लजीला का गायन"

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

62. **Answer: a**

Explanation:

'नाख़ून क्यों बढ़ते हैं' निबंध से सम्बद्ध सही कथन हैं-

- A. कुछ लाख ही वर्षों की बात है, जब मनुष्य जंगली था, वनमानुष जैसा। उसे नाख़ून की जरूरत थी।
- B. मनुष्य के नाखूनों की ओर देखता हूँ, तो कभी-कभी निराश हो जाता हूँ। यह उसकी भयंकर पाशवी वृत्ति के जीवन प्रतीक हैं।
- D. समस्त अधोगामिनी वृत्तियों की ओर नीचे खींचनेवाली वस्तुओं को भारतवर्ष ने मनुष्योचित बनाया है, यह बात चाहूँ भी तो नहीं भूल सकता।

⭐ Key Points

नाखून क्यों बढ़ते हैं-

- **रचनाकार**-हजारीप्रसाद द्विवेदी
- **विधा**-निबन्ध
- **प्रकाशन वर्ष**-1951 ई.
- यह निबन्ध '**कल्पलता**' निबन्ध संग्रह में संकलित है।
- **विषय-**
  - प्रसिद्ध ललित निबन्ध है।
  - इस निबन्ध में मनुष्य की दुर्बलताओं के साथ-साथ उनकी शक्ति और रचनाशीलता को दिखाया गया है।
  - प्रतीकात्मक निबन्ध है।

⭐ Important Points

हजारीप्रसाद द्विवेदी-

- **जन्म**-1907-1979 ई.
- **अन्य निबन्ध-**
  - अशोक के फूल(1948 ई.)
  - कल्पलता(1951 ई.)
  - विचार और वितर्क(1957 ई.)
  - कुटज(1964 ई.)
  - आलोक पर्व(1972 ई.) आदि।

⭐ Additional Information

नाख़ून क्यों बढ़ते है-

- **"नाखून का बढ**ना मनुष्य के भीतर की पशुता की निशानी है और उसे नहीं बढने देना मनुष्य की अपनी इच्छा है,अपना आदर्श है।"

---

63. **Answer: d**

Explanation:

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' के सन्दर्भ में सही कथन है-

- B. ठाकुर यादवेंद्र सिंह के कहानी संग्रह 'हार' से हरिवंशराय बच्चन ने अपने प्रथम काव्य संग्रह के नाम के लिए प्रेरणा ली थी।
- D. बाबू केदारनाथ अग्रवाल ने बच्चन जी को 35 रूपये प्रतिमास पर स्कूल में हिन्दी अध्यापक के रूप में नियुक्त किया।
- E. यूनिवर्सिटी में बच्चन जी के सहकक्षियों में अवध बिहारी लाल, प्रकाशचन्द्र गुप्त और ब्रजलाल गुप्त थे।

⭐ Key Points

क्या भूलूँ क्या याद करूँ-

- **रचनाकार**-हरिवंश राय बच्चन
- **विधा**-आत्मकथा
- **प्रकाशन वर्ष**-1969 ई.

हरिवंशराय बच्चन-

⭐ Important Points

- जन्म-1907-2003 ई.
- हिन्दी में हालावाद के प्रवर्तक है।
- प्रेम व मस्ती के कवि है।
- हिन्दी का 'बायरन' कहा जाता है।
- आत्मकथा-
  - भाग-1: क्या भूलूँ क्या याद करूँ(1969 ई.)
  - भाग-2: नीड़ का निर्माण फिर(1970 ई.)
  - भाग-3: बसेरे से दूर(1978 ई.)
  - भाग-4: दशद्वार से सोपान तक(1985 ई.)
- अन्य रचनाएँ-
  - मधुशाला(1935 ई.)
  - मधुबाला(1936 ई.)
  - मधुकलश(1937 ई.)
  - निशा निमंत्रण(1938 ई.)
  - सतरंगिनी(1945 ई.) आदि।

⭐ Additional Information

- **धर्मवीर भारती** ने इसे हिन्दी के हज़ार वर्षों के इतिहास में ऐसी पहली घटना बताया जब अपने बारे में सब कुछ इतनी बेबाकी, साहस और सद्भावना से कह दिया है।
- **डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी** के अनुसार- इसमें केवल बच्चन जी का परिवार और उनका व्यक्तित्व ही नहीं उभरा है, बल्कि उनके साथ समूचा काल और क्षेत्र भी अधिक गहरे रंगों में उभरा है।

---

64. **Answer: b**

Explanation:

'स्मृति की रेखाएं' के सन्दर्भ में सही कथन है-

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- A. इस पुस्तक के सभी पात्र महादेवी जी के जीवन से सम्बंधित रहे हैं।
- C. इस पुस्तक के सभी पात्र समाज के निम्न वर्गों से सम्बंधित हैं।
- E. इस पुस्तक में यथार्थ से ज्यादा मानवीयता पर बल दिया गया है।

⭐ Key Points

स्मृति की रेखाएं-

- **विधा-**रेखाचित्र
- **रचनाकार-**महादेवी वर्मा
- **प्रकाशन वर्ष-**1943 ई.
- **विषय-**
  - यह संस्मरणात्मक-रेखाचित्र है।
  - इसमें महादेवी वर्मा ने 12 लोगों के बारे में विभिन्न अनुभव सांझा किए है।
  - भक्तिन, ठकुरी बाबा, मुन्नू, गुँगिया आदि चरित्र है।

⭐

Important Points महादेवी वर्मा -

- जन्म-1907-1987 ई.
- छायावाद की प्रसिद्ध कवियित्री है।
- 'यामा' काव्य कृति के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त है।
- उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान का भारत भारती पुरस्कार भी इन्हें मिला है।
- कविता संग्रह -
  - निहार (1930 ई.)
  - रश्मि (1932 ई.)
  - सांध्यगीत (1936 ई.)
  - दीपशिखा (1942 ई.)
  - प्रथम आयाम (1974 ई.)
  - अग्निरेखा (1990 ई.)
- रेखाचित्र -
  - अतीत के चलचित्र (1941 ई.)
  - मेरा परिवार
- संस्मरण -
  - पथ के साथी (1956 ई.)
- निबंध-
  - श्रृंखला की कड़ियाँ(1942 ई.)
  - विवेचनात्मक गद्य (1942 ई.)
  - साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध (1962 ई.)
  - संकल्पिता (1969 ई.)
- कहानी -
  - बिन्दा
  - गिल्लू

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

65. **Answer: a**

Explanation:

'भोलाराम का जीव' के संदर्भ में **सही** कथनों पर विचार है-

- B. इसमें पौराणिक कथा को आधार बनाकर व्यंग्य की निर्मिति की गई है।
- C. इसमें सरकारी कार्यालयों में पनप रहे भ्रष्टाचार का मार्मिक चित्रण है।
- E. इसमें लालफीताशाही की अमानवीयता का चित्रण है।

⭐

Key Points**भोलाराम का जीव-**

- रचनाकार-हरिशंकर परसाई
- **प्रकाशन वर्ष-**1967ई.
- **विधा-**व्यंग्य
- **विषय-**
  - भोलाराम का जीव का मुख्य विषय-भ्रष्टाचार है।
  - जिससे हममें से अधिकांश को कभी न कभी किसी न किसी रूप में जूझना ही पड़ता है।
  - यह भ्रष्टाचार किसी एक स्तर पर नहीं, पूरी की पूरी व्यवस्था में व्याप्त है।
  - चपरासी से लेकर बड़े-बड़े अफसर तक इसमें लिप्त हैं।

⭐ Important Points

हरिशंकर परसाई-

- **जन्म-**1924-1995 ई.
- हिंदी के प्रसिद्ध लेखक और व्यंगकार थे।
- वे हिंदी के पहले रचनाकार हैं जिन्होंने व्यंग्य को विधा का दर्जा दिलाया और उसे हल्के-फुल्के मनोरंजन की परंपरागत परिधि से उबारकर समाज के व्यापक प्रश्नों से जोड़ा।
- **प्रमुख रचनाएँ-**
  - जैसे उनके दिन फिरे(1963 ई.)
  - पगडंडियों का जमाना(1966 ई.)
  - वैष्णव की फिसलन(1967 ई.)
  - सदाचार की ताबीज(1967 ई.)
  - शिकायत मुझे भी है(1970 ई.)
  - ठिठुरता हुआ गणतंत्र(1970 ई.)
  - अपनी-अपनी बीमारी(1972 ई.)
  - विकलांग श्रद्धा का दौर(1980 ई.) आदि।

---

66. **Answer: d**

Explanation:

Download Prepp APP GET IT ON Google Play

सूची -I का सूची - II से **सही** सुमेलन है-

सूची - I	**सूची - II**
उच्चारण - स्थान के आधार पर नाम	**व्यंजन ध्वनियाँ**
तालव्य	च्, छ्, ज्, झ्
मूर्धन्य	ट्, ठ्, ड्, ढ्
कण्ठय	क, ख्, ग्, घ्
वर्त्स्य	ल्, स्, न्ह् न्

⭐ Important Points

तालव्य:-

- तालव्य व्यंजन **वो व्यंजन** होते हैं जिनके **उच्चारण में जीभ के पिछले भाग को तालू** से **संघर्ष** करना पड़ता है।
- **जैसे -**
  - इ, ई, च, छ, ज, झ, ञ्, य और श।

कण्ठ्य:-

- कण्ठ्य व्यंजन **कंठ** से उच्चरित होने वाले **व्यंजनों** को कहा जाता है।
- जैसे -
  - अ, आ, क्, ख्, ग्, घ्, और ह्।

मूर्धन्य-

- ऐसे किरीट व्यंजन (यानि जिह्वा के लचीले के सामने के हिस्से से उच्चारित) होते हैं
- जो जिह्वा द्वारा वर्त्स्य कटक और कठोर तालू के बीच उच्चारित होते हैं
- जैसे -
  - ट, ठ, ड, ढ, ण, ड़, ढ़, ष।

वर्त्स्य-

- जिन व्यंजनों के उच्चारण में जिह्वा ऊपरी मसूढ़ों (वर्त्स) का स्पर्श करती है, वर्त्स्य व्यंजन कहलाते हैं।
- **जैसे-**
  - न, र , ल।

---

67. **Answer: d**

Explanation:

सूची -I का सूची - II से **सही** सुमेलन है-

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

सूची - I	सूची - II
आलोचनात्मक निबंध	**रचनाकार**
मुसद्दस और भारत भारती की सांस्कृतिक भूमिका	शमशेर बहादुर सिंह
नयी कविता का आत्मसंघर्ष	गजानन माधव मुक्तिबोध
भारतीय रंग-दृष्टि की खोज	नेमिचंद्र जैन
कवि कै बोल खरग हिरवानी	विजयदेव नारायण साही

⭐ Important Points

शमशेर बहादुर सिंह-

- **जन्म**-1911-1993ई.
- **मुख्य रचनाएँ-**
  - कुछ कविताएं(1956ई.)
  - इतने पास अपने(1980ई.)
  - चुका भी हूं नहीं मैं(1981ई.)
  - 'बात बोलेगी(1981ई.)
  - काल तुझसे होड़ है मेरी(1988ई.) आदि।

मुक्तिबोध-

- **जन्म**-1917-1964 ई.
- **आलोचनात्मक ग्रंथ-**
  - एक साहित्यिक की डायरी(1964 ई.)
  - नये साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र(1971 ई.)
  - समीक्षा की समस्याएं(1982 ई.) आदि।

नेमिचंद्र जैन-

- **जन्म**-1919-2005 ई.
- हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि, समालोचक, नाट्य-समीक्षक, पत्रकार, अनुवादक, शिक्षक थे।
- **रचनाएँ-**
  - अधूरे साक्षात्कार
  - रंगदर्शन
  - बदलते परिप्रेक्ष्य
  - भारतीय नाट्य-परंपरा आदि।

विजयदेव नारायण साही-

- **जन्म**-1924-1985 ई.
- **'तीसरा सप्तक'** के महत्त्वपूर्ण कवि रहे हैं।
- **आलोचनात्मक रचनाएँ-**
  - साहित्य और साहित्यकार का दायित्व (1987ई.)
  - छठवाँ दशक(1987ई.)

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- साहित्य क्यों?(1988ई.)
- वर्धमान और पतनशील(1991ई.) आदि।

---

68. Answer: d

Explanation:

सूची -I का सूची - II से **सही** सुमेलन है-

सूची - I	सूची - II
रचनाकार	**पुस्तक**
आई.ए. रिचर्ड्स	बियोंड
टी.एस. इलियट	द वेस्ट लैंड
अरस्तू	पेरिपोइतिकेस
कॉलरिज	बायोग्राफिया लिटरेरिया

⭐ Important Points

आई.ए. रिचर्ड्स-

- **जन्म**-1893-1979 ई.
- **अन्य ग्रन्थ**-
  - द फाउंडेशन ऑफ एस्थेटिक्स(1922 ई.)
  - द मीनिंग ऑफ मीनिंग(1923 ई.)
  - प्रिंसिपल ऑफ लिटरेरी क्रिटिसिज्म(1924 ई.) आदि।

टी.एस. इलियट-

- **जन्म**-1888-1965 ई.
- **अन्य ग्रन्थ**-
  - द सैक्रेड वुड(1920 ई.)
  - द वेस्टलैंड(1922 ई.)
  - सेलेक्टेड एसेज(1932 ई.)
  - ऑन पोयट्री एंड पोयट्स(1957 ई.) आदि।

अरस्तु-

- **जन्म**-384-322 ई.पू.
- **मुख्य ग्रन्थ-**
  - पेरीपोइएतिकेस
  - रिटोरिक
  - पॉलिटिक्स आदि।

कॉलरिज-

Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- **जन्म**-1772-1834 ई.
- यह एक प्रत्ययवादी आलोचक थे।
- अंग्रेजी में इन्हें व्यवहारवादी आलोचना के लिए जाना जाता है।
- **मुख्य रचनाएँ-**
  - लिरिकल बैलेड्स(1798 ई.)
  - बायोग्राफिआ लिटरेरिया(1817ई.)
  - द फ्रेंड(1969 ई.) आदि।
- **कॉलरिज के अनुसार-**
  - "कविता रचना का वह प्रकार है जो वैज्ञानिक कृतियों से इस अर्थ में भिन्न है कि उसका तात्कालिक प्रयोजन आनन्द है, सत्य नहीं।

---

69. Answer: a

Explanation:

सूची -I का सूची - II से **सही** सुमेलन है-

सूची - I	सूची - II
पत्र	**प्रकाशन का स्थान**
भारतबंधु	अलीगढ़
देश हितैषी	अजमेर
शुभ चिंतक	जबलपुर
भारतेंदु	वृंदावन

---

70. Answer: d

Explanation:

सूची -I का सूची - II से **सही** सुमलेन है-

सूची - I	सूची - II
पुस्तक	**लेखक**
भक्ति आंदोलन और सूरदास का काव्य	मैनेजर पांडेय
सनेह को मारग	इमरे बंधा
अकथ कहानी प्रेम की कहानी: नयी कहानी	नामवर सिंह
कामायनी एक पुनर्विचार	मुक्तिबोध

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

⭐ Important Points

मैनेजर पांडेय –

- आलोचना - ग्रन्थ -
  - शब्द और कर्म (1981 ई.)
  - साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका (1989 ई.)
  - आलोचना की सामाजिकता (2005 ई.)
  - उपन्यास और लोकतंत्र (2013 ई.)
  - हिंदी कविता का अतीत और वर्तमान (2013 ई.)
  - आलोचना में सहमति-असहमति (2013 ई.) आदि।

इमरे बंघा–

- **रचनाएँ–**
  - मॉरिशस का इतिहास
  - सनेह को मारग आदि।

नामवर सिंह–

- **जन्म–**1926-2019ई.
- **आलोचनात्मक ग्रंथ–**
  - छायावाद(1955ई.)
  - इतिहास और आलोचना(1957ई.)
  - कहानी:नयी कहानी(1965ई.)
  - कविता के नये प्रतिमान(1968ई.)
  - दूसरी परंपरा की खोज(1982ई.) आदि।

मुक्तिबोध–

- **जन्म–** 1917 ई.
- **रचनाएँ–**
  - चाँद का मुँह टेढ़ा है -(कविता संग्रह), 1964
  - नई कविता का आत्मसंघर्ष तथा अन्य निबंध (निबंध संग्रह), 1964
  - एक साहित्यिक की डायरी (निबंध संग्रह), 1964
  - काठ का सपना (कहानी संग्रह), 1967
  - विपात्र (उपन्यास), 1970, भारतीय ज्ञानपीठ
  - नये साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, 1971
  - सतह से उठता आदमी (कहानी संग्रह), 1971
  - कामायनी: एक पुनर्विचार, 1973
  - भूरी-भूरी खाक धूल - (कविता संग्रह), 1980 आदि।

---

71. **Answer: d**

Explanation:

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

सूची -। का सूची - ॥ से सही सुमेलन है-

	सूची - ।		सूची - ॥
	उपन्यास		**वर्णित कथा-स्थल**
A.	गोदान	IV.	बेलारी
B.	मैला आँचल	I.	मेरीगंज
C.	रागदरबारी	III.	शिवपालगंज
D.	मानस का हंस	II.	चित्रकूट

⭐ Key Points

गोदान-

- **रचनाकार-** प्रेमचंद
- **विधा-**उपन्यास
- **प्रकाशन वर्ष-** 1936 ई.
- **विषय-**
  - किसान जीवन की महकाव्यात्मक त्रासदी का चित्रण किया गया है।
  - इसमें शहरी और ग्रामीण दो कथाएं समांतर रुप से चलती है।
- **मुख्य पात्र-**
  - ग्रामीण पात्र-होरी,गोबर,झुनीया,दातादीन,मातादीन,सिलिया आदि।
  - शहरी पात्र-महता,मालती आदि।

मैला आँचल-

- **रचनाकार-**फणीश्वरनाथ रेणु
- **विधा-**उपन्यास
- **प्रकाशन वर्ष-**1954 ई.
- **विषय-**
  - इसमें बिहार के पूर्णिया जिले के मेरीगंज गाँव की कथा का वर्णन है।
  - आजाद भारत के ग्रामीण अंचल को कथा का केंद्र बनाया है।
- **पात्र-**
  - डॉ. प्रशांत
  - कमला
  - बालदेव
  - कालीचरन
  - मंगलादेवी
  - महंत सेवादास आदि।

रागदरबारी-

- रचनाकार- श्रीलाल शुक्ल
- विधा- उपन्यास
- प्रकाशन वर्ष- 1968 ई.

Prepp Your Personal Exams Guide

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- विषय-
  - रागदरबारी उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल के एक कस्बानुमा गाँव **शिवपाल गंज** की कहानी है।

मानस का हंस –

- **उपन्यासकार –** अमृतलाल नागर
- **विधा –** उपन्यास
- **प्रकाशन वर्ष –** 1972 ई.
- **पात्र–**
  - मैना कहारिन
  - बतासो
  - रतना
  - श्यामो की बुआ
  - बाबा -तुलसीदास
  - राजा -रजिया नाम से पुकारे जाने वाला पात्र, बाबा से आयु में एक दिन छोटे
  - संत बेनीमाधव (सूकरखेत निवासी शिष्य)- पचास-पचपन वर्षीय
  - रामू द्विवेदी (काशी से आए हुए शिष्य) -बाबा के शिष्य, इकतीस वर्षीय
  - बकरीदी कक्का- बाबा से आयु में चार दिन बड़े
  - पण्डित गणपति उपाध्याय -बाबा के पुराने शिष्य, अड़सठ-उनहत्तर वर्षीय
  - बूढ़ा रमज़ानी - बकरीदी दर्ज़ी का छोटा बेटा, इकसठ-बासठ वर्षीय
  - शिवदीन दुबे, नन्हकू, मनकू- गाँव के लोग
  - हुलसिया-पंडाइन की मुँहबोली ननद
  - पंडाइन
  - पण्डित आत्माराम
  - भैरोसिंह
- **विषय –**
  - यह उपन्यास तुलसीदास के जीवन पर आधारित है।
  - इसमें तुलसी के व्यक्तित्व की विभिन्न परतों को उजागर किया गया है।
  - व्यक्तित्व के साथ-साथ इनके कृतित्व का भी उल्लेख किया गया है।

Your Personal Exams Guide

⭐ Important Points

प्रेमचंद–

- **जन्म–**1880-1936 ई.
- **उपन्यास–**
  - देवस्थान रहस्य(1905 ई.)
  - प्रेमा(1907 ई.)
  - रंगभूमि(1925 ई.)
  - कायाकल्प(1926 ई.)
  - गबन(1931 ई.)

फणीश्वरनाथ रेणु–

- **जन्म–**1921-1977 ई.
- आंचलिक उपन्यासकार है।
- **उपन्यास–**

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- परती परिकथा(1957 ई.)
- दीर्घतपा(1964 ई.)
- जुलूस(1965 ई.)
- कितने चौराहे(1966 ई.) आदि।

श्रीलाल शुक्ल-

- अन्य उपन्यास-
  - सूनी घाटी का सूरज- 1957 ई.
  - अज्ञातवास - 1962 ई.
  - आदमी का ज़हर (1972 ई.
  - सीमाएँ टूटती हैं - 1973 ई.
  - पहला पड़ाव -1987 ई. आदि।

अमृतलाल नागर-

- **जन्म** – 1916-1960 ई.
- **मुख्य उपन्यास** –
  - बूंद और समुंद्र(1956 ई.)
  - शतरंज के मोहरे(1959 ई.)
  - सुहाग के नुपूर(1960 ई.)
  - अमृत और विषय(1966 ई.) आदि।
- **खंजन नयन**(1981 ई.) उपन्यास **सूरदास** के जीवन पर आधारित है।

---

72. Answer: a

Explanation:

सूची -I का सूची - II से **सही** सुमेलन है-

	सूची - I		सूची - II
	नाटक		**पात्र**
A.	अंजो दीदी	III.	ओमी
B.	चंद्रगुप्त	II.	लीला
C.	स्कंदगुप्त	IV.	जयमाला
D.	एक और द्रोणाचार्य	I.	राजकुमार

⭐ Key Points

अंजो दीदी-

- रचनाकार- उपेंद्रनाथ 'अश्क'

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- विधा- नाटक
- प्रकाशन वर्ष- 1955 ई.
- मुख्य पात्र- अंजली, श्रीपात, इन्द्रनारायण, अनिमा आदि।
- विषय-
    - इसमें नारी की कठोर पारिवारिक नियंत्रण से परिवार विघटन की समस्या का वर्णन है।

चन्द्रगुप्त-

- रचनाकार- जयशंकर प्रसाद
- **प्रकाशन वर्ष-** 1931 ई.
- विधा- नाटक
- **विषय-**
    - चन्द्रगुप्त तथा चाणक्य का अत्याचारी नंद तथा विदेशी यूनानियों से संघर्ष का चित्रण है।
- **पुरुष पात्र-**
    - चन्द्रगुप्त, चाणक्य, सिंहरण, सिकंदर, फिलिप्स, गंधार आदि।
- **स्त्री पात्र-**
    - अलका, सुवासिनी, कल्याणी, कार्नेलिया आदि।

स्कंदगुप्त-

- रचनाकार- जयशंकर प्रसाद
- **प्रकाशन वर्ष-** 1928 ई.
- विधा- नाटक
- विषय-
    - भारतीय व यूरोपीय नाटकों का समन्वय किया गया है।
    - कुमारगुप्त के विलासी साम्राज्य की आंतरिक स्थिति का चित्रण किया है।
- पात्र-
    - स्कंदगुप्त, कुमारगुप्त, पर्णदत्त, चक्रपालित, देवकी, आनंतदेवी, देवसेना, विजया आदि।

एक और द्रोणाचार्य-

- **प्रकाशन वर्ष-** 1977 ई.
- **विधा-** नाटक
- **रचनाकार-** शंकरशेष
- **विषय-**
    - इस नाटक में नाटककार ने वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में व्याप्त भ्रष्टाचार, पक्षपात, राजनितिक घुसपैठ तथा आर्थिक एवं सामाजिक दबावों के चलते निम्न मध्यवार्गीय व्यक्ति के असहाय बेबस चरित्र को उद्घाटित किया है।
    - महाभारत कालीन प्रसिद्ध पात्र द्रोणाचार्य के जीवन प्रसंगों को आधार बनाकर वर्तमान विसंगति को दिखाया गया है।
- **पौराणिक पात्र-**
    - द्रोणाचार्य
    - एकलव्य
    - कृपी (द्रोणाचार्य की पत्नी)
    - अश्वस्थामा (द्रोणाचार्य का पुत्र)
    - भीष्म
    - अर्जुन
    - युधिष्ठिर
    - सैनिक

Download Prepp APP
GET IT ON Google Play

- **आधुनिक पात्र-**
    - अरविंद: (नाटक का प्रमुख पात्र प्रोफेसर)
    - लीला: अरविंद की पत्नी
    - यदू: अरविंद का साथी
    - जूनियर प्रोफ़ेसर
    - प्रिंसपल: 60 वर्ष का है
    - चंदू: अरविंद का छात्र 20 वर्ष
    - अरविंद के कॉलेज का प्रेसिडेंट
    - विमलेंदु: मृत शिक्षक
    - अनुराधा: छात्रा, 20 वर्ष की

⭐ Important Points

उपेंद्रनाथ 'अश्क'-

- **जन्म-** 1910-1996 ई.
- उपन्यासकार, निबन्धकार, लेखक, कहानीकार हैं।
- अन्य नाटक-
    - जय-पराजय (1930 ई.)
    - स्वर्ग की झलक (1938 ई.)
    - छठा बेटा (1940 ई.)
    - अलग-अलग रस्ते (1943 ई.)
    - तकल्लुफ (1948 ई.) आदि।

जयशंकर प्रसाद-

- **जन्म-**1889-1937 ई.
- छायावादी प्रमुख स्तम्भ है।
- **काव्य संग्रह-**
    - उर्वशी(1909 ई.)
    - वन मिलन(1909 ई.)
    - कानन कुसुम(1913 ई.)
    - प्रेम पथिक(1913 ई.)
    - चित्राधार(1918 ई.)
    - झरना(1918 ई.)
    - आँसू(1925 ई.) आदि।
- **उपन्यास-**
    - कंकाल(1929 ई.)
    - तितली(1934 ई.)
    - इरावती(1936 ई.) आदि।
- **नाटक-**
    - सज्जन(1910 ई.)
    - कल्याणी परिणय(1912 ई.)
    - करुणालय(1912 ई.)
    - विशाख(1921 ई.)
    - अजातशत्रु(1922 ई.)

Prepp Your Personal Exams Guide

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- ध्रुवस्वामिनी(1933 ई.) आदि।

- **निबंध-**
  - काव्य और कला तथा अन्य निबंध(1959 ई.)
  - यथार्थवाद और छायावाद
  - रहस्यवाद
  - नाटकों का आरंभ आदि।

शंकरशेष-

- **प्रसिद्धि -** हिन्दी के साठोत्तरी पीढ़ी के सुप्रसिद्ध नाटककार थे।
- **प्रमुख रचनाएं -**
  - फंदी (1971)
  - रक्तबीज (1978)
  - बन्धन अपने-अपने (1980)
  - एक और द्रोणाचार्य (1980)
  - अरे! मायावी सरोवर (1981)
  - कोमल गांधार (1983)
  - चेहरे (1983)
  - पोस्टर (1983)
  - बिन बाती के दीप (1970) आदि।

---

73. **Answer: c**

Explanation:

सूची -I का सूची - II से **सही** सुमेलन है-

	सूची - I		सूची - II
	निबंधकार		**निबंध**
A.	प्रतापनारायण मिश्र	IV.	मनोयोग
B.	हजारीप्रसाद द्विवेदी	III.	कुटज
C.	सरदार पूर्णसिंह	I.	सच्ची वीरता
D.	विद्यानिवास मिश्र	II.	तुम चंदन हम पानी

⭐ Important Points

प्रताप नारायण मिश्र-

- **जन्म-** 1856-1894 ई.
- भारतेन्दु युगीन कवि है।
- विषय की दृष्टि से इनके निबंधों में विविधता है।
- शैली की दृष्टि से इन्होंने **चार** प्रकार के निबंधों की रचना की हैं-

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

    - वर्णनात्मक
    - विचारात्मक
    - भावात्मक
    - हास्य-व्यंग्यपरक
- निबंध -
    - धोखा
    - दाँत
    - वृद्ध
    - भौं
    - मनोयोग
    - ईश्वर की मूर्ति आदि।
- **काव्य रचनाएँ-**
    - प्रेम पुष्पावली
    - लोकोक्ति शतक
    - श्रृंगार विलास
    - हरगंगा आदि।
- **नाटकरचनाएँ-**
    - कलि कौतुक रूपक(1886 ई.) आदि।

हजारीप्रसाद द्विवेदी-

- जन्म-1907-1979ई.
- हिन्दीनिबन्धकार, आलोचक और उपन्यासकार थे।
- प्रमुख रचनाएँ:-
    - अशोक के फूल (1948ई.)
    - कल्पलता (1951ई.)
    - मध्यकालीन धर्मसाधना (1952ई.)
    - विचार और वितर्क (1957ई.)
    - विचार-प्रवाह (1959ई.)
    - कुटज (1964ई.)
    - आलोक पर्व (1972ई.) आदि।

सरदार पूर्णसिंह-

- **जन्म-**1881-1931 ई.
- **निबंध-**
    - आचरण की सभ्यता
    - मजदूरी और प्रेम
    - सच्ची वीरता
    - कन्यादान आदि।

विद्यानिवास मिश्र-

- **जन्म-** 1905 - 2005 ई.
- **निबंध-**
    - छितवन की छाँह (1953)
    - कदम की फूली डाल (1956)

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- आँगन का पंछी और बनजारा मन (1963)
- मैंने सिल पहुँचाई (1966)
- बसंत आ गया पर कोई उत्कंठा नहीं (1972)
- मेरे राम का मुकुट भीग रहा है (1974)
- परंपरा कोई बन्धन नहीं (1976)
- तमाल के झरोखे से (1981)
- शेफाली झर रही है (1989) आदि।

---

74. Answer: a

Explanation:

सूची -I का सूची - II से **सही** सुमेलन है-

	सूची - I		सूची - II
	रचना		**रचनाकार**
A.	अकाल में सारस	IV.	केदारनाथ सिंह
B.	वनपाखी सुनो	I.	नरेश मेहता
C.	ठंडा लोहा	II.	धर्मवीर भारती
D.	बची हुई पृथ्वी	III.	लीलाधर जगूड़ी

⭐ Important Points

केदारनाथ सिंह-

- **जन्म**-1934-2018 ई.
- तीसरा सप्तक के महत्त्वपूर्ण कवि है।
- **रचनाएँ-**
  - अभी बिल्कुल अभी (1960 ई.)
  - जमीन पक रही है(1980 ई.)
  - यहाँ से देखो(1983 ई.)
  - बाघ(1996 ई.)
  - **अकाल में सारस(1988 ई.)**
  - उत्तर कबीर और अन्य कविताएँ(1995 ई.)
  - तालस्ताय और साइकिल(2005 ई.) आदि।

नरेश मेहता-

- **जन्म**-1922-2000 ई.
- यह दूसरा सप्तक के कवि है।
- **रचनाएँ-**
  - **बनपाखी सुनो(1957 ई.)**

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- बोलने दो चीड़ को(1961 ई.)
- उत्सवा(1979 ई.)
- अरण्या(1985 ई.) आदि।

धर्मवीर भारती-

- **जन्म**-1926-1997 ई.
- **दूसरा सप्तक** के मुख्य कवि रहे है।
- **रचनाएँ-**
  - ठंडा लोहा(1952 ई.)
  - कनुप्रिया(1959 ई.)
  - सात गीत वर्ष(1959 ई.)
  - देशान्तर(1960 ई.) आदि।

लीलाधर जगूड़ी की रचनाएं:-

- **कविता संग्रह:-**
  - शंखमुखी शिखरों पर
  - नाटक जारी है
  - इस यात्रा में
  - रात अब भी मौजूद है
  - **बची हुई पृथ्वी**
  - घबराए हुए शब्द
  - भय भी शक्ति देता है
  - अनुभव के आकाश में चाँद
  - महाकाव्य के बिना
  - ईश्वर की अध्यक्षता में
  - खबर का मुँह विज्ञापन से ढँका है आदि।
- **नाटक:-** पाँच बेटे
- **गद्य:-** मेरे साक्षात्कार

Your Personal Exams Guide

---

75. Answer: a

Explanation:

सूची -I का सूची - II से सही सुमेलन है-

Download Prepp APP GET IT ON Google Play

	सूची - I		सूची - II
	रेखाचित्रों के मुख्य पात्र		**सहयोगी पात्र**
A.	सरयू भैया	I.	गंगोभाई
B.	मंगर	I.	झकोलिया
C.	रजिया	III.	हसन
D.	देव	IV.	कुनकुन

⭐ Key Points

माटी की मूरतें-

- **रचनाकार-** रामवृक्ष बेनीपुरी
- **प्रकाशन वर्ष**-1946ई.
- रेखाचित्र-संकलन है, जिसमें **बारह रेखाचित्रों** का संकलन किया गया है।
- **बारह रेखाचित्र हैं**-
  - रजिया
  - बलदेव सिंह
  - सरजू भैया
  - मंगर
  - रूपा की आजी
  - देव
  - बालगोबिन भगत
  - भौजी
  - परमेसर
  - बैजू मामा
  - सुभान खाँ
  - बुधिया

⭐ Important Points

रामवृक्ष बेनीपुरी-

- **जन्म**-1899-1968ई.
- **अन्य रेखाचित्र**-
  - गेंहू और गुलाब(1950ई.)
  - लाल तारा(1938ई.)
  - मिल के पत्थर आदि।

---

76. **Answer: d**

Explanation:

Download Prepp APP GET IT ON Google Play

प्रथम प्रकाशन वर्ष के अनुसार भगवतीचरण वर्मा द्वारा रचित उपन्यासों का पहले से बाद का सही क्रम है-

- B. चित्रलेखा
- C. टेढ़े मेढ़े रास्ते
- A. भूले बिसरे चित्र
- E. सामर्थ्य और सीमा
- D. सबहिं नचावत राम गोसाईं

⭐ Key Points

प्रकाशन वर्ष के अनुसार-

उपन्यास	प्रकाशन वर्ष
चित्रलेखा	1934 ई.
टेढ़े मेढ़े रास्ते	1946 ई.
भूले बिसरे चित्र	1959 ई.
सामर्थ्य और सीमा	1962 ई.
सबहिं नचावत राम गोसाईं	1970 ई.

⭐ Important Points

चित्रलेखा-

- **विधा-**उपन्यास
- **विषय-**
  - पाप व पुण्य के नैतिक प्रश्न को उठाया गया है।

भूले बिसरे चित्र-

- **विधा-**उपन्यास
- **विषय-**
  - तीन पीढ़ियों के मध्य आये बदलाव को चित्रित किया गया है।

सबहिं नचावत राम गोसाईं-

- **विधा-**उपन्यास
- **विषय-**
  - 1919 ई. से 1965 ई. के बीच के समाज के दूषित भ्रष्टाचारमय जीवन का चित्रण किया गया है।

⭐ Additional Information

भगवतीचरण वर्मा-

- **जन्म-**1903-1981 ई.
- **उपन्यास-**
  - पतन(1928 ई.)

Your Personal Exams Guide
Download Prepp APP
GET IT ON Google Play

- तीन वर्ष(1936 ई.)
- प्रश्न और मरीचिका(1973 ई.) आदि।

---

77. **Answer: b**

Explanation:

प्रथम प्रकाशन वर्ष के आधार पर हिंदी की दलित आत्मकथाओं का पहले से बाद का **सही** क्रम है-

- E. दोहरा अभिशाप
- D. झोपड़ी से राजभवन
- A. मेरी पत्नी और भेड़िया
- B. मुर्दहिया
- C. शिकंजे का दर्द

⭐ Key Points

प्रकाशन वर्ष के अनुसार-

आत्मकथा	प्रकाशन वर्ष	रचनाकार
दोहरा अभिशाप	1999 ई.	कौशल्या बैसंत्री
झोपड़ी से राजभवन	2002 ई.	माताप्रसाद
मेरी पत्नी और भेड़िया	2009 ई.	डॉ. धर्मवीर
मुर्दहिया	2010 ई.	तुलसीराम
शिकंजे का दर्द	2011 ई.	सुशीला टाकभौरे

Your Personal Exams Guide

⭐ Additional Information

तुलसीराम-

- जीवनकाल-1949-2015
- **आत्मकथा-**
  - मणिकर्णिका (2013)

डॉ. सुशीला टाकभौरे-

- जन्म- 1954 ई.
- दलित साहित्य की अग्रणी महिला साहित्यकारों में से एक है।
- **काव्य संग्रह-**
  - स्वाति बूँद और खारे मोती (1993 ई.)
  - तुमने उसे कब पहचाना (1997 ई.)
  - हमारे हिस्से का सूरज (2005 ई.)

Download Prepp APP GET IT ON Google Play

78. **Answer: a**

Explanation:

'बीन भी हूँ मैं' गीत में स्वयं के संबंध में महादेवी वर्मा ने जिन कथनों का उपयोग किया है, ऐसे अंश का पहले से बाद का **सही** क्रम है-

- E. तुम्हारी रागिनी
- B. कुलहीन प्रवाहिनी
- D. अखंड सुहागिनी
- C. सुनहली दामिनी
- A. स्मित की चाँदनी

⭐ Key Points

- बीन भी हूँ मैं **तुम्हारी रागिनी** भी हूँ!
- कूल भी हूँ **कूलहीन प्रवाहिनी** भी हूँ!
- दूर तुमसे हूँ **अखण्ड सुहागिनी** भी हूँ!
- नील घन भी हूँ **सुनहली दामिनी** भी हूँ!
- अधर भी हूँ और **स्मित की चाँदनी** भी हूँ!

⭐ Important Points

बीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ-

- रचनाकार-महादेवी वर्मा
- विधा-काव्य
- प्रकाशन वर्ष-1934 ई.
- यह नीरजा काव्य संग्रह में संकलित है।

⭐ Additional Information

महादेवी वर्मा-

- **जन्म**-1907-1987 ई.
- छायावाद की मुख्य कवयित्री है।
- **रचनाएँ-**
  - नीहार(1930 ई.)
  - रश्मि(1932 ई.)
  - नीरजा(1935 ई.)
  - सांध्यगीत(1936 ई.)
  - यामा(1940 ई.) आदि।

---

79. **Answer: b**

Explanation:

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

उपन्यासों का, प्रथम प्रकाशन वर्ष के अनुसार, पहले से बाद का **सही** क्रम है-

- C. गोदान
- A. बाणभट्ट की आत्मकथा
- D. रागदरबारी
- E. तमस
- B. ज़िंदगीनामा

⭐ Key Points

गोदान-

- रचनाकार-प्रेमचंद
- विधा-उपन्यास
- प्रकाशन वर्ष-1936 ई.
- विषय-
  - भारतीय किसान जीवन की महागाथा का वर्णन है।

बाणभट्ट की आत्मकथा-

- **रचनाकार-**हजारीप्रसाद द्विवेदी
- **विधा-**उपन्यास
- **प्रकाशन वर्ष-**1946ई.
- **पात्र-**
  - निपुणिका,भट्टिनी,सुचरिता,बाणभट्ट,अघोर भैरव आदि।
- **विषय-**
  - ऐतिहासिक उपन्यास है।
  - प्रेम का उदात्त स्वरूप चित्रित हुआ है।

रागदरबारी-

- रचनाकार- श्रीलाल शुक्ल
- विधा- उपन्यास
- प्रकाशन वर्ष- 1968 ई.
- विषय-
  - रागदरबारी उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल के एक कस्बानुमा गाँव **शिवपाल गंज** की कहानी है।

तमस-

- रचनाकार-भीष्म साहनी
- विधा-उपन्यास
- प्रकाशन वर्ष-1973 ई.
- विषय-
  - पंजाब में हुए भयानक सांप्रदायिक दंगों पर आधारित है।
  - लाहौर के आस-पास के पांच दिनों की कथा वर्णित है।

जिन्दगीनामा-

- रचनाकार- कृष्णा सोबती

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- विधा- उपन्यास
- प्रकाशन वर्ष- 1979 ई.
- मुख्य पात्र- किसान, ग्रामीण
- विषय-
    - बीसवीं शताब्दी के प्रथम पन्द्रह वर्षों में **पंजाब** के किसानों-ग्रामीणों के जीवन का चित्रण है।

⭐ Important Points

प्रेमचंद-

- **जन्म-**1880-1936 ई.
- **उपन्यास-**
    - सेवासदन(1918 ई.)
    - रंगभूमि(1925 ई.)
    - कायाकल्प(1926 ई.)
    - निर्मला(1927 ई.)
    - गबन 1931 ई.) आदि।

हजारीप्रसाद द्विवेदी-

- **जन्म-**1907-1979ई.
- प्रमुख ऐतिहासिक उपन्यासकार है।
- **उपन्यास-**
    - चारुचन्द्र लेख(1963ई.)
    - पुनर्नवा(1973ई.)
    - अनामदास का पोथा(1976ई.) आदि।

श्रीलाल शुक्ल-

- अन्य उपन्यास-
    - सूनी घाटी का सूरज- 1957 ई.
    - अज्ञातवास - 1962 ई.
    - आदमी का ज़हर (1972 ई.
    - सीमाएँ टूटती हैं - 1973 ई.
    - पहला पड़ाव -1987 ई. आदि।

भीष्म साहनी-

- **जन्म-**1915-2003 ई.
- **उपन्यास-**
    - झरोखा(1967 ई.)
    - कड़ियाँ(1970 ई.)]
    - बसंती(1980 ई.)
    - मय्यादास की माड़ी(1988 ई.) आदि।

कृष्णा सोबती-

- अन्य उपन्यास-

Prepp Your Personal Exams Guide

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- डार से बिछुड़ी -1958 ई.
- यारों के यार -1968 ई.
- सूरजमुखी अँधेरे के -1972 ई.
- दिलोदानिश -1993 ई.
- समय सरगम -2000 ई. आदि।

---

80. Answer: b

Explanation:

'आकाशदीप' कहानी की घटनाओं का पहले से बाद का **सही** क्रम है-

- E. बंदी द्वारा पोत से संबद्ध रज्जु का काटना
- D. बुधगुप्त और नायक के बीच द्वंद्वयुद्ध
- A. चंपा द्वारा दीपक का जलाना
- C. चंपा और जया द्वारा नौका विहार
- B. दीप-स्तंभ का महोत्सव

⭐ Key Points

आकाशदीप-

- **रचनाकार-**जयशंकर प्रसाद
- **विधा-**कहानी
- **प्रकाशन वर्ष-**1928 ई.
- **विषय-**
  - चम्पा और बुद्धगुप्त के आदर्श प्रेम व त्याग की कहानी है।
  - यह नायिका प्रधान प्रेम कहानी है।
  - इसमें समुद्री जीवन को ऐतिहासिक परिवेश में चित्रित किया गया है।
  - कहानी में मानवीय प्रेम को स्पष्ट करते हुए एक आदर्श प्रेम को स्थापित किया गया है।

⭐ Important Points

जयंशकर प्रसाद-

- **जन्म-**1889-1937 ई.
- **प्रथम कहानी**-ग्राम
  - 'इंदु' पत्रिका में प्रकाशित।
  - 1911 ई. में प्रकाशित।
- **अंतिम कहानी**-सलवती
- **प्रथम कहानी संग्रह-**छाया
  - 1912 ई. में प्रकाशित।
  - हिंदी का भी प्रथम कहानी-संग्रह।
- **कहानी संग्रह-**
  - प्रतिध्वनि(1926 ई.)
  - आँधी(1931 ई.)

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- इन्द्रजाल(1936 ई.) आदि।

- **प्रमुख कहानियाँ-**
  - देवदासी
  - देवरथ
  - संदेश
  - मधुआ
  - पुरस्कार
  - गुंडा आदि।

⭐ Additional Information

राजेन्द्र यादव-

- "अतिरिक्त रोमानी वातावरण और कल्पित कथानकों के बावजूद प्रसाद हिंदी के पहले सफल कहानीकार हैं।"

---

81. Answer: b

Explanation:

'स्कंदगुप्त' नाटक के प्रथम अंक में आए संवादों का पहले से बाद का **सही** क्रम है-

- B. अधिकार-सुख कितना मादक और सारहीन है।- **स्कंदगुप्त**
- D. राष्ट्रनीति, दार्शनिकता और कल्पना का लोक नहीं है।- **पर्णदत्त स्कंदगुप्त से**
- C. केवल संधि-नियम से ही हम लोग बाध्य नहीं हैं -शरणागत की रक्षा भी क्षत्रिय का धर्म है।- **स्कंदगुप्त दूत से**
- A. कविता करना अनंत पुण्य का फल है।- **मातृगुप्त**
- E. पुरुष है कुतूहल और प्रश्न, और स्त्री है विश्लेषण, उत्तर और सब बातों का समाधान।- **धातुसेन मातृगुप्त से**

⭐ Important Points

स्कंदगुप्त-

- **रचनाकार-** जयशंकर प्रसाद
- **विधा-** नाटक
- **प्रकाशन वर्ष-** 1928 ई.
- **विषय-**
  - भारतीय व यूरोपीय नाटकों का समन्वय किया गया है।
  - कुमारगुप्त के विलासी साम्राज्य की आंतरिक स्थिति का चित्रण किया है

- **पुरुष पात्र-**
  - स्कंदगुप्त-- युवराज (विक्रमादित्य)
  - कुमारगुप्त-- मगध का सम्राट
  - गोविन्दगुप्त-- कुमारगुप्त का भाई
  - पर्णदत्त-- मगध का महानायक
  - चक्रपालित-- पर्णदत्त का पुत्र
  - बन्धुवर्मा-- मालव का राजा
  - भीमवर्मा-- उसका भाई

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- मातृगुप्त-- काव्यकर्ता (कालिदास)
- प्रपंचबुद्धि-- बौद्ध कापालिक
- शर्वनाग-- अन्तर्वेद का विषयपति
- कुमारदास (धातुसेन)-- सिंहल का राजकुमार
- पुरगुप्त-- कुमारगुप्त का छोटा पुत्र
- भटार्क-- नवीन महाबलाधिकृत
- पृथ्वीसेन-- मंत्री कुमारामात्य
- खिंगिल-- हूण आक्रमणकारी
- मुगल-- विदूषक
- प्रख्यातकीर्ति-- लंकाराज-कुल का श्रमण, महा-बोधिबिहार-स्थविर
- अन्य-- महाप्रतिहार, महादंडनायक, नन्दी-ग्राम का दंडनायक, प्रहरी, सैनिक इत्यादि।

- **नारी पात्र-**
  - देवकी-- कुमारगुप्त की बड़ी रानी, (स्कंद की माता)
  - अनन्तदेवी-- कुमारगुप्त की छोटी रानी (पुरगुप्त की माता)
  - जयमाला-- बंधुवर्मा की स्त्री, (मालव की रानी)
  - देवसेना-- बंधुवर्मा की बहिन
  - विजया-- मालव के धनकुबेर की कन्या
  - कमला-- भटार्क की जननी
  - रामा-- शर्वनाग की स्त्री
  - मालिनी-- मातृगुप्त की प्रणयिनी
  - अन्य-- सखी, दासी इत्यादि।

⭐ Additional Information

जयशंकर प्रसाद-

- **जन्म-**1889-1937 ई.
- छायावाद के महत्तवपूर्ण कवि रहे है।
- इन्हें प्रेम और मस्ती का कवि कहा जाता है।
- **रचनाएँ-**
- **काव्य संग्रह-**
  - उर्वशी(1909 ई.)
  - वन मिलन(1909 ई.)
  - कानन कुसुम(1913 ई.)
  - प्रेमपथिक(1913 ई.) आदि।
- **नाटक-**
  - सज्जन(1910 ई.)
  - कल्याणी परिणय(1912 ई.)
  - करुणालय(1912 ई.)
  - अजात शत्रु(1922 ई.)
  - चन्द्रगुप्त(1931 ई.) आदि।

---

82. Answer: c

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

Explanation:

निबंध 'मजदूरी और प्रेम' के उपशीर्षकों का पहले से बाद का **सही** क्रम है-

- B. हल चलाने वाले का जीवन
- A. गड़रिये का जीवन
- C. मजदूर की मजदूरी
- E. प्रेम मजदूरी
- D. मजदूरी और कला

⭐ Key Points

मजदूरी और प्रेम-

- **रचनाकार-**अध्यापक पूर्ण सिंह
- विधा-निबंध
- **विषय-**
  - इसके लेखक ने मजदूरों के श्रम तथा उसके सच्चे मूल्य का विवेचन किया है।
  - किसान के खेत में किए गए श्रम तथा गड़रिये द्वारा भेड़ चराने के कार्य का प्रतिदान पैसों से नहीं चुकाया जा सकता।
  - उनका मूल्य परस्पर प्रेम करके ही चुकाया जा सकता है।
- **निबंध के उपशीर्षक हैं-**
  - हल चलाने वाले का जीवन
  - गड़रिये का जीवन
  - मजदूर की मजदूरी
  - प्रेम मजदूरी
  - मजदूरी और कला
  - मजदूरी और फकीरी
  - समाज का पालन करने वाली दूध की धारा
  - पश्चिमी सभ्यता का एक नयाआदर्श

Prepp Your Personal Exams Guide

⭐ Important Points

सरदार पूर्ण सिंह-

- **जन्म-**1881-1931 ई.
- द्विवेदी युगीन मुख्य निबंधकार है।
- **निबंध-**
  - आचरण की सभ्यता
  - सच्ची वीरता
  - पवित्रता
  - कन्यादान
  - अमेरिका का मस्त कवि वाल्ट व्हिटमैन आदि।

---

83. Answer: b

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

Explanation:

'अरे यायावर रहेगा याद' के अध्यायों का पहले से बाद का सही क्रम है-

D. परशुराम से तूरखम

C. किरणों की खोज में

A. देवताओं के अंचल में

E. मौत की घाटी में

B. एलुरा

⭐ **Key Points**

अरे यायावर रहेगा याद-

- **रचनाकार-** अज्ञेय
- **विधा-** यात्रावृतांत
- **प्रकाशन वर्ष-** 1953 ई.
- **विषय-**
  - भारतीय यात्राओं का चित्रण है।
  - यह एक क्लासिक यात्रा संस्मरण है।
  - 'अरे यायावर रहेगा याद' का आरम्भ 'परशुराम' के लेख से होता है।
  - इसमें अज्ञेय ने ब्रह्मपुत्र के मैदानी भाग से लेकर एलोरा की गुफाओं तक की यात्राओं का वर्णन किया है।
- **इसके आठ अध्याय हैं-**
  - परशुराम से तुरखम (एक टायर की राम कहानी)
  - किरणों की खोज
  - देवताओं की अंचल में
  - मौत की घाटी में
  - एलुरा
  - माझुली
  - बहता पानी निर्मल
  - सागर-सेवित, मेघ-मेखलित (कन्याकुमारी से नंदादेवी)

⭐ **Important Points**

अज्ञेय-

- **जन्म-** 19111-1987 ई.
- **पुरा नाम-** सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'
- कथाकार, ललित-निबन्धकार, सम्पादक और अध्यापक के रुप में जाना जाता है।
- **यात्रा वृतांत-**
  - एक बूँद सहसा उछली(1960 ई.) आदि।
- **डायरी-**
  - भवंती
  - अंतरा

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- शाश्वती
- **संस्मरण-**
  - स्मृति लेखा आदि।

⭐ Additional Information

'बहता पानी निर्मल' शीर्षक वृत्तांत में अज्ञेय लिखते हैं -

- "यों तो वास्तविक जीवन में भी काफ़ी घूमा-भटका हूं, पर उस से कभी तृप्ति नहीं हुई, हमेशा मन में यही रहा कि कहीं और चलें, कोई नयी जगह देखें और इस लालसा ने अभी भी पीछा नहीं छोड़ा है।"

---

84. Answer: c

Explanation:

सही उत्तर है- **कथन I सत्य है, किन्तु कथन II असत्य है।**

⭐ Key Points

राष्ट्र भाषा-

- सम्पूर्ण राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करती है।
- प्राय: वह अधिकाधिक लोगों द्वारा बोली और समझी जाने वाली भाषा होती है।
- प्राय: राष्ट्रभाषा ही किसी देश की राजभाषा होती है।

⭐ Important Points

- "हिंदी को हम राष्ट्रभाषा मानते हैं।"-**महात्मा गांधी**
- "हिंदी आखिल भारत की जातीय भाषा या राष्ट्रभाषा बनने योग्य है।"-**केशवचंद्र सेन(ब्रह्म समाज)**

⭐ Additional Information

आठवीं अनुसूची के अनुसार 22 भाषाएँ हैं-

- असमिया
- बांग्ला
- गुजराती
- हिन्दी
- कन्नड़
- कश्मीरी
- कोंकणी
- मलयालम
- मणिपुरी
- मराठी
- नेपाली
- उड़िया
- पंजाबी

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- संस्कृत
- सिंधी
- तमिल
- उर्दू
- तेलुगु
- बोडो
- डोगरी
- मैथिली
- संथाली

---

85. **Answer: a**

Explanation:

सही उत्तर है- कथन I और II दोनों सत्य हैं।

⭐ Key Points

साकेत-

- **रचनाकार-**मैथिलीशरण गुप्त
- **प्रकाशन वर्ष-**1931 ई.
- **विधा-**काव्य
- **विषय-**
  - इसकी रचना की प्रेरणा महावीर प्रसाद द्विवेदी कृत लेख **'कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता'** से मिली।
  - इसमें **12** सर्गों में उर्मिला के चरित्र को दर्शाया गया है।
  - साकेत राम कथा पर ही आधारित रचना है।
  - राम को यहाँ आधुनिक मानव के रूप मे प्रस्तुत किया गया हुआ।
  - 'साकेत' शब्द पालि भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है- **अयोध्या**।
  - **डॉ. नगेन्द्र** में साकेत काव्य को 'जनवादी काव्य' की संज्ञा दी है।

⭐ Important Points

मैथिलीशरण गुप्त-

- **जन्म-1886**-1964 ई.
- द्विवेदी युगीन कवि है।
- **'रसिकेन्द्र'** नाम से ब्रजभाषा में कविताएँ लिखते थे।
- **रचनाएँ-**
  - रंग में भंग(1909 ई.)
  - जयद्रथ वध(1910 ई.)
  - भारत-भारती(1912 ई.)
  - किसान(1918 ई.)
  - विकट भट(1929 ई.)
  - झंकार(1929 ई.)
  - यशोधरा(1932 ई.)

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- द्वापर(1936 ई.)आदि।
- जयभारत(1952 ई.)
- विष्णुप्रिया(1957 ई.) आदि।

---

86. Answer: a

Explanation:

सही उत्तर है- **कथन I और II दोनों सत्य हैं।**

⭐ Key Points

टी.एस.इलियट-

- **जन्म-** 1888-1965 ई.
- यह पाश्चात्य काव्यशास्त्र के महान विचारक हैं।
- इन्होंने कई सिद्धान्त प्रतिपाद्य किये हैं-
  - निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत
  - परम्परा का सिद्धांत
  - वस्तुनिष्ठ समीकरण
- **रचनाएँ-**
  - द सैक्रेड वुड(1920 ई.)
  - द वेस्टलैंड(1922 ई.)
  - सेलेक्टेड ऐसेज(1932 ई.)
  - ऑन पोएट्री एंड पोयट्स(1957 ई.) आदि।

⭐ Important Points

परम्पराकासिद्धांत-

- **अर्थ-**
  - किसी रचना का महत्व उतना ही होता है,जितना समंजन(adjustment) वह सम्पूर्ण परम्परा में करती है।
- इलियट परम्परा को वर्तमान से अलग नहीं बल्कि उसका ही एक हिस्सा मानते हैं।
- परंपरा जीवित संस्कृति का एक अंश है।
- नए कवियों के लिए इलियट अतीत के ज्ञान को जरूरी मानते है।
- इनका लेख **'ट्रेडिशन एंड इंडिविजुअल टैलेंट'** परम्परा के ही महत्त्व को प्रतिपादित करता है।

⭐ Additional Information

- **इलियट-**
  - "अतीत ही वर्तमान को प्रभावित नहीं करता बल्कि वर्तमान भी अतीत को प्रभावित करता है।"

---

87. Answer: c

Explanation:

Download Prepp APP GET IT ON Google Play

सही उत्तर है- **कथन I सही है, किन्तु कथन II गलत है।**

⭐ Key Points

सरस्वती पत्रिका-

- संपादक-चिंतामणि घोष
- प्रकाशन वर्ष-1900ई.
- प्रकाशन स्थान-काशी
- यह मासिक पत्रिका थी।
- इस पत्रिका का नामकरण चिंतामणि घोष ने किया।
- 14 अक्टूबर,1899ई. में 'नागरी प्रचारिणी सभा' ने इसके संपादक मण्डल का चयन किया-
  - बाबू श्यामसुंदर दास
  - जगन्नाथ दास 'रत्नाकर'
  - किशोरीलाल गोस्वामी
  - कार्तिक प्रसाद खत्री
  - राधाकृष्ण दास
- 1903ई. में सरस्वती पत्रिका के संपादक महावीरप्रसाद द्विवेदी चयनित हुए।

⭐ Important Points

महावीर प्रसाद द्विवेदी-

- इन्होंने सन् 1903ई. में 'सरस्वती पत्रिका का सम्पादन कार्य आरंभ किया।
- जनवरी 1903-दिसंबर 1920ई. तक सरस्वती पत्रिका का कार्यभार संभाला।
- इनके संपादन में सबसे बड़ा कार्य यह हुआ की गद्य और पद्य दोनों के लिए खड़ी बोली का प्रयोग आरंभ हो गया।

⭐ Additional Information

- भारतेन्दु काल या नवजागरण काल (1869 से 1900)
- भारतेंदु युग को आधुनिक हिंदी साहित्य का प्रवेश द्वार माना जाता है।
- भारतेंदु युग नवजागरण का युग है।
- इसमें नई सामाजिक चेतना उभर कर आई है।
- भारतेंदु युग में देशभक्ति और राज भक्ति तत्कालीन राजनीति का अभिन्न अंग थी।
- भारतेंदु काल में कविता के क्षेत्र में ब्रज भाषा का प्रयोग एवं गद्य के क्षेत्र में खड़ी बोली का प्रयोग किया गया।

---

88. Answer: a

Explanation:

सही उत्तर है- **कथन I और II दोनों सही हैं।**

- प्रेमचन्द, स्त्री-स्वतंत्रता के समर्थक थे, परन्तु वे विवाह को बनाए रखना चाहते थे क्योंकि 'गोदान' उपन्यास में महत्वपूर्ण स्त्री-चरित्र सक्षम, शक्तिशाली और परिस्थितियों को अनुकूल बनाने के लिए संघर्षरत हैं। इनमें से अनेक का वैवाहिक जीवन तनावपूर्ण है, परन्तु वे इसे बनाये रखना चाहती हैं।

⭐ Key Points

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

गोदान-

- रचनाकार-प्रेमचंद
- विधा-उपन्यास
- प्रकाशन वर्ष-1936 ई.
- **मुख्य पात्र-**
  - **होरी**-केंद्रीय पात्र, गरीब किसान।
  - **धनिया**-होरी की पत्नी एवं जुझारू पात्र।
  - **डॉ. मेहता**-दर्शनिशास्त्र के विद्वान और प्रोफेसर।
  - **मिस मालती**-आधुनिक स्त्री, डॉक्टर।
  - **मिस्टर खन्ना**-मिल मालिक और बैंकर।
  - **गोविंदी**-खन्ना की पत्नी व आदर्श भारतीय नारी।
- विषय-
  - भारतीय किसान जीवन की महागाथा का वर्णन है।

⭐ Important Points

प्रेमचंद-

- **जन्म**-1880-1936 ई.
- **उपन्यास-**
  - सेवासदन(1918 ई.)
  - रंगभूमि(1925 ई.)
  - कायाकल्प(1926 ई.)
  - निर्मला(1927 ई.)
  - गबन 1931 ई.) आदि।
- **कहानी संग्रह-**
  - सप्त सरोज(1917 ई.)
  - नवनिधि(1917 ई.)
  - प्रेम पूर्णिमा(1918 ई.)
  - प्रेम पच्चीसी(1923 ई.)
  - सप्त सुमन(1930 ई.)
  - कफ़न(1936 ई.) आदि।
- **नाटक-**
  - संग्राम(1923 ई.)
  - कर्बला(1924 ई.) आदि।

⭐ Additional Information

- **मुख्य संवाद-**
  - जब दूसरे के पाँव तले अपनी गर्दन दबी हुई है तो उन पावों को सहलाने में ही कुशल है। -होरी,धनिया से
  - नारी-हृदय धरती के समान है,जिससे मिठास भी मिल सकती है,कड़वापन भी उसके अंदर पढ़ने वाले बीच में जैसी शक्ति हो।- मेहता, गोविंदी से

---

89. **Answer: a**

Download Prepp APP GET IT ON Google Play

Explanation:

सही उत्तर है- **कथन I और II दोनों सही हैं।**

- 'सिंदूर की होली' नाटक की दु:खान्त परिणति हमें नाटक में आयी परिस्थितियों तथा जद्जन्य समस्याओं को सोचने-समझने के लिए बाध्य करती है और विचारों में डुबो देती है क्योंकि 'सिंदूर की होली' अद्भुत, गहन, गंभीर, सामान्य से परे नाटक है तथा उसके पात्र अत्यंत सहज हैं और स्वाभाविक मनोवृत्ति की प्रकृत भूमि पर विचरते नज़र आते हैं।

⭐ Key Points

सिंदूर की होली-

- **रचनाकार-** लक्ष्मी नारायण मिश्र
- **विधा-** नाटक
- **प्रकाशन वर्ष-** 1934ई.
- **मुख्य पात्र-**
  - रजनीकांत, चंद्रकला, मनोजशंकर, मनोरमा आदि।
- **विषय-**
  - समस्या प्रधान नाटक है।
  - 2 अंकों में विभक्त है।
  - नाटक के सभी पात्र अपनी ही समस्यों के घेरे में घिरे रहते है।
  - अंत में सबकी समस्यों का हल हो जाता है।

⭐ Important Points

लक्ष्मी नारायण मिश्र-

- **जन्म-**1903-1987ई.
- **समस्या प्रधान** नाटकों की शुरुआत इन्हीं ने की थी।
- **कृतियाँ -**
  - **सामाजिक नाटक -**
    1. अशोक (1926 ई.)
    2. न्यासी (1930 ई.)
    3. राक्षस का मंदिर (1931 ई.)
    4. मुक्ति का रहस्य (1932 ई.)
    5. राजयोग (1933 ई.)
    6. आधी रात (1936 ई.)
  - **ऐतिहासिक नाटक -**
    1. गरुड़ध्वज (1945 ई.)
    2. वत्सराज (1950 ई.)
    3. दशाश्वमेध (1950 ई.)
    4. वितस्ता की लहरें (1957 ई.)
    5. जगद्गुरु (1958 ई.)
    6. सरयू की धार (1974 ई.)
    7. गंगाद्वार (1974 ई.)
  - **पौराणिक नाटक -**
    1. नारद की वीणा (1946 ई.)

Download Prepp APP
GET IT ON Google Play

- **एकांकी संग्रह -**
    1. अशोक वन (1950 ई.)
    2. प्रलय के पंख पर (1951 ई.)
    3. कावेरी में कमल (1961 ई.)
    4. नारी का रंग (1966 ई.)

---

90. **Answer: a**

Explanation:

सही उत्तर है- **कथन I और II दोनों सही हैं।**

Key Points

'शिवशंभु के चिट्ठे' से संबंधित **सही** कथन हैं-

- इन चिट्ठों में से आठ चिट्ठे लार्ड कर्जन के नाम और दो लार्ड मिण्टो के नाम हैं।
- ख़तों में से एक ख़त गुप्त जी ने शाइस्ता खाँ के नाम से फूलर साहब को तथा एक सर सय्यद अहमद के नाम से अलीगढ़ कॉलेज के छात्रों को लिखा है।

Important Points शिवशंभु के चिट्ठे-

- रचनाकार-बालमुकुन्द गुप्त
- विधा-निबंध
- प्रकाशन वर्ष-1903-1905ई. के मध्य
- यह चिट्ठे भारत मित्र पत्र में प्रकाशित हुए थे।
- विषय-
    - यह लार्ड कर्जन को संबोधित करके लिखा गया है।
    - इसमें 'भारतीयों' की राजनीतिक विवशता को दिखाया गया है।
    - अंग्रेजी शासन व्यवस्था की आलोचना की गई है।
    - यह निबन्ध प्रतीकात्मक शैली में लिखा गया है।
    - इसकी शुरुआत स्वप्न के जरिए होती है।
    - इसमें उस समय के **कलकत्ता** में हो रहे शासन का वर्णन है।

Additional Information बालमुकुन्द गुप्त-

- जन्म- 1865-1907ई.
- हिंदी के प्रसिद्ध निबंधकार थे।
- प्रमुख रचनाएँ-
    - हरिदास
    - खिलौना
    - खेलतमाशा
    - स्फुट कविता

Prepp Your Personal Exams Guide

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- शिवशंभु का चिट्ठा आदि।

---

91. Answer: c

Explanation:

उपर्युक्त अनुच्छेद का केन्द्रीय विषय है- **कला और जीवन**

- इस गद्यांश में कला के माध्यम से कलाकार के जीवन के बारे में बताया गया है कि कैसे कला का प्रभाव कलाकार के जीवन पर पड़ता है और कैसे वह अन्य लोगों के जीवन में भी बदलाव लता है।

⭐ Key Points

स्वायत्तता-

- किसी दूसरे के हस्तक्षेप के बगैर व्यक्ति विशेष, संस्था, राज्य का देश के अधिकार क्षेत्र में विषयों और मामलों में स्वतंत्र निर्णय लेना।

---

92. Answer: c

Explanation:

उपर्युक्त अनुच्छेद के अनुसार कलाकार के लिए **सामाजिक क्रान्ति करना** जरूरी नहीं है।

- गद्यांश में कलाकार को सामाजिक क्रांति करने के लिए नहीं कहा गया है।

⭐ Key Points

गद्यांश के अनुसार-

- इसका सीधा-सादा मतलब हुआ अपने चारों तरफ़ की ज़िंदगी में दिलचस्पी लेना, उसको ठीक-ठीक यानी वैज्ञानिक आधार पर समझना और अनुभूति और अपने अनुभव को इसी समझ और जानकारी से सुलझाकर स्पष्ट करके, पुष्ट करके अपनी कला-भावना को जगाना।
- यह आधार इस युग के हर सच्चे और ईमानदार कलाकार के लिए बेहद ज़रूरी है।
- इस तरह अपनी कला-चेतना को जगाना और उसकी मदद से जीवन की सच्चाई और सौंदर्य को अपनी कला में सजीव से सजीव रूप देते जाना : इसी को मैं 'साधना' समझता हूँ, और इसी में कलाकार का संघर्ष छिपा हुआ देखता हूँ।

---

93. Answer: d

Explanation:

उपर्युक्त अनुच्छेद के आधार पर **परिस्थितियाँ-व्यक्ति-दल** ईमानदार कलाकार के शत्रु हैं।

⭐ Key Points

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

गद्यांश के अनुसार-

- "कला के इस सौंदर्य और उससे मिलने वाले आनंद के शत्रु वे जहाँ और जिस भेष में भी होंगे, जो भी होंगे-परिस्थितियाँ, व्यक्ति या दल-हर ईमानदार कलाकार के शत्रु होंगे।"

---

94. **Answer: c**

Explanation:

कला चेतना जाग्रत कर जीवन की सच्चाई और सौंदर्य को सजीव रूप देना **साधना** कहलाएगा।

साधना-

- **अर्थ-** अभ्यास करना।
- समाधि, मोक्ष, कैवल्य, निर्वाण को प्राप्त करने हेतु जो प्रयास या प्रयत्न साधक द्वारा किये जाते हैं उन्हें ही साधना कहा गया है।

⭐ Key Points

गद्यांश के अनुसार-

- "इस तरह अपनी कला-चेतना को जगाना और उसकी मदद से जीवन की सच्चाई और सौंदर्य को अपनी कला में सजीव से सजीव रूप देते जाना : इसी को मैं 'साधना' समझता हूँ, और इसी में कलाकार का संघर्ष छिपा हुआ देखता हूँ।"

⭐ Additional Information

लीला-

- **अर्थ-** क्रीड़ा, खेल।

आनंद-

- **अर्थ-** खुशी, उल्लास, मन का सुख।

अनुभूति-

- **अर्थ-** अनुभव, संवेदना।

---

95. **Answer: c**

Explanation:

उपर्युक्त अनुच्छेद के आधार पर आज का युग **क्रांति का** है।

⭐ Key Points

गद्यांश के अनुसार-

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- "कला जीवन का सच्चा दर्पण है। और आज के सभी देशों के जीवन में कायापलट तेज़ी के साथ आ रही है; क्योंकि आज किसको नहीं दिखाई दे रहा है कि यह क्रान्ति का युग है।"

---

96. **Answer: a**

Explanation:

उपर्युक्त अनुच्छेद के अनुसार, भक्ति आंदोलन की सीमा थी- **वह मनुष्य की पीड़ाओं का नया समाधान न दे सका।**

⭐ Key Points

गद्यांश के अनुसार-

- "किन्तु भक्ति आंदोलन की अपनी सीमाएं थीं। भक्ति आंदोलन ने आम जनता में जागृति तो पैदा की, किन्तु वह सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था में मौजूद असंगतियों के वास्तविक कारणों को समझने और मानव के दुखों और पीड़ाओं के नूतन समाधान प्रस्तुत करने में सफल नहीं हुआ।"

⭐ Important Points

भक्ति आंदोलन-

- मध्यकालीन भारत के सांस्कृतिक इतिहास में भक्ति आन्दोलन एक महत्वपूर्ण पड़ाव था।
- इस काल में **सामाजिक-धार्मिक सुधारकों** द्वारा समाज में विभिन्न तरह से भगवान की भक्ति का प्रचार-प्रसार किया गया।
- भक्ति आंदोलन सबसे पहले रामानुज द्वारा आयोजित किया गया था।
- सातवीं शताब्दी से दक्षिण भारत में धर्म के पुनरुत्थान के रूप में भक्ति आंदोलन की शुरुआत हुई।
- चैतन्य महाप्रभु भक्ति आंदोलन के सबसे बड़े संत थे।
- भक्ति आंदोलन के द्वारा ही सिख धर्म का उद्भव हुआ है।

⭐ Additional Information

- **रामचन्द्र शुक्ल** जी ने भक्ति को पराजित, असफल एवं निराश मनोवृत्ति की देन माना था। अनेक अन्य विद्वानों ने इस मत का समर्थन किया जैसे, बाबू गुलाब राय आदि।
- **आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी** ने सर्वप्रथम इस मत का खंडन किया तथा प्राचीनकाल से इस भक्ति प्रवाह का सम्बन्ध स्थापित करते हुए अपने मत को स्पष्टत: प्रतिपादित किया।

---

97. **Answer: c**

Explanation:

उपर्युक्त अनुच्छेद के अनुसार भक्ति आंदोलन ने भाषाओं के प्रति नीति रखी- **राष्ट्रीय भाषाओं को प्रोत्साहन दिया**

⭐ Key Points

गद्यांश के अनुसार-

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- "इस आंदोलन के नेता अपनी कवितायें और अपने गीत फारसी और संस्कृत जैसी दुरुह और क्लिष्ट भाषाओं में नहीं, वरन जनता की भाषाओं में रचते थे। इससे राष्ट्रीय इकाइयों तथा राष्ट्रीय भाषाओं के विकास को प्रोत्साहन मिला, जो भारतीय राष्ट्र के विकास की एक ऐतिहासिक प्रक्रिया थी।"

⭐ Important Points

भक्ति आंदोलन-

- मध्यकालीन भारत के सांस्कृतिक इतिहास में भक्ति आन्दोलन एक महत्वपूर्ण पड़ाव था।
- इस काल में **सामाजिक-धार्मिक सुधारकों** द्वारा समाज में विभिन्न तरह से भगवान की भक्ति का प्रचार-प्रसार किया गया।
- भक्ति आंदोलन सबसे पहले रामानुज द्वारा आयोजित किया गया था।
- सातवीं शताब्दी से दक्षिण भारत में धर्म के पुनरुत्थान के रूप में भक्ति आंदोलन की शुरुआत हुई।
- चैतन्य महाप्रभु भक्ति आंदोलन के सबसे बड़े संत थे।
- भक्ति आंदोलन के द्वारा ही सिख धर्म का उद्भव हुआ है।

⭐ Additional Information

- **रामचन्द्र शुक्ल** जी ने भक्ति को पराजित, असफल एवं निराश मनोवृत्ति की देन माना था। अनेक अन्य विद्वानों ने इस मत का समर्थन किया जैसे, बाबू गुलाब राय आदि।
- **आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी** ने सर्वप्रथम इस मत का खंडन किया तथा प्राचीनकाल से इस भक्ति प्रवाह का सम्बन्ध स्थापित करते हुए अपने मत को स्पष्टत: प्रतिपादित किया।

---

98. **Answer: b**

Explanation:

उपर्युक्त अनुच्छेद के अनुसार, भक्ति आंदोलन की जाति-व्यवस्था को लेकर नीति थी- **भक्ति आंदोलन जाति-प्रथा का विरोध करता था।**

⭐ Key Points

गद्यांश के अनुसार-

- "भक्ति आंदोलन मनुष्य की सत्ता को सर्वश्रेष्ठ मानता था और सभी वर्गगत एवं जातिगत भेदभावों तथा धर्म के नाम पर किये जानेवाले सामाजिक उत्पीड़न का विरोध करता था।"

⭐ Important Points

भक्ति आंदोलन-

- मध्यकालीन भारत के सांस्कृतिक इतिहास में भक्ति आन्दोलन एक महत्वपूर्ण पड़ाव था।
- इस काल में **सामाजिक-धार्मिक सुधारकों** द्वारा समाज में विभिन्न तरह से भगवान की भक्ति का प्रचार-प्रसार किया गया।
- भक्ति आंदोलन सबसे पहले रामानुज द्वारा आयोजित किया गया था।
- सातवीं शताब्दी से दक्षिण भारत में धर्म के पुनरुत्थान के रूप में भक्ति आंदोलन की शुरुआत हुई।
- चैतन्य महाप्रभु भक्ति आंदोलन के सबसे बड़े संत थे।
- भक्ति आंदोलन के द्वारा ही सिख धर्म का उद्भव हुआ है।

⭐ Additional Information

Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- **रामचन्द्र शुक्ल** जी ने भक्ति को पराजित, असफल एवं निराश मनोवृत्ति की देन माना था। अनेक अन्य विद्वानों ने इस मत का समर्थन किया जैसे, बाबू गुलाब राय आदि।
- **आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी** ने सर्वप्रथम इस मत का खंडन किया तथा प्राचीनकाल से इस भक्ति प्रवाह का सम्बन्ध स्थापित करते हुए अपने मत को स्पष्टत: प्रतिपादित किया।

---

99. **Answer: a**

Explanation:

उपर्युक्त अनुच्छेद के अनुसार, भक्ति आंदोलन का केन्द्रीय विश्वास है- **मनुष्य की सत्ता सर्वश्रेष्ठ है।**

⭐ Key Points

गद्यांश के अनुसार-

- "भक्ति आंदोलन मनुष्य की सत्ता को सर्वश्रेष्ठ मानता था और सभी वर्गगत एवं जातिगत भेदभावों तथा धर्म के नाम पर किये जानेवाले सामाजिक उत्पीड़न का विरोध करता था।"

⭐ Important Points

भक्ति आंदोलन-

- मध्यकालीन भारत के सांस्कृतिक इतिहास में भक्ति आन्दोलन एक महत्वपूर्ण पड़ाव था।
- इस काल में **सामाजिक-धार्मिक सुधारकों** द्वारा समाज में विभिन्न तरह से भगवान की भक्ति का प्रचार-प्रसार किया गया।
- भक्ति आंदोलन सबसे पहले रामानुज द्वारा आयोजित किया गया था।
- सातवीं शताब्दी से दक्षिण भारत में धर्म के पुनरुत्थान के रूप में भक्ति आंदोलन की शुरुआत हुई।
- चैतन्य महाप्रभु भक्ति आंदोलन के सबसे बड़े संत थे।
- भक्ति आंदोलन के द्वारा ही सिख धर्म का उद्भव हुआ है।

⭐ Additional Information

- **रामचन्द्र शुक्ल** जी ने भक्ति को पराजित, असफल एवं निराश मनोवृत्ति की देन माना था। अनेक अन्य विद्वानों ने इस मत का समर्थन किया जैसे, बाबू गुलाब राय आदि।
- **आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी** ने सर्वप्रथम इस मत का खंडन किया तथा प्राचीनकाल से इस भक्ति प्रवाह का सम्बन्ध स्थापित करते हुए अपने मत को स्पष्टत: प्रतिपादित किया।

---

100. **Answer: d**

Explanation:

उपर्युक्त अनुच्छेद के अनुसार, भक्ति आंदोलन जन आंदोलन बन सका, क्योंकि **जनता का बड़ा भाग, विशेष रूप से छोटे व्यापारी, शिल्पी और किसान किसी न किसी रूप में भक्ति से सम्बद्ध हुए।**

⭐ Key Points

गद्यांश के अनुसार-

Prepp Download Prepp APP GET IT ON Google Play

- "भक्ति आंदोलन पहले शहरों में बसने वाले लोगों, खासकर छोटे-छोटे व्यापारियों, जुलाहों, टोकरी बनाने वालों और भिश्तियों जैसे लोगों के बीच से शुरू हुआ था। किन्तु सत्रहवीं शताब्दी तक वह किसानो में भी व्याप्त हो गया। इसने एक जन आंदोलन का रूप धारण कर लिया और मुगल शासन तथा सामन्ती सरदारों के विरुद्ध कभी-कभी सशस्त विद्रोहों के रूप में भी प्रकट हुआ।"

⭐ Important Points

भक्ति आंदोलन-

- मध्यकालीन भारत के सांस्कृतिक इतिहास में भक्ति आन्दोलन एक महत्वपूर्ण पड़ाव था।
- इस काल में **सामाजिक-धार्मिक सुधारकों** द्वारा समाज में विभिन्न तरह से भगवान की भक्ति का प्रचार-प्रसार किया गया।
- भक्ति आंदोलन सबसे पहले रामानुज द्वारा आयोजित किया गया था।
- सातवीं शताब्दी से दक्षिण भारत में धर्म के पुनरुत्थान के रूप में भक्ति आंदोलन की शुरुआत हुई।
- चैतन्य महाप्रभु भक्ति आंदोलन के सबसे बड़े संत थे।
- भक्ति आंदोलन के द्वारा ही सिख धर्म का उद्भव हुआ है।

⭐ Additional Information

- **रामचन्द्र शुक्ल** जी ने भक्ति को पराजित, असफल एवं निराश मनोवृत्ति की देन माना था। अनेक अन्य विद्वानों ने इस मत का समर्थन किया जैसे, बाबू गुलाब राय आदि।
- **आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी** ने सर्वप्रथम इस मत का खंडन किया तथा प्राचीनकाल से इस भक्ति प्रवाह का सम्बन्ध स्थापित करते हुए अपने मत को स्पष्टत: प्रतिपादित किया।

Your Personal Exams Guide

Download Prepp APP GET IT ON Google Play